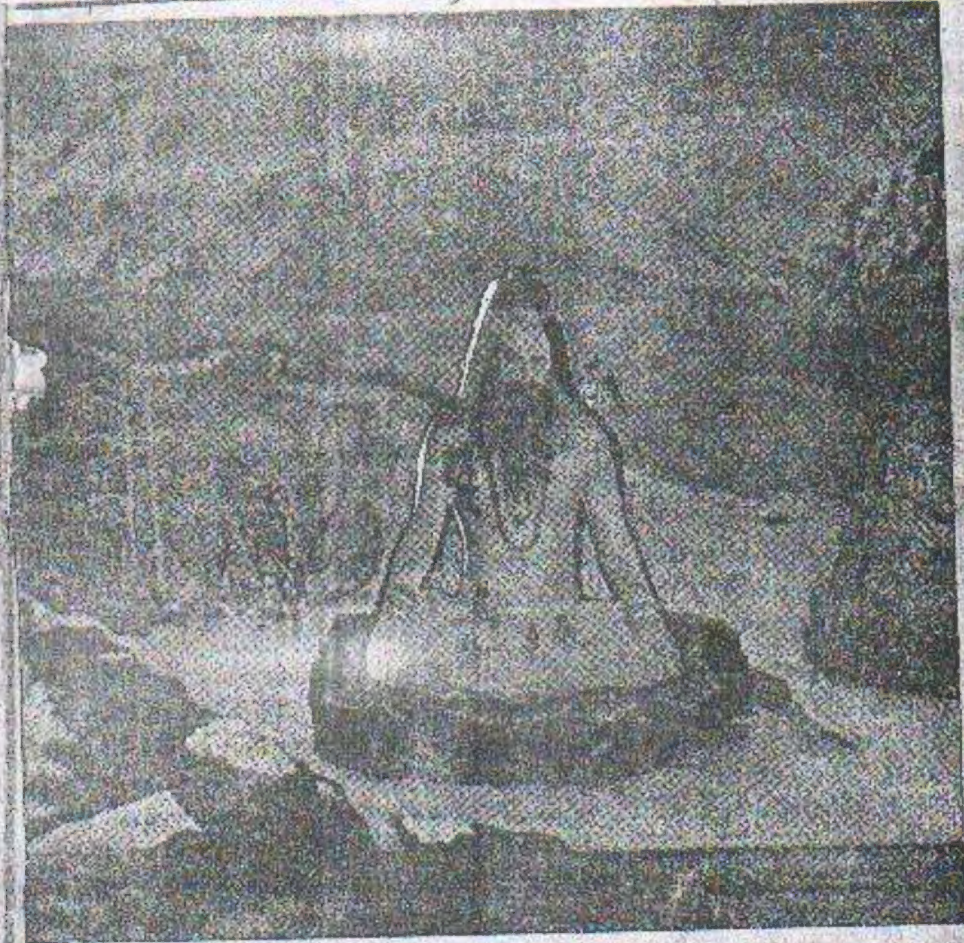


જાન્યુઆરી, ફરવરી ૧૯૮૮
જાન્યુઆરી, ફરવરી ૨૮

મંત્ર-તંત્ર-યંત્ર વિજ્ઞાન



પૂજ્ય ગુરુદેવ



सम्पादकीय.....

अन्य तन्त्र यन्त्र विज्ञान पत्रिका का योपनीय 'तन्त्र विशेषांक' आपके हाथ में है, विश्व में सैकड़ों ऐसी पटनाएँ घटित होती रहती हैं, जो अपने आप में रहस्यपूर्ण हैं और जिनका उत्तर अब तक का विज्ञान खोज नहीं पाया है, कुछ ऐसी ही दुर्लभ जानकारी इस पत्रिका के माध्यम से आपके सामने प्रस्तुत है।

जनवरी १९८१ से इस पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया था, प्रारम्भ करने के मूल में तो किसी प्रकार का कोई स्वार्थ था और न किसी प्रकार की बहुत बुद्धि, देखा रहा था कि धीरे धीरे समाज में दुष्प्रवृत्तियाँ हावी होती जा रही हैं, गलत प्रकार के विचार, सुट-खसोट, हत्या, अपराध आदि से सम्बन्धित घटनाएँ मानसिक तुराक के रूप में नयी पीढ़ी को ग्रस्त हो रही हैं और धीरे-धीरे वे अपने मूल उत्स और संस्कृति को भूलते जा रहे हैं, इसी पीड़ा से छटपटाकर इस पत्रिका का प्रकाशन किया था।

और मैं आज प्रसन्नता, उमंग और हर्षातिरेक से ओत-प्रोत हूँ कि आप लोगों का सहयोग मुझे मिला, आपने इस पत्रिका को ललक कर उठाया, सहयोग दिया, स्वयं सदस्य बने, दूसरे साधियों और परिचितों को सदस्य बनाया और इस प्रकार पत्रिका को जो रुढ़ साधारण आप सब ने दिया है, वह अविस्मरणीय है, हमने आपके विचारों की रक्षा की है, आपने देखा होगा कि हमने किसी प्रकार का विज्ञापन स्वीकार नहीं किया, यद्यपि विज्ञापन के लिए लोग स्वयं आगे बढ़े, परन्तु अभी तक हम अपनी नीति पर दृढ़ हैं कि पत्रिका के पृष्ठ विज्ञापन से न भरे जाय, अपितु उनमें ठोस मौलिक और मानववर्द्धक गोपनीय सामग्री ही दी जाय, जिससे कि वे लाभ उठा सकें, और आगे वाली पीढ़ियाँ इसके प्रकाश में जीवन प्रशस्त कर सकें।

पिछले वर्ष महत्वपूर्ण साधना गिबिर लगाये थे और इसके माध्यम से सदस्यों ने पहली बार साधना का क्रम, स्तर और जानकारी अनुभव की, इस गिबिरों में जिन साधकों ने भाग लिया था वे पुरे विश्व में साधना के प्रामाणिक साधारण है, उनमें इतनी अमरता है कि वे अन्य लोगों को साधना के मूल स्वरूप और साधना के द्वारे में पूरी जानकारी दे सकें उनका पय प्रशस्त कर सकें, उन सभी साधकों को यह बोझ उठाना चाहिए और अपने जीवन का कुछ भाग ऐसे कार्यों में अवस्थ लगाना चाहिए, जिससे कि अन्य व्यक्ति भी साधना, साधना के रहस्य, साधना की विधि और साधना का क्रम समझ सकें, तदनुकूल उत्तम सफलता पा सकें।

मेरी इच्छा यह है कि प्रति माह यह पत्रिका लगभग तो पृष्ठों की प्रकाशित हो और फिर भी इसका मूल्य न बढ़ाया जाय, इतने ही मूल्यों में लगभग तो पृष्ठों की पत्रिका देने के लिए हम प्रयास से प्रयत्नशील हैं, पर यह तभी सम्भव हो सकता है, जब इस पत्रिका की सदस्यता काफी बढ़े, ऐसा होने पर ही 'याफ सेट प्रिंटिंग' की तरबाई जा सकती है, पर यह तो आप लोगों पर ही निर्भर है, यदि आप इस अंक को प्राप्त कर यह संकल्प लें, कि एक महीने के अन्दर-अन्दर तीन नये त्रिमासिक सदस्य बनाने ही हैं, और यदि सोच लें तो यह कोई मुश्किल कार्य नहीं है, पर ऐसा करते ही हमारा जो लक्ष्य है, हम उसे निश्चित रूप से प्राप्त कर सकेंगे और प्रत्येक महीने ज्यादा से ज्यादा पृष्ठों में महत्वपूर्ण सामग्री आपको प्रदान कर सकेंगे, यदि आप ऐसा करते हैं तो पत्रिका स्वास्थ और स्थिरता प्राप्त कर सकती है, मैं आपको यह विषय दिलाता हूँ कि मैं अंतिम प्रवास जब भी इस पत्रिका का प्रकाशन बनाये रखूँगा।

मैं आपसे सहयोग चाहता हूँ, सहयोग के लिए आपके सामने उपस्थित हूँ और मुझे विश्वास है कि आप मेरे प्रत्येक सदस्य उपरोक्त संकल्प ले कर मुझे सहयोग देंगे।

आपके दो शब्द ही मेरे लिए उत्साहनक्षक होते हैं, आप यह लिखें कि आपको यह अंक कैसा लगा।

चैत्र नवरात्रि

शतचण्डी युक्त

महा भगवती साधना शिविर

महालक्ष्मी काली और महासरस्वती सम्पुट युक्त

१८-३-८८ से २५-३-८८ तक

इस वर्ष विक्रमी सम्बत् के प्रारम्भ में जो चैत्र नवरात्रि प्रारम्भ हो रही है, वह शास्त्रों के अनुसार सकाम्य कामदा नवरात्रि है इस नवरात्रि में जिस कामना के साथ साधना सम्पन्न की जाती है, वह कामना भगवती पूर्ण अवश्य ही पूर्ण करती है।

ज्योतिष की दृष्टि से भी इस वर्ष नवरात्रि का अपने आप में धान्यवर्धनक महत्व है, कहा गया है—

चैत्रे प्रतिपदा शुक्ले मीनेश्चन्द्र यदा यथा ।

सर्वे सिद्धि भवेत्तस्य नवरात्रौ स कुलम्भः ॥

अर्थात्—यदि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को शुक्रवार हो और मीन का चन्द्रमा हो, तो इस प्रकार का योग पूर्णतया कुलम्भ कहलाता है और जो साधक ऐसी नवरात्रि में साधना सम्पन्न करते हैं, उसे निश्चय ही समस्त प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

और यदि स्वयं देख लें, कि इस बार चैत्र प्रतिपदा को शुक्रवार है, और मीन राशि पर ही चन्द्रमा पवित्रोत्थ है, ऐसी स्थिति में यह नवरात्रि का पर्व अपने आप में

कुलम्भ अद्वितीय और महत्वपूर्ण है।

कुलम्भ योग

वास्तव में ही इस नवरात्रि में यदि एक दिन भी विधि विधान के साथ साधना की जाय तो निश्चय ही उसे पूर्ण सिद्धि तो प्राप्त होती ही है, उसकी सभी प्रकार की मनोकामनाएं भरे सफल होती हैं।

चैत्रे शुक्ला शुभु वारे प्रतिपदा या यदि भवेत् ।

मीने चन्द्रा एवौ याति स योगं कुलम्भं नरः ॥

विद्वानों के अनुसार—यदि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को शुक्रवार हो और मीन राशि पर ही सूर्य और चन्द्र दोनों हो तो ऐसा योग अत्यन्त कुलम्भ कहा जाता है और सौभाग्यशाली व्यक्ति और साधक ही ऐसे दिनों में गुरु घरणों में बैठ कर साधना सम्पन्न करने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं।

और इस वर्ष ये सभी योग समाहित हैं, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का शुक्रवार है और एक ही राशि पर सूर्य चन्द्रमा का संयोग होने से अमृत तुल्य सकाम्य सिद्धि-

दायक योग बन गया है, ऐसे प्रहिलीय और महत्वपूर्ण अवसर पर तो सीमान्तवाली साधक श्री शिविर में भाग ले कर पूर्णता प्राप्त करने में सफल हो पाते हैं।

सूर्य ग्रहण

साधकों के लिए ग्रहण का दार्शनिक महत्व है और फिर यदि सूर्य ग्रहण हो और ऐसे "धीवर्धन सूर्य ग्रहण" में महालक्ष्मी साधना सम्पन्न की जाय तो ऐसे साधक की जन्म जन्म की दरिद्रता मिटाकर वरदायक लक्ष्मी प्रसन्न होती है और उसके समस्त दुखों को दूर करती है।

ॐ सर्वज्ञ सूर्यग्रहणे लक्ष्मी सिद्धि प्रकीर्तते ।

सर्व दुःख हरे देवी साधको देव दुर्लभः ॥

इस वर्ष नवरात्रि के प्रारम्भ में ही अमृतोपम सूर्यग्रहण है, जो कि साधकों के लिए अत्यन्त ही लाभदायक है, साधकों की वादिए कि सूर्यग्रहण के अवसर पर लक्ष्मी की साधना सम्पन्न कर अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त करें।

नवरात्रि प्रारम्भ

प्रातःकाल साधक स्नान आदि में निवृत्त हो कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जायेंगे और फिर विशेष गर्भों से युक्त शास्त्रीय विधान के अनुसार पंचमट स्थापित करेंगे। (१) भगवती दुर्गा घट स्थापन (२) महालक्ष्मी घट स्थापन (३) महाकाली घट स्थापन (४) सरस्वती घट स्थापन (५) सर्वसिद्धिदायक "श्री" घट स्थापन।

शास्त्रीय प्रमाण के अनुसार इन पाँचों घटों का स्थापन साधकों के द्वारा होगा और सभी साधक अपनी मनोकामना उच्चरित कर नवरात्रि का प्रारम्भ करेंगे, जिससे कि भगवती दुर्गा प्रत्यक्ष सिद्धिदायक हो, और वे साधना में पूर्णता, सफलता एवं श्रेष्ठता

प्राप्त करें।

प्रथम दिन दुर्लभ सूर्य ग्रहण का अवसर उपस्थित हुआ है, अतः साधकों के लिए यह अवसर गंवाना उचित नहीं। विश्वामित्र द्वारा सिद्ध की हुई विशेष गोपनीय "सहस्र लक्ष्मी आवाहन सिद्धि साधना प्रयोग" सम्पन्न कराया जायेगा, नवरात्रि का अवसर होगा, कई सौ वर्षों बाद ऐसे महत्वपूर्ण अवसर पर सूर्यग्रहण का विधान होगा, और फिर विश्वामित्र द्वारा गोपनीय साधना प्रयोग के द्वारा लक्ष्मी प्राप्ति का विशेष प्रयोग सम्पन्न किया जायेगा, ऐसे प्रयोग की प्रतीक्षा तो देवता तक करते हैं। उच्च कोटि के योगी, सम्प्राप्ती और गृहस्थ लोगों ने अभी तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी हैं, दक्षिण के प्रसिद्ध श्री शैल पर्वत पर तो पिछले दो महीनों में तैयारियाँ प्रारम्भ हो गई हैं, जिससे कि सूर्य ग्रहण और नवरात्रि संयोग अवसर पर भगवती महालक्ष्मी की साधना सम्पन्न हो जाय, और मनोवांछित सफलता एवं पूर्णता प्राप्त की जा वास्तव में ही यह दुर्लभ अवसर है, और ऐसे महत्वपूर्ण अवसर पर तो वे पत्रिका के सभी पाठकों श्री साधकों का इन पंक्तियों के माध्यम से आवाहन कर रहा हूँ कि वे हर हालत में ऐसे दुर्लभ अवसर और नवरात्रि पर्व पर उपस्थित हों, कृपि तुल्य जीवन जीते हुए, अपने पूरे जीवन के और इस जीवन के सभी पापों का क्षय करें तथा नवरात्रि शिविर में भाग लेते हुए पूर्णता के साथ सिद्धि प्राप्त करें।

नवरात्रि का प्रत्येक दिन : एक महत्वपूर्ण साधना पर्व

हाँ, इस बार नवरात्रि के प्रत्येक दिन की हमने ऐसी साधना पर्व के रूप में तैयार किया है, जिससे कि साधक इन दिनों का पूरा पूरा लाभ उठा सकें, जहाँ १८ मा की सूर्य ग्रहण और नवरात्रि के प्रारम्भ के अवसर पर भगवती महालक्ष्मी की साधना सम्पन्न कर पूर्ण लक्ष्मी

सिद्धि प्राप्त करेंगे, वहीं ११ मार्च को दशम पन्द्र वंशों के होने के कारण कामका सिद्धि पुनः भगवती दुर्गा के सतचण्डी विधान की सम्पन्न करने को विधान, प्रमाण नृत्य, दुष्ट और वरिष्ठता की मिश्रित में समर्थ है, एक तरफ उच्च कोटि के सति सतचण्डी पाठ करते हुए दिखाई देंगे, वहीं दूसरी ओर साधक पूर्ण कृति बन कर मंत्र में प्राप्तिवा देते हुए, भगवती दुर्गा की प्रत्यक्ष सिद्धि करने का सफल प्रयास करेंगे।

१० मार्च को विशेष दर्शन होने के कारण इस महा-विद्या प्रयोग सम्पन्न करायेगे, आप स्वयं अनुमान लगा लें कि पुण्य गुरुदेव द्वारा हम महा विद्या सिद्धियों का पूजन धर्म और साधना सम्पन्न होगी जिसमें— (१) काली (२) तारा (३) पीवडी त्रिपुर सुन्दरी (४) मुक्तेस्वरी (५) छिन्नमस्ता (६) त्रिपुर भैरवी (७) बुधवारवी (८) वज्रवामुनी (९) मातंगी तथा (१०) कमला महाविद्या साधना की सम्पन्न किया जायेगा।

११ मार्च को दुर्लभ होने के कारण "ब्रह्म सिद्धि प्रयोग" सम्पन्न कराया जायेगा, जिससे कि शरीर के समस्त तन्त्र प्रकृतियों की सर्वोपरि मूलधार से लगाकर ब्रह्मादि शरीर स्थित सभी तन्त्रों के शरीर से साधक स्वयं देहा शुद्ध बन सकेंगे।

१२ मार्च को "विदेवमी" होने के कारण सूर्य साधना सम्पन्न कराई जायेगी, एक ऐसी साधना जिसके द्वारा पूर्ण प्रकृति, साधक के जियनरा में ही जाती है और वह प्रकृति से नवीकृत कार्य सम्पन्न करने में समर्थ हो पाता है।

१३ मार्च को शुभ योग एवं बुधवार होने को वजह से हरिद्विनाशक गणपति प्रयोग के साथ साथ हरिद्वि गणपति सिद्धि सम्पन्न कराई जायेगी, इस प्रकार भगवती लक्ष्मी और गणपति की संयुक्त साधना जीवन का सोभाग्य कही जा सकती है।

१४ मार्च को "नवसिद्धि प्रयोग" दिवस मनाया जायेगा जिसमें देव दुर्लभ साधनाएँ गरिमा, महिमा

आदि प्रयोग सम्पन्न होंगे जो कि पंचिका पाठकों और समस्त साधकों को पुण्य गुरुदेव पहली बार सम्पन्न करायेगे, ऐसा आठवीं प्रवस और ऐसी दुर्लभ साधना की पहली बार हो इस नवरात्रि शिविर में सम्पन्न हो रही है।

१५ मार्च को दुर्गा प्रष्टमी पर्व मनाने के साथ साथ पुण्य गुरुदेव प्रत्यक्ष सिद्धि प्राप्त करने हेतु साधकों के शरीर में उस दिव्य सेज का प्रवाह प्रदान करेंगे जिसके माध्यम से प्रत्येक साधना पूर्ण हो सके, सिद्धिपद हो सके, और साधक भगवती दुर्गा के प्रत्यक्ष दर्शन करने में समर्थ हो सके।

नवरात्रि के ये ती दिन अपने आप में दुर्लभ है, प्रत्येक दिन अपने आप में एक पर्व है, साधना की ऊचाइयाँ प्राप्त करने का प्रयोग है, एक-एक दिन पूर्ण रूप से सिद्धि-दायक एवं देव दुर्लभ बनाने का प्रयास हमने किया है।

अभी से स्थान सुरक्षित करा लें

स्थान की कमी की वजह से यह संभव नहीं है कि भारत में केवल सभी साधकों को इस शिविर में प्रवेश दिया जा सके और फिर इस शिविर में तो विदेशों में रहने वाले भारतीय भी आने के हेतु है तो उच्च कोटि के स्वासी और योगी भी, यहाँ स्थान-सुनता स्वाभाविक है।

ऐसी स्थिति में आप अभी से पीछे बिया हुआ "साधना प्रवेश प्रपत्र" भर कर हमें भेज दें जिससे कि आपका स्थान रिजर्व हो सके।

कमाना और भाग-बीह के लिए तो पूरी जिन्दगी पड़ी है, ऐसा दुर्लभ घण्टर ही सोभाग्य से हो प्राप्त होता है, और फिर शास्त्रों में कहा गया है कि हजार काम छोड़ करके भी चैत्र नवरात्रि में तो भाग लेना ही चाहिए क्योंकि यह दुर्लभ नवरात्रि कही जाती है।

प्राप्त ही प्रपत्र भरिये और हमें भेज दीजिये, हम आपको बतायेगे कि यह नवरात्रि का पर्व आपके लिए कितना अधिक महत्वपूर्ण, दुर्लभ और सोभाग्यशाली हो सकता है।

—: नियम :-

- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यहाँ से काटिये ॥

१८-३-८८ से २५-३-८८ तक

मैंने आपके सभी नियम पढ़ लिए हैं मैं इन नियमों का पालन करूंगा, तथा इस प्रपत्र के साथ ही रुपये का सलियॉन्डर/बैंक ड्राफ्ट भेज रहा हूँ, कृपया मुझे शिबिर में भाग लेने व मेरा स्थान सुरक्षित रखने की अनुमति प्रदान करें।

मेरा पुरा पता

मेरा पुरा पता

1999, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 2680, 2681, 2682, 26

वर्ष—८

प्रक—१-२

जनवरी-फरवरी १९८८

ग्रानो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उत्ति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

ॐ वरे वर्षंतु हे ववाम्यहे सः श्रियं
स देवान् पुत्रो च कीर्तिश्च वे सहः

सम्पादक
तन्वकिशोर

स० सम्पादक
योगेन्द्र निर्मोही

सम्पर्क—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मायं,
हार्डकोर्ट कोलोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : २२२०६

यह वर्ष हमारे लिये मंगलमय हो, वरदायक हो, लक्ष्मी युक्त हो हमारे
पुत्र योग्य हो, हमारा परिवार कीर्तिमान् हो, स्वस्थ हो, सफल हो।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं पर अधिकार पत्रिका का है, पत्रिका का दो वर्ष का सदस्यता शुल्क (१३०) रु०, एक वर्ष का (७०) रु० तथा एक अंक का मूल्य (६) रु० है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक, पत्रिका में प्रकाशित सामग्री को गलत समझें, किसी स्थान, नाम या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय तो इसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक शुम्भक साधु सन्त होते हैं अतः उनके पते या उनके बारे में कुछ अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा, और न इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता हाति-लारभ आदि की जिम्मेदारी साधक की स्वयं की होगी, तथा साधक कोई ऐसी उपासना अप वा मन्त्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित सामग्री के संबंध में किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना स्वीकार नहीं होगी, पत्रिका में प्रकाशित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग अपनी जिम्मेदारी पर ही करें, योगी तत्वात्मी लेखकों के मान विचार होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पत्रिका में प्रकाशित लेख पुस्तकाकार में श्री नारायणदत्त श्रीमाली या सम्पादक के नाम से प्रकाशित किये जा सकते हैं, इन लेखों या प्रकाशित सामग्री पर सर्वाधिकार पत्रिका का या डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली का होगा।

मुद्रक-अरविन्द प्रकाशन डॉ० श्रीमाली मायं, हार्डकोर्ट कोलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

विषय-सूची

१-	सम्पादकीय	१
२-	प्रार्थना	२
३-	विषय सूची	३
४-	कृत्या सिद्धि	४
५-	हिमाचल-कुछ नवीन तथ्य	५
६-	कुल्ल और तांत्रिक	६
७-	सिद्धाधम	७
८-	ये ग्रन्थे गलियारे है	११
९-	स्वामी विशुद्धानन्द-जिन्होंने नामों में कमल दल खिलाया	१२
१०-	सिद्धसूत्र-स्वर्ण प्रक्रिया का दुर्लभ ज्ञान	१५
११-	कल्पवृक्ष भारत में नहीं, राजस्थान में है	१६
१२-	मैंने अपने विगत जीवन से साक्षात्कार किया	१७
१३-	सामोश ! यहाँ त्रिजटा अचोरी साधना कर रहे हैं	१८
१४-	इन्होंने सोना बनाया और कहाँ	२१
१५-	सोना यों भी बनाया जाता है	२२
१६-	स्वर्ण प्रयोग पुस्तक-जिसमें स्वर्ण विधि अंकित है	२३
१७-	स्वर्ण निर्माण	२४
१८-	गुरु साधना सिद्धि ही क्या सिद्धि है	२५
१९-	बंगाल की जादूगरनी-जो मनुष्य को दिन में तोता और रात को मर्द बना देती है	२८
२०-	शोध गमन सिद्धि	२९
२१-	देह परिवर्तन सिद्धि	३०
२२-	वह सम्मोहन प्रयोग : जिसे चिरकुट की मुन्दरी ने मुरु पर किया	३१
२३-	अत्यन्त तीव्र वशीकरण प्रयोग	३३
२४-	सिद्ध योगीश्वर	३५
२५-	घोषड़... घोषड़... घोषड़ हाँ मैं घोषड़ हूँ	३७
२६-	स्मशान शान्त प्रयोग	३८

२७-	इमशान जागरण प्रयोग	३६
२८-	भूतों का वश में करने का प्रयोग	४१
२९-	पुरुष को स्त्री में परिवर्तित करने का प्रयोग	४३
३०-	घोषड़ सिद्धि	४५
३१-	अलहूद भैरवी के ज्ञात चमत्कार, सात साधनाएँ	४७
३२-	वीर साधना	४८
३३-	वायु गति साधना सिद्धि	४९
३४-	स्यामा साधना	५०
३५-	शुभ्य साधना	५१
३६-	भैरव साधना	५२
३७-	उग्र तारा सिद्धि	५३
३८-	जल गमन प्रक्रिया साधना	५५
३९-	आखिर साधना शिविर क्यों ?	५७
४०-	साधना शिविर	५८
४१-	भौतिक शान्ति	५९
४२-	साधना सिद्धि	६०
४३-	अनास्था में आस्था	६१
४४-	सूर्य सिद्धान्त	६२
४५-	दहकते घंगारों पर यिक्तता गुलाब	६३
४६-	भैरवों के वशीकरण सीखा और.... और	६४
४७-	घंगारों पर नृत्य	६५
४८-	किसी भी क्षेत्र में सफलता के सात गुण	६६
४९-	आप में अपराजिता प्रतिभा है	६७
५०-	दहकते घंगारों पर नृत्य	७०
५१-	अब सत्तार में कोई भी शस्त्री अमुन्वर नहीं रह सकती	७२
५२-	सौन्दर्य बल्ली	७३
५३-	सौन्दर्य बेटिका	७४
५४-	तन्त्र द्वारा अद्वितीय सौन्दर्य प्राप्ति	७५
५५-	इक्कीस वर्षों में भैरवी हानू-जिसके पास दुर्लभ तन्त्र है	७८
५६-	प्रिय वधक कर मन्त्र	८०

विश्व की दुर्लभ

कृत्या साधना-सिद्धि

पत्रिका में पिछले सात वर्षों में सैकड़ों प्रयोग प्रकाशित हुए हैं, और उनमें से अधिकांश प्रयोगों को पत्रिका पाठकों और साधकों ने अपनाया, उन्हें सिद्ध किया और समाज तथा देश के सामने हजारों लोगों का श्रीरु में उन प्रयोगों को सिद्ध करके दिखा दिया कि आज भी ये प्रयोग यथार्थ हैं, प्राप्राणिक हैं और पूर्ण सिद्धि देने में सहायक हैं, इन प्रयोगों के माध्यम से उन्होंने अपने जीवन की समस्याओं को सुलझाया है, समाज के लोगों का दुख दूर कर दिया है, और इस वैज्ञानिक युग में भी विविध रोगों से ग्रस्त असाध्य रोगियों को रोग मुक्ति दिलाई है।

पर कृत्या प्रयोग जैसी उच्चकोटि की साधनाओं को पत्रिका में देने से मैं निरंतर बचता रहा हूँ, क्योंकि यह प्रयोग अत्यधिक तीक्ष्ण, शीघ्र प्रभाव देने वाला और अपने आप में प्रचुर होता है, जिस प्रकार तोप का गोला सही निशाने पर लग कर विध्वंस कर देता है उसी प्रकार यह प्रयोग भी प्रचुर निशाने से आवश्यक शक्त प्राप्त कर साधक के मनोरथ को पूर्ण कर देता है।

कृत्या

कृत्या उच्चकोटि का तांत्रिक-मायिक प्रयोग है, जब भगवान् शिव ने दक्ष का यज्ञ विध्वंस करने के लिए अपने गर्भों को भेजा और बीरभद्र जैसे बलशाली गण भी दक्ष के मंत्रों के आगे बेबस और असहाय हो गये तब भगवान् शिव ने अपनी जटा में से एक कृत्या का निर्माण किया जो कि अत्यन्त विभक्त इरावती, भयानक और

पूरी सृष्टि का प्रलय करने में समर्थ थी, जमीन पर पैर रखते ही पृथ्वी अपने आप में नीचे घसकने लगी, दसों दिशाएँ उसकी हुंकार से डोलने लगी और सम्पूर्ण विश्व में खलबली तो मच गई, वह शिव जी आज्ञा पा कर दूसरे ही क्षण दक्ष की यज्ञ शाला में जा पहुँची और सारे यज्ञ को लहस-लहस कर दिया, भय लोगों की तो बात क्या, वहाँ बैठे सैकड़ों देवी देवताओं तक की उठा उठा कर फेंक दिया, और यज्ञ के आयोजन कर्ता दक्ष का सिर एक ही भटके से काट दिया, ऐसा लग रहा था कि मानो कृत्या के रूप में कोई प्रलय उपस्थित हो गया हो जिसके आगे न ही देवताओं की सिद्धि चल पा रही थी, और न दक्ष के मंत्रों का ही कोई प्रभाव व्याप्त हो रहा था, उस कृत्या के सारे शरीर से आग की लपटें निकल रही थी, जिससे पूरा संसार सुलस रहा था, उसके श्रोत्र के आगे आकाश और पृथ्वी, पवन और दसों दिशाएँ धरधर कांप रही थी और ऐसा लग रहा था कि इसको शान्त करना अत्यधिक कठिन ही नहीं, अपितु असंभव है।

तब सभी देवता भगवान् शिव के आगे गिड़गिड़ाने लगे, हाथ जोड़ कर क्षमा मांगने लगे, तब जाकर शिव का श्रोत्र कुछ शान्त हुआ और उन्होंने कृत्या को पुनः शान्त कर अपने पास बुला लिया।

बहुत ही कम, या वीं कहा जाय कि गिने पुने साधकों या उच्चकोटि के सन्यासियों को ही कृत्या प्रयोग के बारे में जानकारी है, यद्यपि मेरे पास हजारों सन्यासियों ने तांत्रिकों और योगियों ने अनुगत वित्त किया कि उन्हें

कृत्या
टाल
बमल
लिए
जीव
कृत

प्रयोग
आप
तक
की

साधना
दिना
तेज
प्रयत्न
है, श्री
है, एवं
है।

अपितु
उच्च
वास्त
रहस्य
है, उ

शिव
युक्त
देना
पंचो
आता

कृत्वा प्रयोग समझा दिया जाय, परन्तु मैं हनेवा हूँ
वाल्ता रहा, पर इस विवेकांक में मैं कोई देता, अद्भुत
समस्कारिक प्रयोग देना चाहता था, जो कि वाद्यों के
लिए चिरस्मरण रहे, और इसके साधक से वे अपने
जीवन की सारी कामनाओं को पूर्ण कर सकें।

कृत्वा प्रयोग के नियम

जैसा कि मैंने यह कहा यह उष्णक्रीडि का तांत्रिक
प्रयोग है, परन्तु आप विद्यार्थी कहीं से साधक है और
आप जैसे कई साधकों ने तो गुरु दीक्षा और गुरु दीक्षा
तत्त्व जाना को है, अतः आप में से प्रत्येक साधक इस साधना
को सिद्ध कर सकता है।

१- यह साधना १६ दिन की है, रात्रिकालीन
साधना है, और इसमें काली घोंती पहिन कर दक्षिण
दिशा की ओर मुंह कर लाले प्रासन पर बैठ कर सामने
तेल का दीपक जला कर 'कृत्वा' माला से मन्त्रा जप साध
शक है, यह कृत्वा माला अद्भुत तरीके से बुनी हुई होती
है, और इसका प्रत्येक मनका अपने आप में मंत्र सिद्ध होता
है, एक माला पर जप मात्र एक सौ पचास जपे घाता
है।

२- यह कृत्वा माला केवल इस प्रयोग में ही नहीं
बलित किसी भी प्रकार की महाविद्या साधना में और
उष्णक्रीडि के तांत्रिक प्रयोगों में प्रयोग की जा सकती है,
वास्तव में ही यह माला साधनात्मक संसार का अद्भुत
रक्षक है, जिसके गले में भी मात्र यह माला पड़ी होती
है, उसके द्वारा स्वतः अद्भुत समस्कार होते रहते हैं।

३- अपने सामने जैसा महागुरुओं ने अनुप्राणित
शिव शक्ति साधना से सिद्ध और अनुप्राणित
गुरु "कृत्वा मन्त्र" किसी तांत्रिक के पात्र में स्थापित कर
देना चाहिए और उसकी पंचोपचार पूजा करनी चाहिए,
पंचोपचार में जल, कुंकुम, ससत, गुप्प और तैल
प्राता है।

हिमाचल : कुछ नवीन तथ्य

१६-१७-१८ नवम्बर ८७। भूस्तर में पूरे
हिमाचल के साधकों का अद्भुत सम्मेलन। इन
तीन दिनों में पूज्य गुरुदेव ने कई नवीन तथ्य
उजागर किये, उन्होंने बताया कि मैं इस घाटी में
चार पांच साल तक निचरण कर चुका हूँ, और
यहाँ के जपे जपे से परिचित हूँ, इसी क्रम में
अपने प्रवचनों में उन्होंने वहाँ छगने बाबी विभिन्न
वनस्पतियों और उनसे रोग मुक्ति के बारे में
विस्तार से बताया, उन्होंने जानकारी दी कि मणि-
कर्ण में जो गर्भ पानी का सोता है, वह पीछे पहाड़ों
से आता है, ऊपर पहाड़ों में "गन्धकेश्वर महादेव"
का प्राचीन मन्दिर है, उस गुफा में छत से पानी
की एक एक बून्द गिरती है, और नीचे गन्धक से
निर्मित शिवलिंग का आकार बनता रहता है, यह
गन्धक से बना शिवलिंग लगभग सात फीट लम्बा
और दोनों बाजुओं में आगे लायक घेरे से युक्त
अद्भुत प्रभावकारी शिवलिंग है, जिस प्रकार
काश्मीर में बर्फ से निर्मित शिवलिंग अमरनाथ का
महत्व है, उसी प्रकार संसार में यह एक मात्र
स्थान है, जहाँ पानी की बून्द से गन्धकेश्वर महा-
देव का निर्माण होता है।

उन्होंने आगे बताया कि मनाली से रोहतांग
जाने वाली सड़क पर एक ऐसी गुफा है, जिसमें दो
हजार साधक बैठ कर साधना कर सकते हैं, इसकी
विशेषता यह है कि गुफा सड़ियों में अत्यन्त गर्म
और गर्मियों में अत्यन्त शीतल रहती है, इसका
द्वार बहुत छोटा सा है पर अन्दर से यह इतनी
विशाल गुफा होगी कि इसका पता हिमाचल
वासियों को भी नहीं है।

इसके अलावा उन्होंने कई तांत्रिकों के नाम
और पते बताये जो मनाली रोहतांग के आस-पास
साधनाएं सम्पन्न कर रहे हैं, और वे साधक अपने
आप में ही अद्वितीय हैं।

इसके बाद वीरभक्त में बैठकर या सामान्य तरीके से पालवी मार कर तिम्र मंत्र की ११ मल्ला मल्ला जप आवश्यक है।

४- इस साधना में पूर्ण वक्रचक्र शक्त का वास्तविकता, एक समय को जान करना आवश्यक है।

५- साधना मनोविज्ञान के बाद उस मन्त्र का शक्ति पर शक्ति के बाद या शक्ति में शक्ति के बाद चाहिए यदि सभी समय तक ऐसा साधना हो सके तो तीस विधों तक भी इस मन्त्र की धारण करना हो चाहिए जिसमें कि तारे शरीर में कृत्वा रम तक और साधक जिस प्रकार से भी चाहे, कृत्वा का प्रयोग कर सके।

कृत्वा प्रयोग सिद्धि

यह साधना सिद्ध होने पर साधक धैर्य, श्रद्धाओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने वाला और मन में किसी बल

धारण करने वाला हो जाता है।

२- ऐसे साधक को वचनसिद्धि प्राप्त हो जाती है, और साधना सिद्धि के बाद वह मात्र एक बार कृत्वा मंत्र का उच्चारण कर सामने वाले को जो भी कह देता है, वह घुसने लगता है, एक प्रकार से उसे "वचन सिद्धि" प्राप्त हो जाती है या जो कहा जाय कि उसमें आद या परदान देने की श्रद्धा शक्तता प्राप्त हो जाती है।

३- यह कृत्वा मंत्र का जिस व्यक्ति पर या किसी व्यक्ति के फोटो पर जिस प्रकार का प्रयोग करे, वह प्रयोग सुरक्षित सम्पन्न हो जाता है, उदाहरण के लिए कृत्वा प्रयोग के द्वारा मारण मोहन, उच्छादन, और वशीकरण सुरक्षित सिद्ध होता है, यदि वह कभी भी कृत्वा प्रयोग का मंत्र जन कर सामने वाले व्यक्ति की मन ही मन कहे, कि यह दूध से नाकी मारने या मेरा कहा माने या मेरे सामने गिरगिरावे तो वह क्षणिक सम्पन्न हो जाता है, इसी

कुल्लू और तांत्रिक

१७ नवम्बर ५७। दोनहर का समय। मुख्य गुरुदेव एकान्त भाव से व्यास नदी के किनारे किनारे अपने विचारों में ही डीन बड़े चले जा रहे थे, कि सामने से तीस चालीस तांत्रिकों का जम-का था पहुँचा, जो भी हिमाचल में तांत्रिकों की बहुतायत है और इनमें से कई तांत्रिक तो मारण मोहन और साधनाओं में बहुत निपुण हैं, वे सभी तांत्रिक विविध रूप धूपा में थे इनमें से कुछ शीतल ने तो कुछ सामाजिक, कुछ मारण प्रयोग में सिद्ध थे, तो कुछ काली साधना के उपासक। सभी की धारणा काल थी, सभी क्रोयित अवस्था में थे, इसलिए कि एक बाहर का व्यक्ति हिमाचल में आ कर कैसे साधना शिथिल सम्पन्न कर सकता है।

आते ही उन्होंने ऊँच जलूल गालियाँ देनी शुरू की और चीख कर कहा कि आज तुम्हारी मृत्यु निश्चित है, और इसी व्यास नदी के किनारे तुम्हारी दाह क्रिया होगी।

गुरुदेव चुप रहे, उन्होंने अपने जीवन में ऐसे सैकड़ों तांत्रिक देखे थे, उनके मन में कोई भय नहीं हुआ, वे बोलते, तब तक तो उन तांत्रिकों ने अपने अपने मारण प्रयोग, वीरभद्र प्रयोग और भस्म प्रयोग प्रारम्भ कर दिये।

उनमें से एक बड़े डील डील का लगभग सात फुट का तांत्रिक सबसे आगे था, और वह कुछ जवाब ही जोश में था, उसे कृत्वा सिद्ध थी, और वह गुरुदेव पर मूठ फेंक कर मारण प्रयोग करने की तैयारी कर रहा था।

प्रकार इसके माध्यम से किसी पुरुष या स्त्री को दुरन्त दशा में लिया जा सकता है।

४- इस प्रयोग की सबसे बड़ी विशेषता है कि किसी भी प्रकार के रोगी व्यक्ति को देखकर यदि कृत्वा भय से सिद्ध अल चिह्नों या पिला दे तो रोग में तुरन्त सफलता प्राप्त हो जाती है, इस प्रयोग ने जल्द से जल्द रोगी को चन्दों को सामर्थ्य दी जा सकती है, चन्दों को रोगी प्रदान की जा सकती है, कमजोर और असक्त रोगियों को तत्काल प्रदान की जा सकती है, और छोटे बड़े रोगों को एक बार कहने से ही चम्पक हो जाते हैं।

५- इसके माध्यम से पत्नी-पति का सम्बन्ध दूर किया जा सकता है, किसी को भी जानने कर के फिर अपने पक्ष में किया जा सकता है, और मनोबोधित कार्य सम्पन्न किया जा सकता है।

६- यदि किसी शत्रु का सर्वनाश करना है तो साधना के लिए असंख्य साधन हैं, इस प्रयोग से एक एक करके वह के पारिवारिक सदस्य मरते जाते हैं, अचानक

घर में शान लग जाती है, या दूसरे शब्दों में कहा जाय तो उत्तरा सर्वनाश हो जाता है।

७- इस साधना से साधक को ऐसी सिद्धि प्राप्त होती है कि वह किसी भी प्रकार के प्रसंगिक कार्य को सम्भव कर सकता है, अनेक कहीं पर भी विचरण कर सकता है, उसे किसी प्रकार का कोई भय नहीं रहता, उस पर मारण प्रयोग या तांत्रिक प्रयोग नहीं कर सकता और संसार का कोई व्यक्ति उसको नुकसान नहीं पहुंचा सकता।

जब कृत्वा यन्त्र के बारे में वर्णन किया है, इस यन्त्र का कोई भूत नहीं लिया जावेगा, यदि शान पत्रिका सदस्य है, तो अपनी सदस्यता सत्यापित करने और फिर दो नये पत्रिका सदस्य बना कर उनके पूरे नाम व पते लिखें और १४०/रु० का मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट कर दें, आपका इस माध्यम का पत्र प्राप्त होते ही उन दोनों मित्रों को तो पूरे वर्ष भर पत्रिका भेजी जाती रहेगी और आपकी वह भद्रमूर्त साधनजनक "कृत्वा यन्त्र" मुक्त में

सभी अचानक एक घटना घटी, नदी के किनारे एक तरफ लड़ी बीस बीस साल की यौवन-मयी, कन्या ने आगे बढ़ कर उस लम्बे चौड़े डील डील वाले तांत्रिकों के सरदार "रमशान बाबा" की दाढ़ी बांधे हाथ में पकड़ ली और दाहिने हाथ से दो तमामे जड़ दिये, बोली-जिस पर तुम प्रयोग कर रहे हो वे मेरे गुरु हैं वे तो जायद गुजे पहिचानते हैं, या नहीं, पर मैं उनसे दीक्षा ले चुकी हूँ और साधना करती हूँ, उन पर प्रयोग करने से पूर्व हिम्मत हो तो पहले मुझ पर विजय पा ले तब आगे बढ़ना।

सरदार पर थप्पड़ पड़ते ही सब तांत्रिक सन्न से रह गये, वह रमशान बाबा कुछ प्रयोग करता उससे पहले ही उस भैरवी ने कृत्वा प्रयोग कर उसे मरणासन्न अवस्था में पटक दिया, सभी तांत्रिकों के अनुभव विनय पर ही उसका क्रोध शान्त हुआ, और उस पर से कृत्वा प्रयोग हटाया।

आज मैं बस बस एक बात ही कहूँ थी (जिसके बारे में एक स्वतन्त्र लेख इसी अंक में जा रहा है) और दो दिन से वह मुखेश से बात बात करने को उतावली थी, पर उसकी हिम्मत नहीं बढ़ रही थी, जब मुखेश की व्यास नदी पर विचरण करते हुए देखा तो उसने अपना परिधय स्वतः दे दिया, नदी पर उपस्थित सैकड़ों स्त्री पुरुष, साधक साधिकाएं घंटे भर तक धटित यह दृश्य देख कर सन्न थे, बाद में सभी तांत्रिकों ने मुखेश के चरण छुए और नदी के किनारे ही उनसे दीक्षा प्राप्त की।

नव वर्ष की भेंट स्वल्प प्रदान कर दिया जायेगा, पर यह यन्त्र १५ फरवरी १९८८ तक ही भजने की व्यवस्था होगी, इसके बाद धनराशि भजने पर यह यन्त्र प्रदान करना सम्भव नहीं हो सकेगा।

धनराशि भजने समय आप अपना नाम व पूरा पता भी लिखें तथा पत्रिका सदस्यता संख्या लिखें तथा उसमें यह स्पष्ट उल्लेख हो कि गुरु "कृत्या यन्त्र" भिजवाया जाय। पत्र के साथ जो आपने दो पत्रिका सदस्य बनाये हैं, उनकी रसीद लगाना आवश्यक है।

कृत्या सिद्धि

किसी भी मंगलवार की रात्रि को भासन पर बैठ जाय और यन्त्र को पूजा कर सबसे पहले दाहिने हाथ में जल ले कर कहे कि मैं यह ११ दिन की साधना कृत्या सिद्धि के लिए कर रहा हूँ।

इसके बाद बाँये हाथ में जल ले कर निम्न मन्त्र से अपने शरीर को यन्त्र की तरफ गजबूत बना ले जिससे आपके शरीर को काई नुकसान न पहुँचे।

देह रक्षा मन्त्र

ॐ ब्रह्म त्वं समस्तं मम देह धावद्-धावद् यन्त्र देह फट्।

इस प्रकार दस बार बोल कर अपने शरीर पर

जल छिड़के।

दस दिशा बन्धन

फिर बाँये हाथ में चायख ले कर दसों दिशाओं की ओर फेंके जिससे कि दिशा बन्धन हो सके, और आप पूर्णता के साथ साधना सम्पन्न कर सकें।

मन्त्र

ॐ शिवकृत्या प्रयोगार्थं दस दिशा बन्धनार्थं क्री-
क्रीं फट्।

इसके बाद निच का और मन्त्र का पूजन करें, और फिर मूल मन्त्र जप करें।

कृत्या मूल मन्त्र

ॐ क्लीं-क्लीं शबुणां मोहये उच्चाटये मारये
वचनसिद्धिं मम प्राप्ता पालय-पालय कृत्या
सिद्धिं फट्।

इस प्रकार ११ दिन तक प्रयोग करें और उसके बाद उस यन्त्र को अपने गले में धारण कर ले या बांह पर बांध ले तो साधक अद्भुत शक्ति और सामर्थ्य अनुभव करने लगता है, उसके बिहारे पर भव्य तेजस्विता स्पष्टगोचर होने लगती है, और एक प्रकार से उसे दसों महाविद्याओं से भी श्रेष्ठ तन्त्र की अद्भुत शक्ति कृत्या सिद्ध हो जाती है।

ॐ

★ महालक्ष्मी साधना शिविर ★

फंजाबाद (अयोध्या) उ. प्र.

१२-१३-१४ फरवरी १९८८

एक अद्भुत शिविर, पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी के नेतृत्व में लीला संस्कार व साधना-विवरण हेतु संयोजक श्री श्यामल कुमार बनर्जी से सम्पन्न करें।

श्यामल कुमार बनर्जी १९६, पुणे ४०, लीला संस्कार फंजाबाद - २२४००१ उ. प्र. टेलीफोन - २५९५

सिद्धाश्रम

शब्द सिद्धाश्रम शब्द गोपनीय नहीं रहा, भारतवर्ष का प्रत्येक धर्मनिराश व्यक्ति सिद्ध साधु सन्यासी, योगी, धर्मी, इत्यादि शब्द से भरी भाँति परिचित है, यह विश्व का विख्यात साध्यात्मिक पुनर्जात पुण्यस्थल है जहाँ पर प्रत्येक साधक पहुँचने का स्वप्न अपने मन में संजोये रहता है और जो साधक अपने जीवन काल में इस दिव्य आश्रम में पहुँच जाता है, उसका जीवन प्रगल्भ हो जाता है, और उसके पूर्वज स्वर्ग में बैठे बैठे उस पर आशीर्वाद की वर्षा करते रहते हैं।

सिद्धाश्रम वास्तव में ही अत्यन्त ही महत्वपूर्ण आश्रम है, जो कि भारतीय सभ्यता के उत्थान काल में गतिशील है, यह एक ऐसा स्थान है, जहाँ पर पहुँचकर जीवन का मोक्षार्थ कहना जाता है, जहाँ पर पहुँचने के लिए साधक यहाँ तक साधना और तपस्या करते रहते हैं, उनके मन की एक ही धारणा रहती है कि किसी प्रकार से जीवन में एक बार सिद्धाश्रम पहुँच सकें, वहाँ की माटो भी अपने गलाह पर भस्म की तरह लगा सकें, वहाँ की निर्मल सिद्ध योगी भीम में स्थान कर पूर्ण रूप से रोग-मुक्त हो सकें, वहाँ पर विचारण करते हुए, छोटे छोटे विषय-विषयों और व्यसनों-आश्रयों के साथ खेल सकें और संकटों-हजारों वर्ष प्राप्त सिद्ध योगियों के भावन वरदानों में बैठ कर उनके अस्तोत्रों का पाठ कर सकें, उनके दिव्य वरदानों की दृष्टि में उत्तार सकें, और एक प्रकार से देवा जगत् की शक्ति की पूर्णता, जीवन का सानन्द और जीवन का मोक्ष अपने आप में समेट सकें।

सिद्धाश्रम

इसका वर्णन विवरण वेदों के आदि ग्रन्थ ऋग्वेद में आया है, जहाँ ऋषि ने आकांक्षा प्रकट की है कि मैं उच्च

कोटि की साधना सम्पन्न कर अपने जीवन काल में सिद्धाश्रम पहुँच सकूँ और वहाँ प्रकृति के उन रक्षकों की जान सकूँ जो अपने ज्ञान में अद्वितीय ज्ञान और रहस्यमय हैं, इसके बाद पौराणिक काल में भी कई स्थानों पर सिद्धाश्रम का वर्णन आया है, यहाँ तक कि भगवान् श्रीकृष्ण ने भी सिद्धाश्रम की धुरी धुरी प्रशंसा की है, भीष्म पितृमह ने भी मरते समय अवसान श्रीकृष्ण से हाथ जोड़ कर मद्गद कंठ से एक ही याचना की है कि मैं किसी भी प्रकार से सिद्धाश्रम पहुँच सकूँ और उन प्रातःस्मरणीय ऋषियों के और अपने पुत्रों के दर्शन कर सकूँ जो कि अपने जीवन काल में ही, साधना सम्पन्न कर सत्तरीर सिद्धाश्रम पहुँचे हैं।

आधुनिक काल में भी ऐसे कई सिद्ध योगी हुए हैं, जिनकी साधनाएँ सम्पन्न कर हम गहान पुण्यदायक क्षेत्र में प्रवेश पाया है, और अपने जीवन को सफल बनाया है, स्वामी कृपाचार्य, योगी ज्ञानानन्द, स्वामी विष्णुदानन्द लालिही महाराज और ऐसे अन्य कई सन्यासी और गृहस्थ दोनों ने ही अपने अपने ढंग से साधनाएँ सम्पन्न की हैं और अपने जीवन काल में ही सिद्धाश्रम पहुँच कर अपने जीवन को सफल बनाया है।

मानवरीयर और बीजाणु प्रकृति से उत्तर की ओर एक महत्वपूर्ण स्थान पर यह माना जाता है कि मानव प्रकृति प्रकृति निर्मित आधम है, कहते हैं, कि श्री ब्रह्मा को के आदेश से स्वयं विरचकर्म में अपने हाथों से इस आधम की रचना की है, मनुवाग विष्णु ने इसकी भूमि की प्रकृति की और वायुमन्त्र को तबीयत सहाय नभसना सुकृत बनाया है और अरुणत नभस की कृपा से यह सगर और धनर है, इसका तात्पर्य यह है कि इस आधम में रहते काले किसी भी योगी या सत्तासी को जरा पर्याप्त बृहत्तया व्याप्त नहीं होती, वह चिर नहीं चिर नीरुधनुक और मोक्ष मय बना रहता है, साध ही साध प्रमत्ता का परधान होने से इस आधम में मृत्यु का काली छाया व्याप्त नहीं होती, यहाँ किसी का मृत्यु हो ही नहीं सकती, इसीलिए इस आधम को देवताओं के लिए दुर्लभ और महितीय बताया गया है।

आधम का मुख्य द्वार अपने धाम में अलौकिक है, यह मनुष्य के अन्तःकरण में उड़ कर आ जायमानों से प्रथमा मृत्यु केनो के माध्यम से न ही देखा जा सकता है, न प्रकृति की अलौकिक की जा सकती है क्योंकि यह अपने धाम में आध्यात्मिक ज्ञान पुत्र है, और उच्च कोटि की भावनाओं से संपन्न है, ऐसी साधनाओं के धामे विज्ञान सीमा का बन कर रह गया है, उसमें यह क्षमता नहीं है कि वह अपने प्रकृति से इस आधम को देख सके, या अलौकिक कर सके।

इस आधम की अनेक विशेषताएँ हैं, जिसकी शक्तों में बाधा ही नहीं जा सकती, बलिष्ठ ने कहा यदि मैं अपने पूर्ण ज्ञान से इस सिद्धाधम के सीधे का वर्णन देखनी के माध्यम से करूँ तो यह संभव नहीं है, शब्दों के माध्यम से उच्चरित कर ही ऐसा होता प्रसन्न है, क्योंकि यहाँ पर पान पमपर प्रकृति अपने रूप रूप में दिव्यमान है और इस सिद्धाधम में एक घटपट्टा पात पात प्रकाश विद्यता हुआ रहता है, जो कि अपने धाम में प्रकृत एवं मानव-सुखा है।

इस आधम का विस्तार केनही सीमा समझा और

कैदों सील जोड़ा है, यहाँ पर न तो सर्वा पड़ती है, और न विशेष गर्मी, एक मधुर आनन्दवस्तुका भीतम बना रहता है, यहाँ पर न तेज घुप पड़ती है और न रात की अन्धेरी छाया, गोपनी से पहले जो मधुर प्रकाश विद्यता हुआ होता है, टीक देखा ही प्रकाश पूरे सिद्धाधम में विद्यता हुआ सुखद अनुभव होता है।

इस सिद्धाधम के मुख्य द्वार से लगभग बाधा भीत अन्तर जाने पर ही ऐसा लगता है कि जैसे साक्षात स्वर्ग में ही आ रहे हों, कोई भी अत्यन्त विद्यावि गहरी और तिरस्कर प्रकृतिवि सिद्ध योगी भील बहती है, जिसका पानी स्वच्छ निर्मल और पवित्र है, इस पानी की यह विशेषता है कि इसमें स्नान करने ही तात्कालिक जीवन के सभी रोग स्वतः समाप्त हो जाते हैं, और व्यक्ति पूर्णतः शान्त भूत और चिर जीवनमय बन जाता है, उसकी बृहत्तया अमान्त हो जाती है, तिर के भाल काले और सुन्दर बन जाते हैं, सारे शरीर की दूरियाँ और बृहत्प के बिन्दु समाप्त हो जाते हैं, प्राणों की रोगनी अपने धाम में थड जाती है और एक प्रकार से देखा जाय तो पूरे शरीर का रस्य रूप सा हो जाता है, उसे सहता विद्यावि गहरी होता है, कि धारा जल रोग भूत शरीर इसका स्वस्थ उतना यौवम भय और हलना वैगवत बन गया है, उत्तरे हृदय में उमंग, उसका और आनन्द की हिलोरे उठने लगती है, और सही धर्मों में वह प्रजर अमर बन जाता है।

सिद्धयोगी भील के किनारे स्फटिक की पारदर्शी लोकाएँ और चम्पू पड़े हुए हैं, जिस में बैठ कर योगी सम्पत्ती सिद्धयोगी भील में दूर दूर तक विचरण कर आनन्द उठाते हैं, प्रकृति के मोक्षों को निहारते हैं और अपने जीवन की पूर्णता के का प्रप्राप्त करते हैं, यहाँ पर सिद्धयोगी भील के किनारे कुछ स्वस्थ जीवनमान सम्पत्ती साधनारत हैं तो कहीं सिद्धयोगी भील में स्नान करते हुई जीवनमयी सन्वातिनिधियाँ एक दूसरे पर पानी उछालती हुई किलौन करती हुई, हृषी के आवायरा में निमग्न हैं, यहाँ पर भील के किनारे ही कुछ सन्वातिनिधियाँ सुन्दर

मन्त्रों में पुनर्जित पुनर्जित भूगर्भीयों से खोज रही होती है जो कहीं कुछ सत्यता मान्य नहीं है। प्रकृति के महत्वपूर्ण रहस्यों की पहचानने का प्रयत्न करते हुए, दिखाई देते हैं।

मन्त्रों के दूसरी तरफ ऊँचे ऊँचे देवदारु के घने पेड़ और उनकी लीला काया अपने आप में अलौकिक रूप प्रस्तुत करती है, ऐसा लगता है कि उका ही कलार में

देवता लोग खड़े हुए इन सन्ध्यासियों का अभिनेय कर रहे हैं, संसार में जिसने तरह के पुण्य है, उसने भी अधिक हजारों प्रकार के पुण्य होने का विवरण करते हैं, सिद्धाश्रम पर मृत्यु की छाया व्याप्त नहीं होनी, बल्कि वे घटि-लोक प्रकृति की सुगन्धित पुष्प गिरते हुए रहते हैं, क्षत्पना करें कि एक तरह सिद्धयोगी भोजन नहीं है, उसने किनारे, किलोने करते हुए सत्यासी, सत्यासिनी पत्नी से विपरण कर रही है, दूसरी धीरे धीरे भरी

ये अन्धे गलियारे हैं, जिनमें आप जा रहे हैं।

हम अपने आपको सम्य और सुसंस्कृत कह रहे हैं, पश्चिम की चकार्पाय में हम अपना अस्तित्व बूझा बैठे हैं, हमें अपने आप पर भी भरोसा नहीं रहा है, जराय पीना, सिगरेट के छले बनाना एक कणन बन गया है, पूजा पाठ धर्म आदि इकितानुसी माना जाने लगा है, और इस सब का परिणाम क्या है मानसिक अमर्ताप, मानसिक तनाव, परिवार में मतभेद, पति पत्नी में लड़ाई भगड़े, स्वच्छन्द विचरण करने वालों पुत्रियाँ और अपनी इच्छा के अनुकूल कार्य करने वाले पुत्र।

और हम सब यह सब कुछ देख रहे हैं, एक प्रकार से आधुनिक सम्मता का यह जहर पीने के लिए जल्य है, पर हमें कोई रास्ता सूझ नहीं रहा है, हमको यह समझ नहीं आ रहा है कि घर में सब कुछ होते हुए भी हम इनमें दुःखी और परेशान क्यों हैं, सब सम्पदा होने पर भी इसना मानसिक तनाव क्यों है, सब कुछ होने हुए भी इस प्रकार का अलड प्रेसर और मानसिक दबाव क्यों सहन कर रहे हैं, इसका कारण यह है कि हम अपने पापों के बोध को धरती खो बैठे हैं, हमारी जड़ें हिल गई हैं, पूर्वजों पर से हमारी आस्था समाप्त हो गई है, तन्त्र और मन्त्रों का मखौल उड़ाने में हमें वृत्ति अनुभव होने लगे हैं, और ये ही ये अन्धे गलियारे हैं जिनमें हम आगे बढ़ रहे हैं, अन्धेरे में भटक रहे हैं, दीवारों से तिर फाड़ रहे हैं, और हमें प्रकृति को कोई किरण दिखाई नहीं दे रही है।

और इन अन्धे गलियारों में बड़ों का परिणाम है, चिन्ता परेशानियाँ दुःख, अय्यासी और स्वास्थ्य क्षीयता, हम ऊपर से चाहें कैसे भी दिखाई दें पर अन्दर से खोखले हो रहे हैं, और अपने आप से हम भली भाँति परिचित हैं, पर हम पर पश्चिम की सम्मता का ऐसा भूत सवार है कि हम उसी को अपना सब कुछ मान बैठे हैं, और यही हमारे जीवन को न्यूनता है।

आवश्यकता है, अपनी धरती को पहचानने की, अपने पूर्वजों को जानने की, अपने ज्ञान विज्ञान के चिन्तन करने की, और भारतीय संस्कृति और मन्त्रता अपनाने की, सभी हम इन अन्धे गलियारों से बाहर आ सकेंगे, रोशनी को पहचान सकेंगे, और गगन में पूर्ण आस्था, विश्वास और जीवन्तता अनुभव कर सकेंगे।

प्रकृति का सौन्दर्य अपने आपमें आँखों को बांध देती है, और ऐसा लगता है, कि इन ब्रह्म कमलों के बीच इन बहुसंख्य पुष्पों के बीच बैठ आँखें, सारी चिन्ताएँ, सारी भयस्थानें सारे तनाव अपने पासमें भूत जाऊँ और एक प्रकार से देखा जाऊँ तो इतना अधिक ध्यानस्थ हो जाऊँ कि मैं एक कुछ पूरे आँखें, मुझे अपनी देह का भी ध्यान नहीं रहे, और मेरे पास तुलसी खरगोश के छोटे छोटे बच्चे दृष्ट कर दृष्ट कर मुझे निहारते रहे, हिरण के छोटे छोटे हावक अपनी सीनी से मेरी पीठ चुजाते रहे और मैं पूर्ण ब्रह्मानन्द में लीन हो जाऊँ, ऐसा स्वप्न प्रत्येक भारतीय श्रविक साधक का होता ही है, और यही जीवन का ध्यानन्द है।

सोचो तो ही आगे बढ़ने पर सुन्दर। पत्नी और हरी गरी सँस से आच्छादित आश्रम ही मनोहर आश्रम बने हुए है, ठीक वैसा ही, जैसे कि हमने पुराणों में पढ़े हैं। इस आश्रम में उच्च कीर्ति के सम्प्राप्ति घटे हुए, अपने शिष्यों को प्रकृति-उत्तर-रहस्यों को समझा रहे होते हैं।

सोचना की इन ऊँचाइयों को बता रहे होते हैं, जिनकी यहाँ पर कल्पना ही नहीं की जा सकती, हजारों वर्ष की प्रायु प्राप्त वे योगी सत्पासी अपने आपमें ज्ञान साधनाओं के साकार पुत्र हैं, इनके जीवन का नीमाम अहलाता है उनके चरणों में बैठने से पूर्ण मानसिक शान्ति प्राप्त होती है और इनके द्वारा भी ज्ञान प्राप्त होता है, उसका वर्णन लेखनी कर ही नहीं सकती।

ऐसे महत्वपूर्ण प्रकृति निर्मित सीधे सादे, सरल सात्विक हृन्मन को कुदियाएँ और आश्रमों वृक्ष वृक्ष दिखाई देती हैं और अपने आप में सात्विकता का उदाहरण हैं, यहाँ किसी प्रकार की गड़क-भड़क नहीं है, शान शोभल नहीं है, खन और शून्य दिखावा नहीं है, जो कुछ है अपने आप में स्पष्ट है, सही है, प्रामाणिक है।

कहीं पर नभः धूम से वातावरण अत्यन्त ही सुगन्धित हो रहा है, वैदिक मन्त्रों के माध्यम से यज्ञ सम्पन्न करते

स्वामी विशुद्धानन्द : जिन्होंने नाभि में कमल बल खिलाया

नया शिष्या हा सताने उत्पन्न करने में सक्षम है, क्या पुरुष चाहते पर भी अपनी कोख से संतान उत्पन्न नहीं कर सकता, विज्ञान इन प्रश्नों को सोच रहा है, हमारे पुराणों में इस प्रकार की कई बातें सुनने को मिलती हैं कि भगवान विष्णु ने अपनी नाभि में सुलाधार को जन्म देकर कमल बल निकाला जिस पर ब्रह्मा बैठे हुए थे, इस प्रकार ब्रह्मा किन्ती के गर्भ से उत्पन्न न होकर पुरुष-नाभि से उत्पन्न व्यक्ति है, इसी प्रकार ब्रह्मिष्ठ, विश्वामित्र आदि ऋषि भी किसी गर्भ से उत्पन्न न हो कर ब्रह्मा की नाभि से उत्पन्न हुए हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि यदि कुछ विशेष साधनाएँ सम्पन्न की जाय, तो नाभि से कमल बल विकसित कर उसे आकार दिया जा सकता है और मनोवाञ्छित संतान उत्पन्न की जा सकती है।

स्वामी विशुद्धानन्द भारत के अद्वितीय तन्त्रज्ञ और सिद्ध योगी थे उन्होंने अपने तांत्रिक चमत्कारों से रोकड़ी लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया था, अनेक भविकारी भी उनके तांत्रिक चमत्कारों से अभिभूत थे।

एक बार वे मसनद पर बैठे हुए थे पास में ही गोपीनाथ कविराज आदि उनके शिष्य बैठे हुए थे, चर्चा के दौरान इसी प्रकार का प्रसंग उपस्थित हो गया और किसी एक शिष्य ने पुराणों में खपी हुई इन घटनाओं पर संदेह प्रकट किया।

त्यों में पुनश्चिन्त सुकुमार मृगछाँियों से खेव रही होती है तो कहीं कुछ सन्ध्या की रात में जीन प्रकृति के महत्वपूर्ण रहस्यों को पहिचानने का प्रयास करते हुए, विचार में है।

भील के पुतरी तरफ ऊँचे ऊँचे देवदारु के घने पेड़ और उनकी लीला लामा चमने घास में अलीकिक श्म उपलब्धत भवती है, ऐसा लगता है कि एक ही प्रकार में

देवता कीन खड़े हुए इन सन्ध्यासिंधियों का अधिनन्दन कर रहे हैं, संसार में जितने तरु के पुष्प हैं, उनसे भी अधिक हथारों प्रकार के पुष्प हमेना विवक्षित रहते हैं, विदाश्रम पर मृत्यु की छाया न्याप्त नहीं होती, इसलिए ये घडि-तोप झुरनी कुण्ठित दुःख निम्न चिन्ते हुए रहते हैं, कल्पना करें कि एक तरफ सिद्धयोगा भील बह रही है, उनके किनारे, किलोने करते हुए सन्ध्यासी, सन्ध्यासिंधिया सत्ती से विपरस्य कर रही हैं, दूसरी धीर हरी भरी

ये अन्धे गलियारे हैं, जिनमें श्राप जा रहे हैं।

हम अपने आपकी सभ्य और सुशिक्षित कह रहे हैं, पश्चिम की अकापीध में हम अपना अस्तित्व भुला बैठे हैं, हमें अपने श्राप पर भी भरोसा नहीं रहा है, शराब पीना, सिगरेट के छल्ले बनाना एक फसन बन गया है, पूजा पाठ बर्म श्रादि दकियानुसी माना जाने लगा है, और इन सब का परिणाम हुआ है मानसिक अस्तौय, मानसिक तनाव, परिहार में मतभेद, पति पत्नी में लड़ाई-झगड़े, स्वच्छन्द विधरण करने वालों पुत्रियाँ और अपनी इच्छा के अनुकूल कार्य करने वाले पुत्र।

और हम सब यह सब कुछ देख रहे हैं, एक प्रकार से आधुनिक सभ्यता का यह जहर पीने के लिए बाध्य है, पर हमें कोई रास्ता सूझ नहीं रहा है, हमको यह समझ नहीं आ रहा है कि घर में सब कुछ होते हुए भी हम इनने कुन्धी और परेशान क्यों हैं, सब सम्पदा होने पर भी इतना मानसिक तनाव क्यों है, सब कुछ होते हुए भी इस प्रकार का क्लड प्रेसर और मानसिक दबाव क्यों सहन कर रहे हैं, इसका कारण यह है कि हम अपने पांवों के नीचे की धरती खो बैठे हैं, हमारी जड़ें हिल गई हैं, पुरजों पर से हमारी आस्था समाप्त हो गई है, तन्त्र और मन्त्रों का मखौल उड़ाने में, हमें तृप्ति अनुभव होने लगी है, और ये ही वे अन्धे गलियारे हैं जिनमें हम आगे बढ़ रहे हैं, अन्धेरे में भटक रहे हैं, दीवारों से सिर फाँड़ रहे हैं, और हमें प्रकाश की कोई किरण दिखाई नहीं दे रही है।

और इन अन्धे गलियारों में घडने का परिणाम है, चिन्ता परेशानियाँ, दुःख, अय्यासी और स्वास्थ्य क्षीयता, हम ऊपर से चाहे कितने भी दिखाई दें पर अन्दर से खोखले हो रहे हैं, और अपने श्राप से हम भली भाँति परिचित हैं, पर हम पर पश्चिम की सभ्यता का ऐसा भूत सवार है कि हम उसी का श्रचना सब कुछ मान बैठे हैं, और यही हमारे जीवन की न्यूनता है।

आवश्यकता है, अपनी धरती को पहिचानने की, अपने पूर्वजों को जानने की, अपने ज्ञान विज्ञान के भित्तन करने की, और भारतीय संस्कृति और सभ्यता अपनाने की, तभी हम इन अन्धे गलियारों से बाहर आ सकेंगे, रोकनों को पहिचान सकेंगे, और मन में पूर्ण आस्था, विश्वास और जीवन्तता अनुभव कर सकेंगे।

प्रकृति का सीन्धुने अपने आपसे शक्तियों की बाँध देती है, और ऐसा लगता है, कि इन ब्रह्म शक्तियों की बाँध इन बहुसंख्य पुण्यों के बोधे बैठ जाऊँ, सारी चिन्ताएँ, सारी सम्पत्तियाँ सारे लगाव अपने आप ही धीरे धीरे धीरे एक प्रकार के बोधों की नीचे डूबने लगते हैं। अतः स्वतन्त्र हो जाऊँ कि मैं सब कुछ भूल जाऊँ, मुझे अपनी देह का भी भान नहीं रहे, और मेरे पास दुर्गन्ध, अस्पर्श, अस्पर्श, के छोटे छोटे वस्त्रे हस्त, हस्त, मुझे निहारते रहे, हिरण के छोटे छोटे सावक अपनी शीतों से मेरी पीठ लुगते रहे और मैं पूर्ण ब्रह्मा-नन्द में लीन हो जाऊँ, ऐसा स्वप्न प्रत्येक भारतीय प्रत्येक मानव का होता ही है, और यही जीवन का मानन्द है।

जोड़ा ही हो और बड़े पर सुन्दर, पत्तों और हरी हरी पंखों से आच्छादित प्रत्येक ही मन्दिर आभय बने हुए है, ठीक वैसी ही, जैसे कि 'हमने पुराणों में पढ़े हैं। इस आश्रम में उच्च कोटि के तन्त्राली बैठे हुए, अपने शिष्यों को प्रकृति उन रहस्यों को समझा रहे होते हैं,

शोधना की उन ऊँचाइयों को बता रहे होते हैं, जिसकी दृष्टि को कल्पना ही नहीं की जा सकती, हजारों वर्ष की प्राप्ति प्राप्त वे योगी तन्त्राली अपने अपने अपने साधनाओं के साकार पुत्र हैं, उनके जीवन का बीधास्य कहलाता है उनके चरित्रों में ईश्वर से पूर्ण मानसिक शान्ति प्राप्त होती है और उनके द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है, उसका दर्शन लेखनी कर ही नहीं सकती।

ऐसे महाकृष्ण प्रकृति विविध सोचें साने, सरल साधिकाँहूनाओं के कुटुम्बाएँ और आश्रम, एक दूसरे तक दिखाई देती हैं और अपने आप में सात्विकता का उदाहरण हैं, जहाँ किसी प्रकार की तड़क-मड़क नहीं है, शान शीतल नहीं है, जल और धूलों दिखावा नहीं है, जो कुछ है अपने आप में स्पष्ट है, सही है, प्रामाणिक है।

कहीं पर-दक्ष मुझ से वातावरण प्रत्यक्ष ही सुगन्धित हो रहा है, अधिक मात्रों के माध्यम से यज्ञ सम्पन्न करते

स्वामी विशुद्धानन्द : जिन्होंने नाभि में कमल दल खिलाया

क्या चिन्ता हो संतान उत्पन्न करने में संभव है, क्या पुरुष चाहने पर भी अपनी कोख से संतान उत्पन्न नहीं कर सकता, विज्ञान इन प्रश्नों को सोच रहा है, हमारे पुराणों में इस प्रकार की कई बातें गुनने की मिलती हैं कि भगवान् शिष्य ने अपनी नाभि में मुलाधार को जामूत कर कमल दल निकाला जिस पर श्रेष्ठा बैठे हुए थे, इस प्रकार ब्रह्माकली के गर्भ से उत्पन्न हो कर पुरुष-नाभि से उत्पन्न व्यक्तित्व है, इसी प्रकार वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि ऋषि भी किसी गर्भ से उत्पन्न न हो कर ब्रह्मा की नाभि से उत्पन्न हुए हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि यदि कुछ विशेष साधनाएँ सम्पन्न की जाय, तो नाभि से कमल दल विकसित कर उसे आकार दिया जा सकता है और मनोवांछित संतान उत्पन्न की जा सकती है।

स्वामी विशुद्धानन्द भारत के अद्वितीय तन्त्रज्ञ और सिद्ध योगी थे उन्होंने अपने तान्त्रिक चमत्कारों से सैकड़ों लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया था, अंग्रेज अधिकारी भी उनके तान्त्रिक चमत्कारों से अभिभूत थे।

एक बार वे मसनद पर बैठे हुए थे पास में ही गोपीनाथ कविराज आदि उनके शिष्य बैठे हुए थे, चर्चा के दौरान इसी प्रकार का प्रसंग उपस्थित हो गया और किसी एक शिष्य ने पुराणों में लपकी हुई इन घटनाओं पर संदेह प्रकट किया।

हुए, सन्ध्यावी सन्ध्यासितियों का दृश्य देखते ही बनता है, वहीं पर किसी वृक्ष के नीचे, अत्यन्त ही पुष्ट, महत्त्वपूर्ण योगी प्राणी साधना में निमग्न है और उसके पास ही संक्यों प्रकार के पक्षी कलरव करते हुए सुनाई पड़ते हैं, वहीं पर स्फटिक पक्षरों से निर्मित आलीशान भव्य भवन है, जहां पर कुछ गृहस्थ साधक अपनी साधनाओं में मग्न हैं जिसकी जहां पर तबि है वे वहीं पर निश्चिंत रूप से सब कुछ विचार कर सकते हैं, अवलोकन कर सकते हैं, वहीं पर भी किसी प्रकार का दुराद ध्यान नहीं है, रोक ठोक नहीं, सब प्रवृत्त नहीं है, पाश्चात्य, डेप कामवासना, लोभ और महंकार से दूर वे सभी साधक-साधिकाएं एक प्रजोद ती मस्ती में यजीव सौ सुमारी, प्रजोद से आता-बरण में मग्न हैं, मस्ती से भरे हैं आनन्द से सरोवार है।

पर यह आश्चर्य पूर्णतः सुव्यवस्थित और नियमी से भाव्य है, अनुशासन युक्त है, इसके संचालक द्वारा र्षों की प्राप्ति प्राप्त महायोगी स्वामी तन्त्रिदानन्द जी हैं

जिनका गान ही गंगा की तरह पवित्र और हिमालय की तरह विराट है, जिनके दर्शन करने के लिए देवता लोग भी तरसते हैं, जो ज्ञान और तपस्या के साकार पुंज हैं, जिनके रोग-रोग से ज्ञान और आनन्द की, स्वाग और तपस्या की लहरियां बिखरती रहती हैं, उनके अनुशासन में यह हजारों वर्षों से आधुनिक सुव्यवस्थित है, संचालित है।

यात्र भी इन प्रगती लुकी प्रांशों से वेदों और पुराणों में वर्णित उन उच्चकोटि के योगियों और ऋषियों को अपनी प्रांशों से देख सकते हैं, दशिष्ठ, विश्वामित्र कणाद, मनि, पुलस्त्य, गौतम, भीष्म, युधिष्ठिर और श्रीकृष्ण जैसे योगियों को आज भी अपनी प्रांशों से देख सकते हैं, उनसे बातलाप कर सकते हैं, उनके पास बैठ कर उच्चकोटि की साधनाएं सम्पन्न कर सकते हैं, इससे बड़ा सीधाय और हमारे जीवन में क्या हो सकता है, इस आधुनिक में प्रवेश के भी अपने नियम हैं,

स्वामी विशुद्धानन्द जी ने कहा-पुराणों में ज्ञानी हुई सारी घटनाएं आभासिक और सत्य है, हममें इतनी शक्ति और सामर्थ्य नहीं है कि इस प्रकार की साधनाएं सम्पन्न करें और इनकी सत्यता परखें, यदि हम कहां तो मैं नाभि से कमल दल विकसित कर दिखा सकता हूं।

जिध्यों के हां भूतने पर उन्होंने लेटे-लेटे ही पेट को गड़हा बना दिया, और हाथों से नाभि को पकड़ कर चौड़ा किया, जिध्यों ने धीरे-धीरे देखा कि नाभि में से एक कमल नाल निकली और लगभग तीन चार फीट तक ऊंचाई पर गई और ऊंचाई पर ही पूर्ण लाल रंग का ब्रह्म कमल विकसित हुआ।

सभी लोग आश्चर्य से देख रहे थे, स्वामी जी ने कहा मैं यदि चाहू तो अपने ही समान पुत्र निर्माण इस कमल दल पर कर सकता हूं, पर फिर कुछ सोच कर उन्होंने धीरे धीरे ब्रह्म कमल और कमल नाल को नाभि के मन्दर बनाया और हाथों से पेट को समतल कर दिया, और वापिस वैसी ही अवस्था में जिध्यों के सामने बैठ गये जो पहले की अवस्था थी।

विज्ञान इसी दिशा की ओर अग्रसर है, और परख नली शिशु के बाद विज्ञान इस ओर प्रयत्नशील है, कि मानव की कोख से ही पुत्र उत्पन्न किया जाय, और यदि वे पुराणों का आचार लें तो अवश्य ही इसमें सफलता पा सकते हैं।

कोई भी साधक कोई भी योगी या कोई भी साधनाशील भवती है उस साधना में प्रवेश नहीं पा सकता, जबकि उन साधक का स्वप्न, उन साधक का लक्ष्य एक ही है कि वे सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकें। वहाँ प्रवेश पाने के बाद उनमें अपने आप में ऐसी समझा प्रसन्नता होती है कि वह सचरीर जहाँ भी जागा जा रहा हो सकता है, सत्तार में नहीं पर भी निचरण कर सकता है, सचरीर वाचिक गुरुत्व में आ सकता है, और अब चाहे, त देह या सूक्ष्म सचरीर से इस साधना में आ सकता है।

इस साधना में प्रवेश पाने के लिए दस महाविद्याओं में से दो महाविद्याओं को पूर्णतया सिद्ध करना पड़ता है, यह जरूरी है कि वह अपने गुरु से ब्रह्मज्ञान की शिक्षा के माध्यम से ही सत्य ब्रह्म के लक्षण की पहचान कर पूर्ण समझना प्राप्त करे और समस्त जगत् का निदान कर, सद्भाव स्थापन करे।

इसके बाद भी वह आवश्यक है कि ऐसा साधक इन साधनाओं को सम्पन्न करने के बाद तभी सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकता है जब गुरु अपने साथ उसे सिद्धाश्रम ले जाय, और यह तभी संभव है जब उसका गुरु इसकी उच्च कोटि की साधनाओं से मुक्त हो, उसका स्वयं का सहचार जागृत हो, और वह सिद्धाश्रम में प्रवेश पा जाय, जो सिद्धाश्रम में प्रवेश पाया हुआ, गुरु ही अपने आप सिद्धाश्रम में प्रवेश दिया सकता है, और यही उसके नियम है, इसकी मर्यादा है और इसके हेतु है।

आज भी पूरे मातृवर्ष में मात्र तनोस ऐसे योगी और गुरुत्व विद्यमान हैं जो सिद्धाश्रम में प्रवेश पा चुके हैं, सचरीर नहीं आ चुके हैं उनके लिए वहाँ जाना और ध्याना प्रत्यक्ष सामाजिक और सत्ता है, उन्होंने साधनाओं की उत्पत्ति प्राप्त की है और ऐसे ही वे सिद्धाश्रम के साधक गुरु अपने विषयों का अपने स्वरूप में मार्गदर्शन

कर सकते हैं, उन्हें साधना शिथिलों में धामनित कर सकते हैं, साधना की प्रारोक्तियाँ समझा सकते हैं, महाविद्याओं को सिद्ध करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं, महा दीक्षा देकर जगत् के जागरण की क्रिया समझा सकते हैं, और उनका सहचार जागृत कर सिद्धाश्रम में प्रवेश दिया सकते हैं।

सिद्धाश्रम के संस्थापक संजालक महान योगी राज स्वामी महिपदासजी ने पिछले हजारों वर्षों में मात्र तीन ही सिद्ध बनाये हैं, क्योंकि अमला सिद्ध करने की कठिनाई अपने आप में अत्यन्त बड़ी और दुर्लभ है, हमारे गुरुदेव उनके प्रधान सिद्ध हैं, इस ज्ञात का हमें गौरव है, हमारी पीढ़ी का मोक्षानन्द है कि इनके उच्चकोटि के योगी सामान्य रूप रूपा में गुरुत्व रूप में हमारे बीच विद्यमान हैं, जिनके पास प्रवृत्तता सरल है, जिससे महत्वपूर्ण ज्ञान और साधनाएँ सीखना सम्भव है, और जिसकी रूपा से हम सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकते हैं उनका संरक्षण उनका साहचर्य और उनका प्राणीवाद हमारे लिए प्रेरणा कीत बन सकता है, यह हमारा ही नहीं विश्व का सीमावर्ष है कि ऐसे व्यक्तित्व हमारे बीच विद्यमान हैं।

इस लेख के माध्यम से मैं सम्पूर्ण साधकों और गुरु साधकों का आह्वान करता हूँ कि वे इस ध्येय प्रपञ्चमयी दुनियाँ से परे हट कर मन मूक अती जिम्हनी से अपने आपको विरत कर महत्वपूर्ण साधनाओं में भाग ले, पूर्णता प्राप्त करें और अपने जीवन काल में ही सद्देह सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकें, जिससे कि उसका सातत्य वे सकल, सत्की धरती उसका सौन्दर्य उसकी प्रियता और उसकी सदायता को अनुभव कर सकें, अपने पूर्वजों और कर्मियों के उद्धार कर उनके घरानों में बैठ बहा की व्याख्या समझ सकें, ब्रह्मदेव के गुरुत्वों को साक्षात् करें, और नीति की पूर्णता दे सकें।



सिद्धसूत

स्वर्ण प्रक्रिया का दुर्लभ ज्ञान

आज भले ही स्वर्ण अत्यन्त बहुमूल्य चीज दुर्लभ धातु बन गई हो पर इसके प्रति मोह और आकर्षण पूरे विश्व में प्रारम्भ से ही रहा है, हमारे पूर्वजों और विशेष कर रसायनियों ने प्रारम्भ से ही इस बात के प्रयत्न करने प्रारम्भ कर दिये थे, कि वे जोड़े, चाँवे या पारे जैसी साधारण धातुओं से स्वर्ण जैसी बहुमूल्य धातु बनाई जाय इस साधारण धातुओं को परिवर्तित कर स्वर्ण में बदलने के लिए उन्होंने गम्भीर प्रयास किये और उसमें सफल भी हुए, ऐसे रसायनियों में धनवन्तरी अल्बुक, नागार्जुन आदि रसायनिक सूक्त, क्रिस्टल रहे हैं और उन्होंने इन प्रकार के कार्य में सफलता पा कर यह प्रमाणित कर दिया कि मानवीय जी मूर्खता का दुष्टों को स्वर्ण में परिवर्तित किया जा सकता है।

नागार्जुन का प्रसिद्ध ग्रन्थ "स्वर्ण तन्त्रम्" कोमिया गांधी सचिव रसायनियों के लिए प्रारम्भ होता के समान रही है, उसमें चाँवे, लोहे या पारे से स्वर्ण बनाने की प्रक्रिया-प्रतीति बताई गई है, जो इसी १५ विधियों की प्रामाणिकता के साथ स्पष्ट किया है, जिससे हमने सफलता प्राप्त की थी।

नागार्जुन का तारा जीवन इस प्रकार के अध्ययन चिन्तन और परीक्षण में ही व्यतीत हुआ, यह मृत्युन्त जगद्व्य और मम्मन्तजीव पिता या पुत्र या परमत्मा उतने इस प्रक्रिया-प्रतीति के लिए प्रयत्न करने वाले

प्रयोगों का अध्ययन किया, मुहुर जंगलों और हिमालय में रहने वाले साधुओं से सम्पर्क किया और विभिन्न परीक्षण प्रयोग करता रहा, एक प्रकार से देखा जाय तो उसने अपनी सारी पूँजी इस प्रकार के प्रयोग में लगा दी, यहाँ तक कि अपना घर बेच दिया, पत्नी से मतभेद होने की वजह से अलग रहने लगा, और इस परीक्षाओं और निरन्तर खर्च होने की वजह से वह दरिद्रावस्था में आ गया, फिर भी अपने हिम्मत नहीं हारी, उसका यह पक्का विश्वास था कि मैं प्रयत्न ही इस कार्य में सफलता प्राप्त करूँगा और अपने जीवन काल में ही एक न एक दिन सामान्य धातुओं को स्वर्ण में परिवर्तित करके दिखा दूँगा।

नागार्जुन के जीवन का अध्ययन करते पर प्रतीत चलता है कि जब वृद्धावस्था तक भी उसे मनोवैयर्थि सफलता नहीं मिली तो एक दिन अत्यन्त भय और दुखी हृदय से अपने अनुभवों और निष्कर्षों के ग्रन्थ को लेकर नदी किनारे जा पहुँचे, भय उनके लिए प्राप्ति प्राप्त की कमी के फलस्वरूप और परीक्षण करना संभव नहीं था, इसलिए वे हताश और निराश हो कर उस दुस्तक का एक-एक पन्ना नदी में फेंकते रहे।

उन्से कुछ ही दूरी पर धीरे एक वैश्या स्नान कर रही थी, उसने उन बहते हुए हस्त विधित पन्नों को अपनी ओर प्राप्ति देखा और एक पाद पाने की पत्रा, उसे वे परीक्षण अत्यन्त मुख्यवाली और अनुभवगम्य प्रतीत

हूए, यह स्नान कर नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ी तो देखा कि एक तेजस्वी, पर बूढ़ जर्जर व्यक्ति अपनी हस्त लिखित पुस्तक के एक एक पन्ने को पानी में फेंक रहा है, गणिका ने उसका हाथ पकड़ कर रोना करने के लिए उसे रोका तो उसने निराशा भरे स्वर में कहा-देने इन परीक्षाओं में अपने विद्या की और स्वयं की सारी सम्पत्ति त्याग कर दी, अपना सारा जीवन दाव पर लगा दिया, पर मृत्यु में मुझे निराशा के मजावा और क्या मिला ?

गणिका ने कहा-मुझे आप में प्रतिभा और तेजस्विता

नजर आ रही है आप एक बार फिर मेरे घर चल कर परीक्षण करें, इसके लिए मैं आपको जितना माप चाहे धन प्रदान करूंगी।

ये मन से मागाजुन गणिका के साथ उसके घर की और चल पड़े और वहाँ जा कर उसने पुनः "सिद्धयुत प्रक्रिया" का प्रयोग किया, संयोगवश कड़ाई में बह रखा-यन गर्म हो रहा था कि किसी कार्य से मागाजुन उठे, ऊपर लोहे की कील दृष्टिगोचर न होने को बजह से उनके निर में यह कील लग गई और रक्त की कुछ बून्दें

कल्पवृक्ष भारत में नहीं, राजस्थान में है

क्या वास्तव में ही भारतवर्ष में कल्पवृक्ष है, या यह केवल कल्पना ही है, कथाओं और पुराणों में पढ़ने को मिलता है कि कल्पवृक्ष अपने आप में देववृक्ष है जिसके नीचे बैठ कर जो भी इच्छा की जाय, वह पूरी होती है, तो क्या ऐसा कल्पवृक्ष भारतवर्ष में कहीं पर है।

वैज्ञानिकों ने इस संबंध में शोध किया है, और उन्होंने पाया है कि कल्पवृक्ष की जाति, का ही एक नर और मादा पेड़ पूरे भारतवर्ष में केवल एक ही स्थान पर हैं जो राजस्थान में आया हुआ है।

जयपुर से जोधपुर आते समय बस के रास्ते से मार्ग में मांगलियावास एक गांव आता है, इस गांव से केवल पांच सौ गज की दूरी पर वह नर और मादा का अद्वितीय कल्पवृक्ष अपनी छान से खड़ा हुआ है, भारत सरकार के अधिकारियों ने भी इसको जाना है और इससे संबंधित पत्थर पर लिखा हुआ है, वनस्पति विशेषज्ञों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि वास्तव में ही यह अपने आप में एक आश्चर्यजनक पेड़ है, जिसका ज्ञात पूरे भारतवर्ष में अन्यत्र कहीं पर भी नहीं है।

मैंने इस कल्पवृक्ष को कई बार देखा है, मैं यह तो नहीं कह सकता कि इसके नीचे बैठ कर जो भी इच्छा की जाय, वह इच्छा तुरन्त पूरी हो जाती है, परन्तु मैंने कल्पवृक्ष के नीचे बैठ कर हर बार कोई न कोई इच्छा व्यक्त की है, और साल छः महीने में वह इच्छा अवश्य पूरी हुई है, इससे मेरा विश्वास और भी अधिक बढ़ गया है।

वास्तव में ही यह एक प्राकृतिक प्राचीन वृक्ष है, जिनके तने को देखने से ही पता चल जाता है कि यह असाधारण वृक्ष है, बारह साल में एक बार इस पर फल लगता है, जिसे कल्पवृक्ष फल कहते हैं और सोभाग्यशाली व्यक्ति को ही ऐसा फल देखने को या प्राप्त करने का सीमाव्य मिलता है, जिस घर में भी यह कल्पवृक्ष फल होता है, उसके घर में सभी रूढ़ियों से निरन्तर उन्नति होती रहती है।

कड़ाई में गिर गई।

और निम्ने ही अद्भुत नमस्कार हुआ, जो कड़ाई में गिरने का दुःख उस समाधान के साथ खत्म रहा जो वह कुछ समय में परिवर्तित हो गया, नागाकुन की प्रसन्नता का कोई अंशाना न रहा और वे पूरे विश्व में सर्व-

श्रेष्ठ सम्माननीय स्वागत के रूप में जाने जाने लगे, और उनका अंतिम समय अत्यन्त ही सम्पन्न अवस्था में सम्माननीय रूप से व्यतीत हुआ।

सिद्धसूत

आगे चल कर यह विज्ञान अत्यधिक विस्तृत हुआ

मैंने अपने विगत जीवन से साक्षात्कार किया

जब तक अपने पूर्व जीवन को देख नहीं लेते तब तक वर्तमान जीवन को भली प्रकार से समझा भी नहीं जाता, कई बार हम भगवान की लीला को विचित्र मान बैठते हैं, शुद्ध सदाचारी ध्यान पूजा पाठ करने वाला व्यक्ति दरिद्र बना रहता है, और मांस मदिरा का सेवन करने वाला तथा पर स्त्री गामी लाखों में जाता है, जब शुद्ध सात्विक ज्ञान स्त्री के पति की मृत्यु हो जाती है, जब बाप के सामने बेटे की अर्थी निकलती है, तो मन विसृष्टता से भर जाता है, भगवान के यहां यह किंता न्याय है, जब कि इसने अपने जीवन में चोटी को भी सजाया नहीं है फिर इसे इसना दारुण दुःख क्यों ?

इसका उत्तर वर्तमान जीवन के कार्यकलापों से नहीं मिल सकता, इसके लिए व्यक्ति का विगत जीवन देखना आवश्यक होता है जो इस जीवन से पहले का जीवन था, उस जीवन में कार्यों के अच्छे और बुरे फलों का परिणाम भी इस जीवन में भोगना पड़ता है और जब व्यक्ति का विगत जीवन देख लिया जाता है तो भगवान की लीला और उसका न्याय पूरी तरह से समझ में आ जाता है।

इसके लिए तन्त्र योग में एक महत्वपूर्ण साधना बतलाई गई है, जिसे "पूर्व जन्म साधना" कही गई है, यह २१ दिन की साधना है, और इसमें निम्न एक से एक माना मन्त्र जप "पूर्व जन्म दय यन्त्र" के सामने कमल गद्दे को माला से सम्पर्क किया जाता है, इसके अलावा अन्य सभी वे ही विधि विधान हैं, जो साधना के लिए आवश्यक होते हैं, यह साधना सिद्ध होते ही व्यक्ति को जहां अपना विगत जीवन साफ-साफ दिखाई दे जाता है वहीं उसे किसी भी सामने वाले व्यक्ति पुरुष या स्त्री का विगत जीवन भी देखने को मिल जाता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं परम परम विगत जीवनाय श्रमुकं मे दय इत्ये तद् ।

वास्तव में ही मैंने इस साधना को सिद्ध किया है और मैं आश्चर्यचकित रह गया हूँ जब मैंने अपना विगत जीवन और दूसरों का विगत जीवन देखा है, तो मुझे विश्वास होने लगा है कि भगवान के घर में तु जो अन्धरे हैं और न अन्याय है, संतुष्ट ज्ञाना कर्म करता है, वैसा ही फल उसे भोगने के लिए वाप्य होना पड़ता है।

धीरे धीरे से स्वर्ण बनाना सिद्धमूल के माध्यम से अत्यन्त सान्त्वना प्रक्रिया बन गई। आज से बीस या तीस तीस वर्षों में सिद्धमूल बनाना अधिकतर सन्नासियों की भियामारों और रसायनियों को ज्ञात था, कहते हैं कि वाराणसी में भगवान विश्वनाथ महादेव के मन्दिर के दोनों प्रमुख द्वारों को कि लोहे के पाउडर से लोहे के थे, एक साधु ने सिद्धमूल के माध्यम से शाकासीन पाशों के अनेक लोहे के गोबर के मगने स्वर्ण में परिवर्तित करके दिखा दिये थे, एक क्षण में ही लोहे की ठोस सोने में परिवर्तित होते हुए देख कर वे आश्चर्यचकित रह गये, बाद में हमारी सफलता की वजह से वे द्वार यहाँ से विदेश चले गये पर इस घटना का प्रामाणिक विवरण ग्रन्थ श्री विश्वनाथ मन्दिर के दीवारों में लगे हुए सगमरमर पत्थर पर अंकित मिला लेख से स्पष्ट होता है।

कुछ विशेष प्रक्रिया से सिद्धमूल बनाया जाता है, जो कि धूरे रंग के पाउडर की तरह होता है, पर यह अत्यन्त सूक्ष्म और दुर्लभ पदार्थ माना जाता है, लोहे की पाती में भिगो कर यदि उस पर चुटकी भर सिद्धमूल

का पाउडर छाल दिया जाय तो एक विशेष प्रकार की रसायन प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है, धीरे धीरे लोहा तुरन्त स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है, यही प्रक्रिया ताँबे पर भी सम्पन्न हो जा सकती है,

अब विद्या सभी तक भी लोभ नहीं हुई है परन्तु बहुत ही कम उच्चकोटि के योगियों या सन्नासियों को ही इस विधि का ज्ञान है, जिसने स्वयं सिद्धमूल प्रक्रिया का दुर्लभ ज्ञान मेधाव की प्रतिष्ठित यादगती गद्दी के उस पार रहने वाले प्रसिद्ध योगी सम्राटगुरु जी महाराज के सीखी थी और अपने हाथों से कई बार सिद्धमूल बनाकर उसका परीक्षण साथे पर धीरे लोहे पर करके यह अनुभव किया था कि वह विद्या अपने आप में आश्चर्यजनक परिणाम देने वाली है, इसके माध्यम से कुछ ही मिनटों में रसायनिक प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है और लोहा तुरन्त ठोस शुद्ध सोने टन्त्र खरे सोने में परिवर्तित हो जाता है।

महात्मा गांधी के समय में भी पंजाब के प्रसिद्ध वैद्य हरी प्रताप जी ने बिड़ला भवन में बिड़ला जी, भारतीय

खामोश ! यहाँ त्रिजटा अघोरी साधना कर रहा है

देहरादून से सहज धारा और सहज धारा से १५८ मील दूर भैरव पहाड़ी जिसकी चढ़ाई अत्यन्त कठिन और त्रिजटा मानी जाती है, सारा पहाड़ी क्षेत्र जंगली हिसक पशुओं से भरा पड़ा है और पहाड़ी की सबसे ऊँची चोटी पर स्थित है महाकाल रौद्र भैरव का मन्दिर, जो अपने आप में संप्राण, सन्ततन है और यहीं पर साधना कर रहे हैं संसार के तांत्रिक शिरोमणी त्रिजटा अघोरी।

त्रिजटा अघोरी का नाम लेते ही शरीर में कंपकंपी सी लूट जाती है, लम्बा चौड़ा डील डील भारी भरकम शरीर इस पर भी फुर्ती इतनी कि एक ही साँस में ऊबड़ खावड़ पहाड़ी पर दौड़ते हुए चढ़ जाना, शरीर में धल इतना कि दो मजबूत जवान साँडों की शीर्षा हाथों की मुठियों से पकड़ कर परस्पर भिड़ा देना, कहावर जंगली बकरे को एक ही हाथ में पकड़ सेफड़ों फीट ऊपर उछाल देना और बोली ऐनी कि जैसे दो भयानक वादल आपस में टकरा कर गर्जना कर रहे हों।

पर तन्त्र के क्षेत्र में यह व्यक्तित्व अपने आप में अपराजेय है, कठिन से कठिन तांत्रिक साधनाएं सिद्ध कर रखी हैं, औषध साधनाओं से लगाकर श्मशान साधनाओं तक में अपने आप में अपराजेय और अत्रिजटा है वह सिद्धाश्रम का एक मात्र ऐसा सिद्ध योगी है जो केवल तन्त्र के बल

से शीत होती जा के तापीय हो जाती है। इससे शरीर के मांसपेशियों में तापमान में परिवर्तन होता है। विद्या प्रा. राज भी विद्या मन्दिर में जिस संस्थापक अध्यक्षी से सम्मान का त्रयमानुष भर्ती हो बांटा जाता है, यह संस्थापक उसी स्वर्ण से निर्मित है, जो गांधी जी के सामने बनाया गया था, गांधी जी ने वंशराज की धूरी धूरी प्रशंसा करते हुए कहा था कि हमें अपनी आसन्न विद्याओं पर गर्व होना चाहिए, जब तारा विश्व पदम धीरे सफ़ाई के प्रारम्भिक अवस्था में था, तब हम सम्पत्ति के इस स्तर तक पहुँच गये थे, जहाँ कि तांबे या तोहरे को स्वर्ण में परिवर्तित करने की किंदा सोच ली थी, तमक ली थी, और प्रयोग की थी।

बाद में महामदावाद के प्रसिद्ध वैद्य हीरजी भाई ने १९२२ में प्रसिद्ध ताम्रिकों और मंत्रियों के सामने सिद्ध-मृत बना कर उसके द्वारा तांबे को स्वर्ण में परिवर्तित कर के दिखा दिया। इसी प्रकार कुछ वर्षों पूर्व स्वामी दिगुजानन्द जी ने तारागोत्री में नवमूण्टी जायन में कई उपस्थित शिष्यों के सामने सिद्धमृत को पूर्ण में किया था।

वर्णन किया था, और अपने हाथों से सिद्धमृत बनाकर उनके नाभ्यन में छोड़े की, तथा तांबे को स्वर्ण में परिवर्तित कर के दिखा दिया था।

सन् १९१५ में जालन्धर के प्रसिद्ध वैद्य हितारामजी ने प्रसिद्ध महामूण्टी २० से अधिक उपस्थित सदस्यों के सामने सिद्धमृत पर विस्तृत प्रवचन के बाद उनके मनुष्यों पर वहीं पर छोड़े-छोड़े छोड़े छोड़े में ही सिद्धमृत बना कर उनके नाभ्यन में छोड़े की स्वर्ण में परिवर्तित करके दिखा दिया था।

सन् १९२६ में कलकत्ता में भी ने ज्यादा गण्य मान्य उपस्थित व्यक्तियों के सामने योगीराज हरीनन्द जी ने तानागार में सिद्धमृत के माध्यम से स्वर्ण प्रक्रिया का विस्तृत परिचय दिया था और तांबे की प्लेट को तुरन्त स्वर्ण में परिवर्तित कर यह सिद्ध कर दिया कि धातु के युग में भी यह विद्या पूर्णता के साथ जीवित है, और इसके नाभ्यन में सामान्य जलु की स्वर्ण जैसी बहुमूल्य धातु में परिवर्तित किया जा सकता है।

पर सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सका है, काया कल्प करना, वृद्धावस्था को मिटा कर पूर्ण जीवनमय बना देना, आकाश में विचरण करना और अपने प्राणों को शरीर से निकाल कर दूसरे मुर्दा शरीर में प्राण संघर्षित कर परकामा प्रवेश सिद्ध कर देना इस तांत्रिक के लिए बाँधे हाथ का खेल है, इतना होने पर भी तन्त्र इतना कि वालक : सा सरल स्वभाव और झलूती मुस्कराहट है।

पूज्य गुरुदेव के शिष्य होने के बावजूद भी उन्होंने तन्त्र के क्षेत्र में कई कीर्तिमान कायम किये हैं, और एक बार जब साधना में बैठ जाता है तो बिना हिले डुले बिना कुछ खाये पीये, बिना आसन से उठे दोस पच्चीस दिन तक एक ही आसन पर जने रह कर साधना सिद्ध करके ही अपने आसन से उठते हैं, भूत प्रेत तो जैसे इसके सेवक-सेविकाएँ हैं, यह उनकी बुद्धकता है, श्रुतता है, फटकारता है और कभी कभी क्रोधावेश में उन पर सात प्रहार भी कर लेता है।

कोई भी गुरु भाई त्रिजटा के पास जा सकता है, उसके पास बैठ सकता है, यदि मन में बल और साहस है तो उनसे सीख सकता है, कई भाषकों ने वहाँ से वापिस आ कर बताया है कि यह अदभुत व्यक्तित्व है, वादाम की तरह जो ऊपर से कठोर है, पर अन्दर से अत्यधिक नरम, मधुर और आनन्दयुक्त है।

पिछले दिनों गरी मसूरी जाया से लौटते समय, देहरादून के पास सहज धारा स्थित योगी बालानन्द जी से भेंट हुई थी जिन्हें सिद्धसूत प्रक्रिया का महत्वपूर्ण ज्ञान है और उन्होंने मेरे समुद्रोक्त पर मेरे कुछ शिष्यों के सामने ही उन्होंने अपने एक भोली से एक शोशी में भरे हुए, सिद्धसूत को बाहर निकाल कर दिखिया और वहीं पर एक लोहे का टुकड़ा संयोज कर उसे, पानी में सिंगो कर ज्यों ही उस पर बहुत मामूली ता. सिद्धसूत पाउडर डाला तो प्राश्चर्यजनक प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, पहले काली लपट और फिर नीली लपट तो उठी और दूसरे ही क्षण वह तपि या हुकड़ा दोनो में परिवर्तित हो गया था, बाद में उन स्वामी जी के किसी सिष्य को फोटोस्वरूप प्रदान कर दिया था।

यद्यपि सिद्धसूत बनाना कठिन कार्य है, पर इसे प्रत्यक्ष नहीं कहा जा सकता, यारे की शिव जीय कहा जाता है, जो कि अपने आप में प्रत्यक्ष महत्वपूर्ण पदार्थ है और यह पारा या पारद बाजार में मासानी से उपलब्ध हो जाता है, इसके म्यारह संस्कार क्रमशः करने पर पारद पूर्ण रूप से वृक्षभित्त बन जाता है यद्यपि शत्रुवेद के कालेजी में पारद के बारे में सम्मान और सिखाया जाता है, और यह भी बताया जाता है कि इसके क्रमशः १२ संस्कार सम्पन्न किये जाते हैं, परन्तु यह सारा ज्ञान केवल ध्योरिठिकल होता है, सिखाने वालों को स्वयं इसका प्रेक्टीकल ज्ञान नहीं होता, यदि उन्हें कहा जाय कि वे पारद या पारे के क्रमशः १२ संस्कार कर के दिखा दे तो कोई बिरला ही व्यक्ति निकलेगा जो इन संस्कारों को प्रामाणिकता के साथ सम्पन्न कर पाता हो, खैर,

जब पारद के म्यारह संस्कार सम्पन्न हो जाते हैं, तो उस पारद को उससे चीगुने पानी में धीमी धाँच से पकाया जाता है, पकाते-पकाते जब लगभग पानी उब जाता है, तब उसमें कुछ बकरे के रक्त की बूंदें डालते ही वह तस्कारित पारा भूरे पाउडर के रूप में परिवर्तित हो जाता है, जिसे काँच की शोशी में भर दिया जाता है,

इसी को "सिद्धसूत" कहते हैं।

एक कीलो बोहे या काँच के टुकड़े पर नाम आधा तोला सिद्धसूत डालते ही वह एक कीलो का टुकड़ा तुरन्त दोनो मोने में परिवर्तित हो जाता है, पाउक स्वयं प्रत्यक्ष ज्ञान करते हैं कि मात्र ५० रुपये से निर्मित सिद्धसूत गिरा रुपये के खरीदे गये ताँबे के हुकड़े को फस्ती, रुपये की लागत लगा कर लाखों रुपये की मूल्यवान वायु स्वर्ण में परिवर्तित किया जा सकता है।

आज भी हमके जानने वाले कई योगियों और सत्या-तिथी से मेरा परिचय रहा है, मसूरी के लाल टीला स्थान पर रहने वाले योगी हरीतानन्द जी, जम्मू के पास देवश पठ के स्वामी विद्यानन्द जी, नैनीताल से पूर्व काठगोदाम से १५ कीलो मीटर दूर स्थित हान प्राश्चर्य के संस्थापक स्वामी चैतन्यानन्द जी मनाली के प्रागे व्यास गुफा के पास रहने वाली तांत्रिका हीरा, कामाक्षा मन्दिर के पास रहने वाले योगी अब्दुलानन्द जी, नेपाल के दक्षिण काली के मन्दिर के पास साधना करने वाले योगी महेशानन्द जी, और धावू में गुरु शिखर के पास रहने वाले तांत्रिक चैतन्य प्रादि इसके पूर्ण प्रामाणिक ज्ञानकार सिद्ध योगी हैं, उन्हें न तो किसी प्रकार का घमण्ड है और न झहंकार।

इसके अलावा कई गृहस्थ व्यक्ति भी सिद्धसूत प्रक्रिया के पूर्ण प्रामाणिक ज्ञानकार हैं, जिन्होंने समय-समय पर इसका महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सामने प्रामाणिकता के साथ ज्ञान को प्रस्तुत कर यह सिद्ध कर दिया है कि भारत की यह प्राचीन विद्या अपने आप में महान प्रदम्भत, प्राश्चर्यजनक और जीवित है।

प्रावश्यकता है पूर्ण समर्पण करने वाले सिष्यों की तामाजुन की तरह जीवन की दाव पर लगाने वाले क्षमता प्राप्त पुरुषों की, और साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करने वाले योग्य सिष्यों की, जो कि ऐसे ज्ञानकार गुरुओं के पास निरन्तर रह कर उनकी कृपा प्राप्त कर उनके यह विद्या सीखने का प्रयास करें और पूर्णता के साथ इसको प्रस्तुत करते हुए, अपने जीवन को ऐश्वर्यवान बना सकें। ★

इतिहास का एक गोपनीय पृष्ठ

इन्होंने सोना बनाया, और बहाया

“स्वर्ण विज्ञान” भारतीय का प्राचीनतम विज्ञान रहा है, करशेद में भी स्वर्ण बनाने की विद्या का ज्ञान निम्नता है, इसके साथ के कई ग्रन्थों में भी स्वर्ण बनाने की विधियाँ स्पष्ट हुई हैं परन्तु यह स्वर्ण बनाने की विद्या केवल भारतवर्ष में ही नहीं अस्तित्व में थी, भारतवर्ष के बाहर ईरान और अफ्रीका में भी ज्ञाते थी और इन विधियों से इन्होंने स्वर्ण बनाया भी।

विद्वत् विनों एक प्रख्यात गोपनीय पुस्तक प्राप्त हुई, जो तिब्बती भाषा में लिखी थी और जिसका अर्थ अफ्रीकी भट्टबाद होकर प्रकाशित हुआ है, इस पुस्तक में बताया गया है कि समस्त जोड़ियों तक एक राजा के बंगलों में इसी कला के द्वारा स्वर्ण बनाया और उसे पानी की तरह बहाया भी।

यह पुस्तक सर्वथा प्रासांगिक है और तिब्बत के प्राचीनतम मठ “लुहासा” में इसकी मूल प्रति सुरक्षित थी, कहा जाता है कि इस एक प्रति को प्राप्त करने के लिए ही चीनीजों ने तिब्बत पर आक्रमण किया, फलस्वरूप क्षतिग्रस्त लागा की वहाँ से भाग कर भारत में शरण लेती पड़ी, चीनी तब तक नहीं रुके जब तक वे लुहासा तक पहुँच नहीं गये।

लुहान मठ तिब्बत का प्राचीन, महत्वपूर्ण और दुर्लभ मन्त्रालय से संबंधित पुस्तकों का भंडार खजाना है, वहाँ की हजारों बौद्ध भिक्षु अपनी इस मठ की रक्षा

करते हुए महीन हो गये, परन्तु इसी बीच मठ के एक लाना आसक्ति वहाँ से उस “स्वर्ण विज्ञान” पुस्तक की मूल प्रति लेकर भाग गया, और जंगलों में जा छिपा।

चीनी सेना के परिधम और सैनिकों की घातुति के बाद ही लुहासा पर विजय प्राप्त कर सकी चीनी सैनिकों ने पूरे मठ की खान मारा परन्तु वह दुर्लभ पुस्तक उनके हाथ न लगी।

इसी बीच जानूरी ने सूचना दी कि मठ का ही एक बौद्ध भिक्षु आसक्ति इस पुस्तक को लेकर भाग गया है और जंगलों में जा छिपा है।

चीनी सैनिकों ने सोचा कि यह भाग कर इस घन-घोर जंगल में कहाँ तक जायेगा, जंगल तो हिरक पशुओं का पचिन्दुओं से भरा पड़ा है, चीनी शासकों ने सैनिकों को आदेश दिया कि लुहासा पर विजय करवा, उतना आवश्यक नहीं है जितना इस पुस्तक को प्राप्त करना; क्योंकि यह पूरे संसार में एक मात्र पुस्तक है जिसमें स्वर्ण बनाने की आसान और सरल विधि समझाई गयी है और जिसके बल पर तिब्बती शासकों ने पानी की तरह स्वर्ण बहाया है।

घात भी सही है, बौद्ध भिक्षुओं के द्वारा और जहाँ के शासित्व के पता चलता है कि वहाँ के शासकों ने चीनी सैनी तक एक ही विधि से स्वर्ण बनाते रहे और इन से मनोरंजन करते रहे।

वास्तुकी बनायी में निव्वत के रात्रि हिमिक में एक बहुत बड़ा बगीचा बनाने पर के बाहर लगे राजा का जिसमें २२६ सोने के पौधे, छोटे कोठियों से भरे हुए थे क्षीर के चारों ओर सोने की दीवार बनाई हुई थी, और बगीचे में बैठने के लिए राजा व रानी का सिंहासन भी ठीक सोने का था जिस पर बैठ कर वे रात्रि में भी निव्वत-मिताले हुए सोने स्वर्ण पथे शरीरों का आनन्द लिया करते थे।

इसके बाद उसकी पोछी में वह स्वर्ण निर्माण विद्या प्रकलित हुई और इनके मन्त्र 'एलाक' ने उस बगीचे में ही अपने शाश्वत पौधे का ठोस सोने की बनवाई और उसे ऊपर से पूरी तरह से ढीरो से जड़ दी, फिर अपने दादा की आज्ञा मन्त्र में से निकाल कर क्षीर सोने की बनी हुई कप में रख दी यह मन्त्र १८ फीट लम्बी १२ फीट चौड़ी और १ फीट गहरी था।

उसी स्वर्ण विज्ञान निर्माण प्रक्रिया की बदौलत उसके एक वंशज ने बताया कि उसके पुरे महल और उसकी आज्ञा प्राप्त की प्रकृति की सोने से भरे की आज्ञा प्रकृति स्वर्ण मन्त्र की दोष दौरे से पुरे किले की दीवार और उसके चारों ओर की जमीन की बनाई जिता पर राजा हुआ करता था।

यही वही अविशुद्ध इसके बाद इसके ही वंशज भारतीय ने यह आशा निकाल दी कि तिर्य प्रातः कात स्वर्ण कर वह किले से जब अपने सभा भवन में जावे तो मार्ग में सोने के सिक्के बिखर दिये जाय और किले के निचले पर उसके पाँच पड़े थे जिनके गरीबों में बाँट दिये जाय, और यह निदेश उसने जीवन भर बनाये रखा।

उसके ही एक वंशज लाली ने उसी स्वर्ण विज्ञान के द्वारा स्वर्ण बनाने की कला सीखी और अपने बैठने के लिए ताँबे पोछी की एक कच्ची बनायी जो सोने सोने की थी और पोछी के ऊपर सोने की ही मृदा डाली हुई थी उसके दीरों में भी सोने की ही मृदा लगी हुई थी

सोना यों भी बनाया जाता है

कुण्डलारामेक गृहीत्वा तस्य मुखे शिववीर्यं पूरयित्वा सर्पस्त्रमुखं मुदं च वदन्वा नूतन मृण्मये स्थालीमध्ये संस्थाप्य स्थालीमुखं मृदादिना संलिप्य विजनेस्थाने प्रातरारम्भ्य पुनर्प्रायावत् दहिनां ज्वालां दद्यात् ततः शुभक्षणे स्थालीमुखं उद्धाद्य सर्पभस्म विहाय शिववीर्यं गृहणीयात् ततस्तोत्रकर्मितं ताम्र रक्ति-मात्रं नत् शिववीर्यं दद्यात् तत्क्षणादेव ततोन्न सुवर्णीभूतं।

अर्थात् एक मरा हुआ काया सोने से कर उसके मुँह में शरा भर दिया जाय और फिर मुँह की मिट्टी के पात्र में बन्द कर दिया जाय उस मिट्टी के पात्र की चौकीत मन्त्र शक्ति से कर जला दिया जाय और बाद में उस मिट्टी के पात्र को फोड़ कर उसमें से वह पारा निकाल ले। (सर्प की शक्ति को खूने से)

इसके बाद पारे के अलावर ताँबा मलाकर उसमें मिला दिया जाय तो वह क्षीर और पारा मिश्र कर मुख्य ही स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है, यह प्रयोग भी पूरी तरह से अनुभूत है।

इस सुनहरी बगंधी पर बैठ कर के ही राजा निव्वत हुआ खोरी के लिए निव्वतता।

इसी वंशजों में यरविन तो स्वर्ण बनाने की कला में अत्यन्त अतिष्ठ हुआ, उसका यह गौक था कि वह तिर्य इस पुस्तक में जो हुई विधि से स्वर्ण बनाता और पूर्ण ऐश्वर्य जीवन व्यतीत करता, एक बार अपनी प्रेमिका को उसने सोने के पत्रों तारों से बनी हुई पीशाक उसके शयन दिन पर ढीरों से जड़ कर भेंट की थी जिसका मूल्य उस जमाने में ही लाखों में आँका जाता था।

वास्तव में ही सोलह पीढ़ियों तक इस पुस्तक की बदौलत यहाँ के आसक सोना बनाते रहे और पानी की

उस वृत्तों से, इस पुस्तक पर चीन्हा की प्राप्ति के ही पत्र और वृत्तों इसी पुस्तक को दत्त-केत प्रकाश-हयिमान के लिए राजनैतिक शब्दों आने शुरू किये, जब उसमें सफलता नहीं मिली तो आक्रमण कर दिया पर आक्रमण के बाद भी जब वह पुस्तक उनके हाथ नहीं गयी तो वहाँ के प्रांतों ने मुक्तता कर पूरे मैनिफेस्टो को जंगलों में बिखर जाने के लिए कहा और किसी भी प्रकार जंगल वीड भिक्षु को पकड़ कर उसके पास से वह प्रति प्रति की आना दी।

तब तक बहुत देर हो चुकी थी, और वह वीड निम्न रोहताग दरें तक आ पहुँचा था पर इस बीच उसका हाथ बेहाल हो गया था भूख से उठनी अंतर्धिया बाहर माने की थी, जहाँ जंगल में घसीर कट कट गया था वहाँ उसकी वहाँ एक भारतीय स्त्रियाँ से मिल गई निम्न जंगल में घसीर में लिटाया, जंगल में लिटाया और घसीर में लिटाया प्रादि विविध परन्तु वह वीड भिक्षु, बार-बार-बार-बार ने ही मर गया।

इसके बाद मन्त्राली को उसके पास से एक प्राचीन पुस्तक प्राप्त हुई, पर उसे उस पुस्तक का महत्व मात्र नहीं था, भवतः उसने उस वीड भिक्षु का दाह संस्कार सम्पन्न किया और उस पुस्तक को पढ़ने की कोशिश की।

परन्तु वह सन्वासी कोई उच्च कोटि का स्त्रियाँ नहीं था और न उसे इस पुस्तक का महत्व और मुख्य ही बात था उसने एक समझदारी का कार्य किया कि वह उसे लेकर रोहताग दरें से होकर मन्त्राली की और पहुँच गया और वहाँ पर उसने उस पुराने पुस्तक की फोटो स्टेट सारी करवा दी।

इसी बीच एक अंग्रेजी पुरातत्व विज्ञानियों अन्वेषक उस फोटो स्टेट कापी की दुर्भट पर एक फटा हुआ मन्त्र का टुकड़ा देखने को मिला जो कि किसी प्राचीन पुस्तक की ही फोटो स्टेट कापी का अंग था, उसने उस पन्ने को पढ़ कर ज्ञान दिया कि यह कोई अत्यन्त दुर्लभ

स्वर्ण प्रयोग पुस्तक में प्रकाशित दुर्लभ प्रयोग जिसके द्वारा तिब्बती शासकों ने स्वर्ण बनाया।

तीन भाग तांबा, सात भाग कांसा, दो भाग शुद्ध लोहा व पांच भाग पीतल ले कर इन वास्तुओं को परस्पर मिलाकर एक पात्र का (वाहे वह कटोरे के आकार का हो या थाली के आकार का हो) निर्माण करें।

इस पात्र को "स्वर्ण पात्र" कहते हैं और यह वर्षों तक स्वर्ण बनाने के काम आता है, जब यह पात्र बन जाय तो इसमें तीन भाग हरताल, दो भाग मेनसिल तथा एक भाग हिगुल डाल कर परस्पर मिलावे जब सब एक रस हो जावे तो इसमें एक भाग शुद्ध पारा मिलावे और ग्वारपाठे (इस प्रकार पाठा भी कहते हैं) के रस में चौबीस घण्टे तक बराबर घोटता रहे, घोटने के बाद इस पात्र का पानी से भर दे और नीचे कीमी आंच लगा दे, लगभग एक घण्टे में पूरा पानी उड़ जाता है और पात्र में स्वर्ण का ठोस पिण्ड बचा हुआ रह जाता है, एक बार में एक किलो सोना बनाया जा सकता है।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और संसार का सबसे आसान सरल एवं सस्ता प्रयोग है, इस की विशेषता यह है कि इसमें गलती होने की संभावना नहीं रहती और यदि पात्र बड़ा हो तो एक बार में पांच किलो, दस किलो या चालीस किलो सोना बनाया जा सकता है।

परीक्षण से यह भी स्पष्ट हुआ है कि यदि इसमें थोड़ी बहुत कमी घोटने में या गर्म करने में आता तब भी सफलता ही हाथ आती है, इसीलिए इस विधि की महत्वपूर्ण माना है।

और महत्वपूर्ण पुस्तक है जिसमें स्वर्ण प्रक्रिया का क्रियेय ज्ञान है, उसने उस दुकानदार से इस संबंध में पूछा तो उसने बताया कि सायब बुद्ध ही एक सन्ध्यासी ने एक प्राचीन युगमें यही फोटो नेट कापी सम्पन्न करवाई है, तब तब यह सन्ध्यासी निम्नलिखित कहता था।

बोब-ग्रीन करता हुआ वह अंग्रेज पुरातत्व विद्वान् विप्लवा का पट्टा धारण कर सन्ध्यासी को कुछ निकालता था उसने कोशिश की, माल वह पुस्तक खरीद की और अपने देश भेजा गया। कहाँ से उसने बहुत ही ऊँचे दाम पर यह स्वर्ण मंत्रम् पुस्तक एक अमेरिकी सन बुकर को देना दी, जिनने उस पुस्तक का कुछ अंश अंग्रेजी में प्रकाशित कराया और उसकी राजकीय मदद में जहाँ जहाँ आवश्यक किये

यह सच्चा हुआ कि उस सन्ध्यासी के पास प्रमाणिक फोटो स्टेट कापी विद्यमान थी और निश्चय उस पुस्तक की पन्नों की कोशिका भरता परन्तु उसे कुछ भी समझ में नहीं आया पर इतना उसे ज्ञान हुआ था कि यह पुस्तक जरूर बहुत कीमती होगी या उसमें बहुत कीमती सामग्री लिखी हुई होगी तभी तो वह मंत्रजगत् में भी दाँव देकर पुस्तक खरीद कर ले गया है।

इसी बीच पत्रिका के एक सदस्य को उस साधु के पास वह पुस्तक देखने को मिली और उसने पहली बार अनुमान लगाया कि यह पुस्तक किसी ग्रंथिक मूल्यवान् और अद्वितीय है, सन्ध्यासी ने यह पुस्तक तो उसे नहीं दी परन्तु उसके कुछ अंश लिखने के लिए दे दिये, एक महीने तक मेहनत कर उस युवक ने जो कि प्राचीन भारतीय लिपियों का विशेषज्ञ है, उन अक्षरों के महत्वपूर्ण अंश लिख दिये।

इसी बीच पत्रिका के एक सदस्य को उस सन्ध्यासी के बारे में पता चला और समझ्यो छः महीने तक सन्ध्यासी के पास ही रहा उसके उस पुस्तक से कापी कुछ सामग्री प्राप्त की और अब उसने पुस्तक में वर्णित विधि से स्वर्ण

स्वर्ण निर्माण

पारद पलमेक च पलक तालक तथा ।
तत्समं भवकं क्षिप्त्वा रविदुग्धेन मदयेत् ।
तत्सर्वं गोलकं कृत्वा स्थालिकायां धिनिक्षिपेत् ।
तन्मुखे मुद्रिकां दत्त्वा दीपाग्निं च प्रदीरयेत् ।
क्रान्तं जायते दिव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥

अर्थात् एक भाग धारा, एक भाग हस्ताल च एक भाग शुद्ध गन्धक ले कर आक के रूप में दो पन्टे खरक करके घोट कर एक रस बना दे और इस का गोला बना कर घाली में फेंक दें तथा उसके ऊपर एक कटोरा उल्टा रक दें ।

इतने बाद नीचे अन्य गन्ध धाँच लगावे तो एक घंटे भर में घाली में रखी हुई सामग्री पूर्णतः स्वर्ण में परिवर्तित हो जाती है, यह प्रयोग कई बार आजमाया हुआ है और अपने आप में प्रामाणिक है ।

बताया तो यह आश्चर्यचकित रह गया, पहली ही बार में उसे सफलता मिल गयी, इसके बाद उसने इसी प्रयोग को पाँच छः बार परीक्षण किया और हर बार उसे सफलता मिली, तब तक सन्ध्यासी को भी उस पुस्तक में वर्णित विधि और प्रयोग का ज्ञान हो गया था और सन्ध्यासी ने भी उसी विधि से स्वर्ण बनाया तो पहली ही बार में उसे सानदार सफलता मिल गयी ।

उस समयकल सन्ध्यासी ने ही इस पुरे इतिहास को और उस विधि को प्रामाणिकता के साथ लिख भेजा जिसे हम प्रकाशित कर रहे हैं, उस अंग्रेजी पुस्तक को पढ़ने के बाद भी यह विस्वास हो गया कि वास्तव में ही सन्ध्यासी ने जो प्रयोग भेजा है और पुस्तक में वर्णित जो इतिहास लिख भेजा है, वह सर्वथा प्रामाणिक और सत्य है ।

वा ।
 रित्
 म् ।
 न्येत्
 ॥
 एक
 प्रत्यय
 क्त्वा
 च
 चरते
 विर-
 द्वा
 —
 र में
 मीन
 एक-
 के
 और
 हकी
 की
 जा
 को
 की
 की
 की

गुरु साधना सिद्धि ही ब्रह्म सिद्धि है

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वरः
 गुरु साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

गुरु शब्दों में सभी लोगों के पास हीरक, चक्र, पादपी माला का निर्माण नहीं, साधारण मट्टाकार की रत्न नहीं पाते, हिम रक्तदिग्गज के दिव्य रूप को गगन से नीचे जल में गिराई वसा प्रकृति का कलात्मक रूप नहीं मिलता, तथा कुछ नहीं समझते हैं, साधारण रूप से ही गुरु साधन संग्रह में सभी की केवला हीरक रत्न संग्रहित होने के लिये ब्राह्मण रहते हैं, उर्वशी, मेघना, रम्भा उनकी भक्ति सफल पर गुरु करने नहीं आया, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर स्वयं उनकी रूप पर अपने समाहित ही गौतमनिक प्रभुत्व करते हैं, अति रूप में भगवती जगदम्बे उनके आसन पर चन्द्रनाथ रूप में स्थापित ही भोजनता प्रधान करती है, सविन्द स्वयं भगुर हाक सितम के साथ धर, नृपमन्त्र, अंग प्रत्यय में नीन्द्य वन वीर्य भुज्जित ही साकार ही उल्ला है, साधक और विष्णु के साथ, उनकी प्राणवैतन, जगत् कर्मा, जीवन्-तानी समर्थों का पूर्ण निष्कल सम्पन्न तथा कुछ नहीं है, उनके धर्मों में ? ऐसे दिव्य, अस्मत् की अतीतिक क्षान दिव्यरूप रूप धर, जितने भी भक्त प्रवर्तित ही आती है, अन्य है ऐसे विद्वत् साधक-साधक, जीवन मरण है उनका ही रक्षितिये साधक कबीर की कहला पड़ा :—

गुरु गोविन्द ब्रह्म जगत् कर्मा ।
 सविहारी गुरु आपकी जो गोविन्द विष्णु बतला ।
 गोविन्द ने साक्षात्कार गुरु कला में ही जो संकल है वा

यों कहा जान कि गुरु स्वयं ही तो ब्रह्म रूप में साधक के सम्मुख अवस्थित हो अपने हाथ में अनन्तता और विष्णुत्व भोला के साक्ष्य बना लाता है, गुरु और गोविन्द दोनों यदि एक ही शिखर के दो स्तम्भ बने जायें तो कोई प्रतिबोधनिक नहीं होनी, जोकि केद अष्ट से यदि दोनों में शेष माना भी जान हो तो कबीर के उपरोक्त शब्द के अनुसार गुरु का प्रतिबोध गोविन्द से महान ही आका गया है पर वतने वाला, निश्चय ही मजिल तक पहुँचने वाले से सहान है ही, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टि से यही ही ज्ञान देखा सक्ती है ।

गुरु को कैसे प्रसन्न और सिद्ध करें

साधक के मन भगवान् होते हैं, मुनने और पहले आवे हैं—'मन्त्रस्थानी देवता' सत्त्व, तीर्थ, वीर्य और गुण में पूर्ण आस्था ही सिद्धिद्वय कही गई है, हृदय पर अतन्त्र और आग्रह अनु कुंठा एवं तर्क रहित ही सभी आत्माओं से ही गई सेवा और साधना के द्वारा गुरु को मोह लिया जाता है, यह ऐसी सुसंगठित किया है, जिसके द्वारा गुरु स्वयं ही संभवती होता है, सेवक, साधक या शिष्य को गुरु ने संवाद करते ही आवश्यकता ही नहीं मानी, अन्तर्मुखी भाव सेवा साक्षात्-आराधना गुरु हृदय पर अति होती रहती है, हर पल हर क्षण गुरु की पीली दृष्टि ऐन सेवाभावी साधक पर टिकी रहती है, गुरु गुरु और की गणना बराबरी नहीं करता, कुम्हार के

जाक की तरह कच्ची माटी रूप ऐसे शिष्य को गुरु हर पल अपने धनुस्वरूप देने में लगा रहता है, ठोक-पीट कर उसके पापों का क्षय करता रहता है और उस दिन को कल्पना करता रहता है जब उसका ऐसा शिष्य शुद्ध परिष्कृत हो भाव विभीर, रोम-रोम से नर्तन कर उठे, प्रह्वानर को प्राप्त हो सभी श्रद्धा सिद्धियों को गुरु के हृदय में अपना स्थान बना स्वतः प्राप्त कर ले और ऐसा हो जाता है जब गुरु अपने शिष्य पर अपने सेवक पर महतुकी कृपा वृष्टि करता है, सारे चक्रों की प्रतिपात से एक भटके में ही जाग्रत कर सहस्रार भेदन कर देता है - दुरीयावस्था को प्रसन्न हो शिष्य निर्विकल्प समाधि में पहुँच जाता है, ब्रह्म साक्षात्कार हो, ज्ञानानन्द स्थान में सराबोर शिष्य गुरु परमात्मा में ओल-पाइ हो अपने भाग्य को सराहते नहीं, यकता, इकता, उच्छता है गुरु भूना भी सोम सुधा पी।



आप कहेंगे ऐसा कैसे संभव है ?

ऐसा संभव है और संभव होता प्राया है, इतिहास इस बात का साक्षी है, एक गद्दी अनेक उदाहरण अपनी लज्जोत्था से शिष्यों को प्रेरित करते आ रहे हैं, राम कृष्ण परम हंस के शिष्य स्वामी विवेकानन्द, दंडी स्वामी विरजानन्द के शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती, पूज्यपाद शंकराचार्य के शिष्य पाद पद्म, मस्सेन्द्र नाथ, मुक्तानन्द आदि के नाम प्रायः भी साक्षी भूत हो इसी तथ्य को प्रतिपादित कर रहे हैं, सद्गुरु अपने सम्पूर्ण ज्ञान, चिन्तन, तपस्या, जीयन् या सारभूत तथ्य अपने शिष्य में उतार देता है, समाहित कर देता है, नेत्र और प्राणीवादि एवं प्रमदमुद्रा के माध्यम से, सभी सिद्धियों का दाता गुरु यदि अपने आपमें पूर्ण है तो शिष्य ही वह सिन्धुवत अपने में एकाकार होने वाले तब रूप शिष्य को सिन्धु बना ही देता है,

दिव्य पथ के पथिक वन पथ प्रशस्त कर लो

तो माझो मात्मीय भाई और बहनों आप भी इस

पथ के पथिक वन पथ प्रशस्त कर लो, आप भी गुरु चरणों में आ ऐसी ली लगाओ जो कभी घुसी नहीं जायवत् हो तुम्हें तुम्हारे श्लाघ्य तक पहुँचा कर ही रहे, दीक्षा प्राप्त कर उनका धाशोवाँद लो, गुरु मंत्र से अपने आपको जाग्रतमान कर, प्राणवैतना जाग्रत कर भु कृत हो उठो, रोम रोम समर्पण भाव ला सब कुछ समर्पित कर दो अपने सद् गुरु के पावन चरणों में, दो दो उनके चरणों को अपनी दोनों माँझों से, भर-भर भरती ब्रह्म-धार से तुम्हारा अन्तर कल्प पल जावेगा, कर्मधीन पापों का क्षय हो जायेगा, सिर पर प्यार भरा गुरु का वरदहस्त फिरते ही जादू सा हो जायेगा, लगेगा जीवन की तपती हुपहरी में कहीं किसी निर्मल शीतल भरने में अवगाहन किया है, कुछ भी अपना बचा कर रखता नहीं है, चपना चाहोगे भी तो रख नहीं सकते प्राखिर तुम्हारा यहाँ है क्या ? किसी पर भी तो तुम्हारा अधिकार नहीं जाता-पिता, दादा-परदादा कोई भी किसी के अधिकार से रके नहीं पत्नी, भाई, बन्धु, थेटा देटी सभी तो एक क्रम में है, घन-दोलत साथ जाती नहीं जाने की चेता है कौन साथ भिभायेगा ? कोई भी तो साथ नहीं जायेगा

घोर कोई हमारे रोने खेगा भी तो फिर इस मृग मरी-
चिका में संता मन नहीं भ्रमित करता है, क्यों नहीं तब-
बाई की आज्ञा ही जान लेता, विडम्बना का जीवन जोग
के क्या लाभ ? हाथ जुने जब जाना ही है तो क्यों न गुरु
के बताये रास्ते पर चलते हुए उठे ही सिद्ध किया जाये,
क्यों न ब्रह्मानन्द प्राप्त करके ब्रह्म साक्षात्कार किया जाय
यही वह धर्ममार्ग धन है जो हमारी प्रापकी कसली पूजी
है, वास्तविक कमाई है जो साथ प्रायेणी जिस पर अधिकार
पता एकते ही, क्योंकि यह तुम्हारी अर्जित सिद्धि है, देखा
है, साधना है, गुरु की विशेष दिव्य कृपा है ।

पहचानो-गुरु के त्रिगुणात्मक शिव शिवा रूप को-

ब्रह्म, विष्णु, महेश, आशा शक्ति रूप का स्वयं में
समाहित जिये नारायण भाम प्रादमो का देखने वाला
अस्तित्व अत्यन्त विवक्षण श्रोताधार्य है, मेदामें रत
धेवन, साधक और भिक्षु शिष्यों को भी समय समय
पर भरमाया करता है, माया का चढ़ा उनकी धुली आँखों
पर भी डालता रहता है और यह सब करते हुए विन्तुन
प्रवाशन, कभी कभी पूर्ण अज्ञानी की भूमिका निभाने हुए
शिष्य से भी निचले स्तर पर स्वयं को प्रतिष्ठित कर
मुकरता रहता है अन्तर ही अन्तर, कभी अदभुत माया
है गुरु की जो नभज ही जानी नहीं जा सकती, चमैं
चक्रुओं से गुरु जैसा दिखता है, वंसा है नहीं, अन्तर्बु
धुवन पर ही कभी कभी उसका दिव्य रूप परिलक्षित
होता है, साक्षात्कार होता है उसके ब्रह्म रूप से, मगर
हर पल गुरु का प्रयास रहता है शिष्य उसे समझे नहीं,
समझने तक, शिष्य का प्रयास रहना चाहिए गुरु की
शिष्य भांकी पाने का, उसे पहचानने का, इस दौर में
जित दिन गुरु अपनी हार स्वीकार कर लेता है, शिष्य
का सीमाव्य उदय होता है उसके जीवन के पुष्पों का
पल उसके समक्ष होता है, गुरु शिष्य को सोने से बना
देता है वह सिद्धि जिसे ब्रह्म सिद्धि कहा जाता है, पूर्णता
निवले ही शिष्य शिष्य नहीं रहता गुदपत् बन गुरु की ही
भावा का पूर्ण चेतन अंग हो जाता है, तिय शिवारूप में गुरु

का वरदहस्त शिष्य के भाल पर प्राणीवाद की कपा करता
है और यह वरदानमयी बेला ही शिष्य का भ्रंशार और
जीवन की पूर्णता है ।

गुरु सिद्धि संजो कर ही ब्रह्म सिद्धि संभव है-

गुरु चरणों में स्वयं को इस तल्लीनता की स्थिति
में पहुँचा कर ही सेवक, साधक और शिष्य साथ साथ में
गुरु नाम जपता हुआ उसके एकाकार हो पाता है, साते
हुए भी वह नहीं खाता, मोते हुए भी वह नहीं सोता,
जानते हुए भी वह नहीं जागता, कर्म करते हुए भी वह
नहीं करता, यह भाव उसमें जाग जाता है, कर्ता स्वयं
उसके गुरु होते है और वह मात्र निमित्त बन गुरु संकेत
पर कण्ठगुल्लो का नृत्य करता रहता है, कर्ता भाव विलीन
होते ही यह समर्पण भाव में डूब जाता है, उसके अस्तित्व
और गुरु के अस्तित्व में कहीं कोई अन्तर नहीं रहता,
एक दूसरे का सुख-दुख एक दूसरे को साझता है, प्राणी से
प्राणी का स्पन्दन एक साथ होता है, शहर के प्रत्येक
दिखने पर भी वंत नहीं अद्वैत रूप बन जाते हैं, चिन्तन
में एक, प्राणी से एक स्थिति जब बन जाती है तो गुरु
सिद्धि की स्थिति शिष्य को प्राप्त हो जाती है, भ्रम-और
भावतिरेक में शिष्य को हृदय से लगा सब कुछ स्वीकार
कर देता है, अपना चिन्तन, अपना ज्ञान, अपनी तपस्या,
साधना सिद्धि सब कुछ प्रवाहित कर देता है शिष्य में,
गिर पर हाथ फेर ब्रह्म रंघ खोल देता है, ये देता है वह
ब्रह्म सिद्धि, जिसे योगी, ऋषि, मुनि, तपस्वी, देवी देवता
भी पाने को मातुर और प्राकुल रहते हैं, ब्रह्म से साक्षा-
त्कार की यही निष्काम सिद्धि गुरु का आशीर्वाद और
वरदान बन फल जाती है शिष्य में, सेवक में, साधक में,
भोग और मोक्ष दोनों को देकर पूर्णता देने वाली गुरु
सिद्धि ही ब्रह्म सिद्धि कही गई है, शत शत नमन है गुरु
की अहेतुकी कृपा को-

ध्यान मूल गुरु मूर्ति पूजा मूल गुरु पद
वेद मूल गुरु वाक्य मोक्ष मूल गुरु कृपा ।

योगेश्वर निर्मोही

1 श्री
नहीं
7 है,
खाने
हू शक
संभित
उनके
अधु-
धिम
ह का
जीवन
ले में
। नहीं
हारा
। नहीं
धकार
। इसी
सा में
विगा,

बंगाल की जादूगरनी

जो मनुष्य को दिन में तोता और रात को मद बना देती है

मुझे प्रारम्भ से ही मंत्र तंत्र योग आदि के बारे में जोक रहा है और जब से मैंने थोड़ा बहुत होश समझा है तब से मेरे मन में यही धाका था कि मैं तंत्र के क्षेत्र में बहुत बड़ा नाम कमाऊँ और कुछ ऐसा कार्य करूँ जो अपने आपमें अनोखा और अलौकिक हो।

मेरा शरीर भगवत बद-काँड़ी का, सुन्दर और हँसुतापूर्ण है, मुझे अपने शरीर पर गर्व है, परन्तु शरीर से भी ज्यादा मुझे उन योगियों और तन्त्राचार्यों से मिलने में आनन्द आता जो गाँव या शहर के बाहर सुनिस्तान स्थानों पर निवास करते हैं जो खिलम और गाँजे का दम मारते हैं और जिसके पास कुछ ऐसी विद्याएँ हैं जो अपने आपमें अलौकिक और अद्वितीय हैं, जिन को लौकिक समझा कर मैं बंगाल की घोर निकल जाता और ऐसे लोगों की शलाघन करता हूँ।

इस बीच मैं थोड़ी बहुत तंत्र विद्या सीखी भी, यन्त्रोपकरण करना, सम्मोहन करने-जिसी को भी अपने अनुकूल बना लेना, हवा में से कोई पदार्थ प्राप्त कर लेना आदि विद्याएँ मैं सीख चुका था तब बीच में मेरी भेट एक श्रीगुरु से हो गयी और उस श्रीगुरु के साथ समयान्तर में भी तीन बार सहीने रहा, उसके पास वास्तव में ही कुछ अलौकिक सिद्धियाँ थी परन्तु वह थोड़ा कृपण और मोहित स्वभाव का था उसके मुँह से कुछ ज्यादा प्राप्त नहीं हो सका परन्तु

फिर भी उस श्रीगुरु से मैंने दो तीन भूत साधनाएँ अवश्य सिद्ध की और अब मैं इस योग्य बन गया था कि भूतों से मन चाहा कार्य सम्पन्न करवा दूँ, कभी मैं उनसे पैरो की मालिश करवाता, कभी उन्हें चेतों में पाली देने का काम सौंपता और कभी कभी तो गन्नाक के मूँड में कई ऐसे कार्य सौंप देता जिनकी कोई जरूरत ही नहीं थी परन्तु मैं यह देखकर आश्चर्यचकित रह जाता कि मेरी साधना का ये तुल्य फलदायक है, और सच्चे नेवका की तरह कार्य सम्पन्न करते हैं।

वातपीठ के ऊपर मैं एक दिन श्रीगुरु से पता चला कि तंत्र विद्या अगर सीखनी है, तो उसका गुरु बंगाल में है, बंगाल के भी कुछ गुरु, इलाकों में तन्त्र की गोपनीय और रहस्यपूर्ण विद्याएँ आज भी जीवित हैं और यदि वास्तविक रूप से तंत्र को सीखना है और समझना है तो बंगाल के चिरकुट कस्बे में जाना होगा, चिरकुट अपने आप में अत्यन्त प्रसिद्ध स्थान है, जहाँ आदिवासियों की संस्था बहुतायत से है, बंगाल में चिरकुट को तंत्र का गुरु कहते हैं, चिरकुट यहाँ तंत्र के देवता हुए हैं और उनके नाम पर ही उस स्थान का नाम चिरकुट पड़ा है।

मैंने भी कई पुस्तकों में बंगाल में यहाँ की तंत्र विद्या और चिरकुट कस्बे के बारे में पढ़ा था पर जाने का अवसर

गती मिली था, भीम को श्रीगुरु कृपाकलाश जी ने निवेदन किया कि मेरी इच्छा बंगाल जाने की और कुछ दिनों विरहमुद्र में रहने की है।

भीम बात सुनकर कपालनाथ डोरो से झटुझास कर उसे बोले तु पागल हो गया है, यहाँ की औरतें बड़ी मर्द-खोर होती हैं, और तुम्हारे पुत्रों को या साकुर्यक युवकों को देखकर उन्हें भग के जाती है, जोक भाग के भन से वे लग भगुण की दित में लोभा या कोई पशु पक्षी बना कर लय देती है वस्तु बात की उसे पुरा पुरा बना देती है।

यह सने लिए मर्दबा, अप्रकाशित आरुत संवद से भन भनने कहलिया चुनी तो बकथ भी कर यह विचारा नहीं था कि साज बोलवीं गलाबदी में भी ऐसी औरतें हैं जो लज्ज विद्या की जानकार हैं और मनुष्य को लोभा या भना बना देती हैं और बात में जब चाहे उसे पुत्र के रूप में बदल देती हैं।

भीम अतन्नामक जो तो निवेदन किया कि मैं जानने जेवत में एक बार विरहमुद्र जाना अवश्य चाहता हूँ योंन जाना ही नहीं चाहेतु कहा चार छः महीने रहना चाहता हूँ, मैं देखना चाहता हूँ कि आपको बातों में कितनी सम्मर्द है।

कोई उनकी कलकार से यह उनके लिए मर्दबा अर-आशित था, एक बस से उनकी लकीरियां चढ़ गयी बोले तुलें मुझ पर भरोसा नहीं है तभी तो ऐसी बातें कर रहा है, मैं विरहमुद्र में भील सला रहा हूँ और एक प्रकार के हावियों से तुम्हारे चुका हूँ मगर मैंने तब तक विद्या-का की भीषा भी है और मैं भी एक प्रकार का प्रमेस काके लिखा सकता हूँ।

मैं सोच रहा, बात को सागे बढ़ाने हूँ कपालनाथ ने कहा मेरा विचार इसी महीने बंगाल की तरफ जाने का है अगर तेरी इच्छा है तो मेरे साथ चल सकता है, पर वहाँ तुम्हारे साथ किसी प्रकार का कोई हावना हो क्या तो उसका जिम्मेवार मैं नहीं हूँ।

श्रीघ्न गमन सिद्धि

यह एक अद्भुत प्रयोग है और इस प्रयोग के द्वारा व्यक्ति बहुत तेजी से चल सकता है, तथा एक घण्टे में कई सौ मील की यात्रा पैदल कर सकता है। इस प्रकार की यात्रा करने पर भी न तो उसे किसी प्रकार की थकावट आती है और न किसी प्रकार भी कोई तकलीफ ही होती है।

यह साधना किसी भी व्यष्टि से प्रारम्भ करनी चाहिये, रात्रि को स्वान्तर पीली बोली पहिन कर, पीली धोती ओढ़ ले और सामने एक लेन का दीपक जला ले फिर लाल आसन बिछा कर उस पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय तथा हवीक माला से विम्ब मन्त्र की एक सौ माला फेरे—

मन्त्र

ॐ श्रीसर्वतालाय श्रीघ्न गमनाये गच्छ गच्छ वेताल
हुं हुं फट्।

यह ३१ दिन की साधना है और नियमित रूप से करने पर यह साधना सिद्ध होती है, यह प्रयोग भी मुझे उस प्रसिद्धता सुन्दरी ने ही बताया था और मैंने इसको सैकड़ों बार आजमाया है तथा हर बार इस मन्त्र की क्षमता अनुभव कर आश्चर्य प्रकट रह गया हूँ।

इस मन्त्र के प्रभाव से व्यक्ति एक दिन में चाहे कितने मील पैदल चल सकता है, उसे न भुख-प्यास सताती है और न उस पर सर्दी गर्मी का ही कोई प्रभाव व्याप्त होता है, सबसे बड़ी बात यह है कि किसी प्रकार की कोई थकावट भी नहीं आती।

अवस्था

भारी

वर्षों

से था

। कोई

ही थी

जो किसी

का को

। कला

गान में

गान पर

। यदि

न है तो

इस प्रकार

। जो को

का गान

उसके

। किया

उत्तर

मुझे मन में प्रवृत्ति थी कि एक बार वहाँ चले तो सही, बाद में जो कुछ होगा देखा जाएगा, एक बार इस विद्या को अपनी आँखों से देख देना चाहता था और संभव हो तो नीचे लेना चाहता था।

अबकी ही ऐसा प्रयत्न भी उपस्थित हो गया एक दिन श्रीपद में कहा चले! पाद में चला तो अपने पैर धुँदले उठा रहा हूँ, और नवरात्रि भिन्न है, इसलिए बंगाल जा रहा हूँ, तुमने एक बार फिर कुछ चलने के लिए कहा था

देह परिवर्तन सिद्धि

यह साधना थोड़ी कठिन अवश्य है परन्तु यदि एक बार साधक परिश्रम कर इस साधना को सम्पन्न कर लेता है तो वह कुछ ही क्षणों में सामने वाले पुरुष या स्त्री का देह परिवर्तन कर मनोवांछित आकार में सकता है, इस मन्त्र के प्रभाव से पुरुष या स्त्री को रोग, मैला, भेड़ा, ककरी या अन्य किसी भी पशु के स्वरूप में डाला जा सकता है और जब चाहे तब वापिस उसको उसकी रूप में लाया जा सकता है।

यह प्रयोग समावस्था से प्रारम्भ किया जाता है और ६० दिन का प्रयोग है, इसमें दोपहर आधी रात का समय लगन हो कर नहीं। तब तब नासाय पर या कुण्ड पर जा कर स्वागत करे और वापिस बिना बस पड़ने ही घर आ कर पहिले से ही बिछे हुए मृग चर्म पर दक्षिण की ओर मुँह कर बैठ जाय, अपने ललाट पर सिन्दूर का तिब्बक लगा दे और सामने दीवार पर सिन्दूर से ही धुँदला देवी का चित्र बनाने जिसके बाल बसरे हुए हों जिसके हाथ में खप्पर तथा दूसरे हाथ में मुन्ड माला हो।

फिर धुँदला देवी की पूजा करे और सर्पप्रस्थियों की माला से मंत्र जप करे, एक रात में एक सौ इक्कीस माला मंत्र जप होना अनिवार्य है।

मन्त्र

ॐ धूँ धूँ धूँ देह रूपाय परिवर्तनायै धूम धूम कार्य सिद्धये हुँ अनंग पालायै धूँ जे फट् ।

जब ६० दिन का प्रयोग समाप्त हो जाय तब उस धुँदला देवी पर लगे हुए सिन्दूर को अपने ललाट पर लगाये इस पूरी अवधि एक जप भोजन करें भूमि शयन करें और ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें।

पूर्ण त्रिभि विधान के साथ जब साधना सम्पन्न हो जाय तब जिस पुरुष या स्त्री को किसी अन्य शरीर में परिवर्तन करना है तो पहले वह मुँह से वाक्य दे कि अपुन आकृति में यह बदल जाय और फिर तीन बार मन्त्र उच्चारण कर जोर से फूँक मार दें तो तुरन्त ही वह दूसरी आकृति में परिवर्तित हो जाता है और जिन्हा रहता है।

यह प्रयोग मेरा आजमाया हुआ है और कोई भी साधक इस को सीख कर इसकी सत्यता और प्रामाणिकता परख सकता है।

सम्य-तन्त्र-सम्य विधान : ३१

हमने बुझे नहीं जानते हैं तो भी मुझे अपने भाव से जा
सकता हूँ।
मेरी जोरनी से ही हकीकत पतली हो दे दिया था
जो सर्वथा स्वतन्त्र था, जो वरदा की दुष्टता की शरणा
में पहुँच कर ही नहीं रहा था फिर भी मैंने उन्हें सूचना
दे दी कि मैं यंगल कालको ही और जा रहा हूँ और
जब और साथ ही सोचूँगा। ऐसा कह कर मैं घर में
चिन्तित रहता था।

हमने दिन में सोचने के साथ रेल में बैठ गया और
चार दिनों की यात्रा करके मेरिडीयन की ओर पहुँच गया
यहाँ से सामे का रास्ता वैदल था और लगभग ६० मील
दूर चिरकुट नाम का एक छोटी सी बस्ती उस तरफ़ था जो
जहाँ उल्लर की हवा बहती उस बस्ती में सवार हुए और
चिरकुट बस्ती के पास ही रात के साहर भरती भूनी लगी
थी।

जो लोग मिल तक भी मेरे साथ जुड़ भी पटना पड़ित

वह सम्मोहन प्रयोग : जिसे चिरकुट की सुन्दरी ने मुँह पर किया

जब मैं वहाँ से खाना हुआ तो मेरी आगवाला उस स्त्री से मैंने निवेद किया कि तुमने
मुझ से लोग मन्त्र को बताया है पर यदि सुभव हो तो उस मन्त्र को भी मुझे बताइये जिसके द्वारा
मेरे जैसा प्रीतिवाचक को भी एक क्षण में सम्मोहित कर अपने पीछे चलने के लिए बाध्य कर
सकता हो।

मेरा प्रश्न सुनकर वह सुन्दरी पहले तो एक दो क्षण हिचकिचाई पर वह शायद मुझ से बहुत
ज्यादा प्रेम करने लग गई थी इसलिए उसने इस प्रयोग को भी मुझे बता दिया जो कि मैं पश्चिमा
भाषियों के ज्ञानमें रक्षित रहा हूँ।

अमावस्या के दिन सरसों के पाँच सुट्टी दाने ला कर तीर की प्राकृति की शक्ति धन के धीरे
उस पर मुँह से धीरे धीरे दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर सर्वथा नन्त बँठ जा प और फिर सामने
तेल दीपक लगा कर मन्त्र ग्रह प्रारम्भ करें।

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अक्षय सम्मोहनं नमः कल्पम् कुरु कुरु पदम् ।

उस रात की हकीकत माला में या स्फटिक माला से एक ही एक माला मन्त्र जब करना है,
मन्त्र जब सम्मोहन करते हैं उसकी शक्ति में एक विशेष प्रकार का सम्मोहन शक्ति का जायेगी और
जो वित्त पुष्टि या स्त्री की भी देखकर उसकी आँखों में आँसू डाल कर एक क्षण के लिए भावना दें
कि तुम मेरे बस में हो और मैं जैसा कहूँ वैसे ही जीवन भर करोगी और फिर उपरोक्त मन्त्र का तीन
बार उच्चारण कर फूँक सार दे तो सामने वाले व्यक्ति पुरुष या स्त्री की बुद्धि कुन्ध हो जाती है और
सम्मोहनकर्ता के बस हो कर जीवन भर उसके अनुसार ही कार्य करती है।

यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त तीव्र और महत्त्वपूर्ण है तथा पत्थर को भी इस प्रयोग के
द्वारा दबा से बिज्या जा सकता है।

गहीं हुई, एक दिन सुबह जब मैं सो कर उठा तो श्रीपद का कोई खता पता नहीं था, मैं तो उसका चिन्ता करता था और मैं समझे नहीं, मैंने तो तीन बड़े पत्रकारों की बिना परन्तु श्रीपद-वापिस नहीं आया।

जब लगभग सात बजे लगी और पेट में भय की भासा आने लगी तो मैं कस्बे में जाया ही उचित समझा जिन्हे कहीं से शत्रु प्रगत कर पेट की भूख को शांत कर सकूँ।

पूरे बंगाल में विस्तृत कच्चा प्रसिद्ध है, और मेथनी-पुर से वहाँ तक भीड़ी बस जाती है, अगर यह पता बहुत पुरानी नहीं है, केवल दो तीन वर्ष पहले की ही बात है, छंटा कच्चा था और धाम बंगाली गृहस्थ लोगों ने जैसे घर होते हैं वैसे ही घर थे, सूर्य लगभग अस्त होने को आ रहा था, मैं एक दरवाजे पर जा पहुँचा और दरवाजे की धोड़ा सा धक्का दिया तो दरवाजा खुल गया, सामने ही दो स्त्रियाँ बैठी हुई, रोहियाँ बना रही थी और एक पुरुष मच्छली से भात खा रहा था।

भूरी छाया देखकर उस पुरुष ने अम्बर आने के लिए कहा और एक तरफ बैठ जाने के लिए कह दिया, मैं चुपचाप बैठ गया तब मैंने अगली साया में कुछ पत्र परन्तु मैं पूरी तरह से समझ नहीं पाया, थोड़ी देर में एक स्त्री ने संकेत से कुछ पूछा, क्या भूख लगी है? मेरे हाँ कहने पर उसने भेरी हँसने पर चार रोहियाँ और थोड़ी सी सखी रख दी मैं वही बैठे बैठे भोजन कर पायी पिया और वापिस आने के लिए मुड़ा तो स्त्री ने जवाब दिया रात की गहीं एक जाइये, रात फिर गई है।

सचपि मैं उसकी भाषा समझ नहीं पा रहा था पर उसका संकेत समझ रहा था, मैं बिना उसकी परवाह किए घर से बाहर निकल गया।

मैं गाँव के बाहर घाटिस उत्ती स्वान पर आ गया जहाँ पर मैं दो दिन से टिका हुआ था, मेरे मन में विचार था कि शायद श्रीपद वापिस आ गया हो, श्रीपद के रहने



ने मैं अपने आपको सुरक्षित महसूस कर रहा था पर मैं वहाँ श्रीपद का कुछ खता पता नहीं था और निराश हो कर वहीं बैठ गया।

रात के लगभग आरुह बने होने कि एक सुम्बर मच्छी पास में आकर खड़ी हो गई, चाँदनी रात थी, भुनी हुई था नहीं रही थी और मैं उसे पास में खड़ी सा साफ देख रहा था, मुझे पता चला कि यह तो वही स्त्री है जिसके घर मैं जाना जाने गया था और यों किन्तु फिर हमारे से यह लड़की बाहर आई थी, शायद उस घर की गृह वेटी थी।

उसने मुझे उठने के लिए कहा और साथ में चल के लिये थोड़ी पर मैं श्रीपद की तरफ ही पैर पड़ा, खंड हुए चेहरा रहा जैसे कि मैंने उसको देखा ही नहीं था मेरे चित्त पर उसका कोई प्रभाव पड़ा ही न हो।

इसमें कोई दो राय नहीं कि यह लड़की अत्यन्त सुन्दर थी और आकर्षक भी मैं यह भी समझ रहा था कि रात को तब तक उसे किसी लड़की का झकड़ना या भावने रखता है, परन्तु मैं अपने प्राण में संयत रहता चाहता था और किसी सुशोभित में पड़ना नहीं चाहता था।

उस सुन्दरी ने बगला भाला में कुछ कहा पर मैं समझ नहीं सका, वह पांच मिनट तो मेरा इन्तजार करती रही और फिर भटके से मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपने स्थान से खड़ा कर दिया।

यह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी कि एक चुन्नार नाचक लड़की ने इतनी तात्पर्य ही कि मुझ जैसे आँकड़ को एक भटके में खींच कर खड़ा कर दे और आगे कुछ चलने के लिए बिना कर मे, उसने मुझको के दो या तीन मिनट मेरी आँखों में ताज्य होगा, और मुझे ऐसा लगा कि जैसे छतने मेरी बुद्धि, मेरी भावनाएं और मेरे विचारों को बांध दिया है, वह एक तरफ को खाना ही गई और मैं प्रत्यक्ष डोर से बंधा हुआ उत्तने पीछे पीछे एक ही तरह चल रहा था।

इसमें कोई दो राय नहीं कि मैं अपने पूरे होठों हवाक में था मैं सही प्रकार से चिन्तन कर रहा था मैं काँवत की कल्ले हुई जाने कभी प्रकार के कारनामों को मैं मुझे यह भी लागू था कि इस तरह की कल्ले मर्दों को होती है और पुष्पों के मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवा लेता है परन्तु मैं सब बातें सोचते विचारते समझते हुए भी मैं उसके पीछे पीछे चल रहा था, एक दो बार मेरे मन में निश्चय किया मैं चलते पाद लौट जाऊँ परन्तु मैं चाहती हुए भी लौट नहीं सका, और मैं बराबर उसके पीछे पीछे चल रहा था।

आगे चलते बाद यह एक मकान में मुझे ले गयी जहाँ उसकी दो तीन सहैलियाँ और भी कैंडी हुई थी और बाहर वे सभी मेरा इन्तजार ही कर रही थी, मैं एक

अत्यन्त तीव्र वशीकरण प्रयोग

यों तो तन्त्र विद्या में सैकड़ों सम्मोहन प्रयोग और वशीकरण प्रयोग हैं पर यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त ही तीव्र और तुरन्त प्रभाव पैदा करने वाला है, यह मुझे उस आँकड़ कपालनाथ से ही प्राप्त हुआ था, इसके माध्यम से कठोर से कठोर इन्द्रिय वाले पुरुष स्त्री को पूर्ण रूप से सम्मोहित किया जा सकता है और उसे जीवन भर मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाया जा सकता है।

यद्यपि यह प्रयोग दुर्लभ और गोपनीय है, पर पत्रिका पाठकों के लिए मैं यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ-

अनावस्था की रात्रि को दगीचे या घर के किसी कोने में बैठ जाय और अपने आसन के नीचे शमशान से लाकर थोड़ी सी राख रख दें आसन बायें रंग का होना चाहिए फिर दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर सामने उसका चित्र रख दें जिसे पूर्ण वशीकरण या सम्मोहन करना है।

इसके बाद उस चित्र के सामने मात्र इयावन माला मन्त्र जाप करना है और ऐसा करने पर आश्चर्यजनक रूप से चमत्कार देखने को मिलता है और जो आपका सर्वथा धिरोधी होता है, वह भी आपके अनुकूल हो कर आपके कहे अनुसार कार्य सम्पन्न करने लग जाता है।

मन्त्र

ॐ ऐं ऐं श्रमुक वश्यमानाय मम आज्ञा परिपालय
ऐं ऐं फट् ।

यह प्रयोग दिखने में अत्यन्त सरल है परन्तु इसका प्रभाव अचूक होता है और तुरन्त ही हम जिसे सम्मोहित करना चाहे उसे अपने वश में करने में समर्थ हो पाते हैं।

तरफ खड़ा हो गया उसमें से एक सुन्दर स्त्री प्रकट होना बहुत हिचकी जानकी थी उसने मुझे प्रार्थना किया कि मैं स्नान कर लू और जो सुन्दर वस्त्र पड़े हैं उनकी धारण कर लूँ।

मैं तिरौह भाग से उन पाँचों की देखता रहा वे स्त्रियाँ सुन्दर थी और सभी लगभग बीस बार्दत वर्ष की आयु की थी, उनकी आँखों की कामुकता मुझे साफ साफ दिखाई दे रही थी उनके कहने के अनुसार मैंने स्नान किया, एक तरफ सुन्दर वस्त्र पड़े हुए थे उन वस्त्रों को धारण किया और उनके बाद जब मैं इन सब चीजों में निमग्न हुआ तो लगभग रात के तीस बजे गये थे।

मेरी आँखों में लोभ था रही थी परन्तु उनकी भावनाएँ छिड़झाती करती थीं और वे पाँचों मुझ से कहल कर रही थी छेड़झाती कर रही थी, उत्तेजित कर रही थी और मैं चारों तरफ देखता हुआ कुछ भी निश्चय नहीं कर पा रहा था।

कुछ ही समय बाद उसमें से एक स्त्री ने मुझ पर कुछ मन्त्र पढ़ा, पर्याप्त मैं थोड़े बहुत मन्त्र का जानकारी था परन्तु मुझे ज्ञान नहीं कि उसने किस मन्त्र का उपयोग किया मैं अचरित से अवादा उत्तेजित हूँ उठा और उन पाँचों स्त्रियों ने वहाँ रीते मेरे साथ जो कुछ भी किया उनको लिखते हुए या कहते हुए भी शर्म तो आ रही है।

सुबह खता होने से पूर्व उसमें से एक स्त्री ने प्यार से मेरे गिर पर हाथ डेरा और हुआ मैं से कुछ वस्तुओं के शान निकाले और पड़ कर मेरे शरीर पर फेंक दिये।

आपदा प्राप्त निश्वास नहीं थी और यह विश्वास करने लायक बात भी नहीं है परन्तु यह भी सत्य सती और सत्य बात है कि उसी क्षण मेरा मन्त्र शरीर एक छोटे से तोते में परिवर्तित हो गया, उस स्त्री ने मुझे उठा कर प्यार से एक लोहे के पीजरे में रख दिया और बाहर से दरवाजा बन्द कर दिया, यही नहीं प्रसिद्ध उसने



पीजरे के अन्दर हो एक कटोरी चने की शल भी रख दी और छत पर बैठ कर दरवाजे की ताला लगा कर पहे से चली गई।

मैं अपने साथ पर आश्चर्य कर रहा था, मुझे अपने आप पर विचार आ रहा था मेरी बुद्धि और सोचने की शक्ति में किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं आया था परन्तु मेरा शरीर दो फीट का पुरुष आकृति का बन कर एक छोटे से तोते के रूप में परिवर्तित हो गया था और उस लोहे के पीजरे में कैद चौच मार मार कर अपने आपको लहू झुड़ान कर रहा था।

मुझे यह यह कर शीघ्र की बातें याद आ रही थी कि यह बिया बंगाल में आज भी जीवित है और आज भी वे इस बिया के सहारे किसी पुरुष को बकरा, भेड़ या तोता बना कर रख देती है तथा रात को उसे पुरुष बना कर अपना मनोरंजन करती है।

मुझे यह यह कर शीघ्र पर पुराना आ रहा था कि वह अचानक कहाँ चला गया कुछ कह कर तो जात

उमड़े की ज्वाला में। अपने ज्ञान पर कोध था रहा था क्यों तू इस तरह कामा और क्यों अपने आपको इस मुर्खापन में डाला नर-जव ही भी क्या सकता था, शत भर में उन्होंने नर साथ जो जो किया था, वह तो मैं ही जानता हूँ।

दशमम रत्न के नीचे या उन वेशे में, रत्नमणि का कला कुशला हुआ अनुभव हुआ, योड़ी देर में ने पातों सिखा संस्कार था यही शक्ति से आज एक स्त्री नहीं आई

श्री, जगम में एक स्त्री ने मुझे बाहर निकाला और हुआ मैं से सर्पों के दाँते प्राप्त किसे और कुछ मन्त्र बुझबुझ कर मेरी और देखे तो आश्चर्य की बात यह है कि दूसरे ही क्षण मैं अपने प्रसन्न शरीर में आ गया था, अभी मैं अपने ज्ञानको देख रहा था और अभी मैं उस खाली पड़े हुए गिरने की देख रहा था जिसमें कुछ क्षण पहले मैं बैठा था।

वे अपने साथ उत्तम भोजन ले कर आई थी उन्होंने

सिद्ध योगीश्वर

मेरे पूर्व जन्म के छोड़ इस जन्म के पुण्यों का उदय है कि मैं सिद्धाश्रम तक पहुँच सका हूँ, मैंने जीवन में खोत्रा भी नहीं था, कि मुझे कभी सिद्धाश्रम पहुँचने का अवसर भी प्राप्त हो सकेगा, पर आज इस धरती पर आकर मैं अपने आपको रोमांचित अनुभव कर रहा हूँ, यहाँ का कण-कण पवित्र दिव्य और मनोहारी है, यहाँ की वरती-गर लोटने की जी चाहता है, यहाँ के एक कण के बदले यदि पूरा जीवन भी न्योछाकर हो जाय तो घाटे की बात नहीं।

मैं घूमता घूमता सिद्ध योगा भील के किनारे पहुँच जाता हूँ, इतना स्वच्छ और पारदर्शी जल मैंने अपने जीवन में पहली बार देखा है, मैं देख रहा हूँ कि यहाँ साधु संन्यासी विचरण कर रहे हैं, युवा सन्ध्या-संध्या जेदन अर्थ, जप, तप, ध्यान में लीन है, देवांगनाएं आस-पास विचरण कर रही हैं, और मारा वातावरण मनोहारी मुख्य और स्वर्णिल सा है, तभी मैं सिद्ध योगा भील के किनारे एक स्वच्छ सफ़ाई शिवा पर बैठे हुए संन्यासी को देखकर पहचान लेता हूँ कि यह तो वही संन्यासी है जिन्हें मैंने कस्तुरज में देखा है, पांगुल पर साधनास्त पाया है, हहराती नदी में छलांग लगाते हुए देखा है, यहाँ इनके स्वरूप को देखकर जीवन धन्य हो उठा, इतना दिव्य और तेजस्वी स्वरूप पहली बार देख रहा हूँ, जीवन और तपस्या की ज्योत्स्ना से आपूर्ति यह शरीर अपने आप में अक्षम है।

देख रहा हूँ कि सामने संन्यासी और सन्ध्यासिनिधा बैठी हुई है, और उस योगी निखिलेश्वरा-चन्द जी के मुँह में निकलें हुए एक एक शब्द की ध्वनि से नून रही है, उनकी वाणी में लोच है, एक एक शब्द ने आत्म विश्वास और शब्दों का प्रवाह ऐसा है, कि जी चाहता है, वहीं उसी स्थान पर हजार-हजार वर्षों तक बैठे रहें, वे बोलते रहें, हम सुनते रहें।

कई-कई विनोदताओं, गुरुओं और व्यक्तियों से सम्पन्न ऐसे योगीराज निखिलेश्वराचन्द जी को मेरा ज्ञात ज्ञात प्रणाम।

मुझे खाना खिलाया पास में ही गर्म पानी रखने की व्यवस्था की मुझे स्नान करने के लिए कहा और अपने बदल देने की आज्ञा दी।

मैं मन्त्र चालित सा कार्य कर रहा था मुझे ज्ञान गहरी था कि मैं क्या कर रहा हूँ इस इतना ही ज्ञान था कि जो कुछ वह कह रही है, वह सब कुछ करने के लिए मैं बाध्य हूँ।

वह पूरी रात उन्होंने मेरे साथ बिताई, सुबह जब प्रभात होने को था मैं थक कर पूरी तरह से चूर हो गया था, शरीर में शक्ति का अभाव ही नहीं रहा था और मुझे इसी प्रकार से वापिस तोता बना धर पीजरे में फँद कर कमरे का ताला लगाकर चली गई।

वह कम लगभग महीने तक चला एक दिन जब मैं पूर्ण पुरुष रूप में था तो एक सुन्दरी को मैंने अपनी व्याधा कह सुनाई, आश्रय उसे मुझ पर दिया गया उसने कहा थीं सो जब तक तुम्हारे शरीर में शक्ति है, तुम्हें यहाँ से जाने नहीं देवे परन्तु मैं तेरी व्याधा से भागूँगी उठी हूँ मैं तुम्हें एक मन्त्र बता देती हूँ जिससे सबीनत तुम जब दिन में यह तोता बना कर चली जाय तो उस मन्त्र को पढ़ कर वापिस अपने असली स्वरूप में आ जाओ और फिर साथ ही साथ मैं दूसरा मन्त्र भी बता देती हूँ जिससे कि रात होते होते तुम फिरुट कस्थ से लगभग सौ मील दूर जा सको, जिससे कि मैं वापिस तुम्हें पकड़ कर न ला सकूँ।

यद्यपि वह ऐसा कहती हुए और करते हुए भयभीत थी, परन्तु उसने मुझे दोनों मन्त्र दिये पहला मन्त्र जो देह रूपान्तर मन्त्र था जिसके द्वारा मानव देह भेड़ा या तोता की देह में रूपान्तरित किया जा सकता है और वापिस उससे मानव देह में बदला जा सकता है तथा दूसरा मन्त्र जो प्रगामी मन्त्र था जिसके माध्यम से व्यक्ति एक घंटे

में सौ या इससे ज्यादा मील दूरी पार कर सकता है।

दूसरे दिन सुबह जब वे मुझे बन्द करके चली गईं मैंने इन दोनों मन्त्रों का प्रयोग कर पढ़ते तो घ्राण को तोंल की चोत्ति से अपने अस्थायी मानव स्वरूप लाया और जोरों से धक्का दे कर बन्द किवाड़ को खो दिया।

मैं चारों तरफ संश्रुत तजर से देख रहा था कोई मुझे देख न ले या पहिचान न ले और ठीक दोप समय जब सभी लोग बोजन आदि से नियुक्त हो कर भ्रम विश्राम के लिए उद्यत होंगे तब मैंने दूसरे मन्त्र प्रयोग कर उस फिरुट कस्थ से बाहर निकल आ और कुछ ही घंटों में मैं सौ मील से भी ज्यादा की निकल आया।

और जब मैं काफी दूर निकल आया जहाँ मुझे उनका भय नहीं रहा था तो आश्चर्य की बात यह सामने ही बड़ी प्रोचड़ अपातनाय बेटे हुए दिखाई दी एक बार तो मुझे उन पर गुस्सा भी आया परन्तु उन गुस्सा करना व्यर्थ था।

मैं आज भी उस अज्ञात नामा सुन्दरी के प्रति अतल और कृतज्ञ हूँ कि उसने मेरी मदद की उन दोनों मन्त्रों को सिखाया और वहाँ से भाग जाने में सहाय्य की।

इसके बाद मैंने इन प्रयोगों को दिल्ली, बम्बई व कई स्थानों पर वैज्ञानिकों के सामने प्रदर्शित कर सिद्ध कर चुका हूँ कि हमारे तन्त्र ध्यान भी उतने प्रामाणिक और सशक्त है तथा उनके द्वारा देह रूपान्तर किया जा सकता है, ध्यान भी जब मैं उन धीरे धीरे को याद करता हूँ तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं



औधड़...औधड़...औधड़...! हाँ मैं औधड़ हूँ

औ

धड़ का नाम उच्चारण करते ही आँखों के सामने एक भयावह तस्वीर उभर कर आ जाती है। जिसका सब पल्लव अन्ध बेधगाता अन्धों विश्व ही जल भाँज बाँधी, बड़ी बड़ी गाँवों, शाय में सभार, तारेगरीर पर रात मनी हुई, धमका चौड़ा डील डील और मुह से आँखों की अन्धक धमका करते वाला... वास्तव में ही औधड़ तो औधड़ ही होता है, यह न किसी की परधमका है और न किसी पर इसे क्या आती है, जो कुछ भी मैं था, उसे कर चुकता है, इस बात की भी परधमका नहीं करता कि इसी परिधान क्या निवर्तना, अपनी ही धुन में नरत रहने वाले वे औधड़ सारतर्क में धाराँ धोर बिखर हुए देखने की निरा नयेने

औधड़ सम्प्रदाय अपने समा में अन्ध सम्प्रदाय है, इसकी माधता बढ़ते इनका मिथा कयाप,इन्का आचार विचार और इनका जीवन दर्शन सब कुछ अन्ध होता है, भगवान बिना के ये उपासक होते हैं परन्तु तन्म की इनके पास कुछ विशेष क्रियाएँ होती हैं जिनके माधन से ये अन्धको को संभव कर दिखाते हैं, इनके पास कुछ ऐसी दृष्ट विचार होती हैं, जिनका प्रयोग करने पर आसमान भी घरी उठता है यदि ये प्रसन्न होते हैं तो सामने वाले का पल में निशाल कर देते हैं और यदि किसी पर प्रेषित हो जाते हैं तो उसका तथा उसके वंश का सन्तानान्त करने में भी नहीं रुकते, इसीलिए लोग औधड़ों से क्या संभव कर ही रहते हैं।

कुछ लोग कट्टा सेधने वाले या जुआ खेलने वाले इनके पास आकर जाते रहते हैं, और नांजा, मुलपा, ज़रम

धादि लेते रहते हैं, कभी कभी वे उभ नये की चीनका में लड़े का कोई अन्ध वंश देते हैं या लोडरो का कोई नम्बर देता देते हैं और अधिकतर इनको बात खल ही निकलती है।

ऐसे औधड़ गांवों और के बाहर जंगल में या अधिकतर भ्रमजान के किनारे ही रहते हैं, कई बार तो इन्हें मुर्दा अलाने के बाद बचे हुए बंगारों पर रोटी खकते हुए और खाते हुए देखा जाता है, कई औधड़ रात को नमशान में भूत प्रेतों के साथ विचरण करते हुए देखे गये हैं। नि अन्धी धमकों से औधड़ों को खल में से वास्त निगाह कर उसको आती पर बँट पर साधना करते देखा है, यह बात तो निगम है कि इनको साधनाएँ तीक्ष्ण और भवत्क होती है तथा प्रत्येक के बस की बात नहीं होती, परन्तु ये साधनाएँ अपने आप में महत्वपूर्ण कही जाती हैं।

मुझे अचानक से ही तन्म सोझने का शोक था और मैं चाहता था कि इन अन्ध साधनाओं के माध्यम से उन निमिष्ट धमकों की सीधु जो अपने प्राप में महत्वपूर्ण है, कठिन है और आज के युग में समन्कार है यह बात भी निमिष्ट है कि धाल के युग के लोग समन्कार की ही समन्कार अन्धी हैं जब तक आपके पास कोई महान सिद्धि नहीं होती, जब तक आपके पास कोई तीक्ष्ण कारख प्रयोग नहीं होता, जब तक आपके पास में कुछ समन्कार धरके दिखाने की प्रिया नहीं होती तब तक लोग मानते नहीं, और ऐसी सधमाएँ औधड़ साधनाओं में ही प्राप्त हो सकती हैं।

बीजद्वय करने आन में एक सम्प्रदाय है, और तंत्र की विशिष्ट क्रियाओं के माध्यम से इसका प्रभाव है, कहते हैं कि जब भगवान शिव स्त्री के विधोष में पागल हो कर उधर-उधर विचरता कर रहे थे, और जब किसी भी प्रकार से उनके शयन की प्राप्ति नहीं मिली तो क्रोध से उनका सादा जरीर अंगारे की तरह जलने लगा और उन्होंने अमानव तापवत् भूत धारण कर लिया, इस तापवत् भूत से ही ओषध सम्प्रदाय की उत्पत्ति हुई, मन्त्राद शिव के बीरवद्र, पुण्ड्र, और ओषध ये तीन विशिष्ट गण के प्रोक्त की में के द्वारा ही तीन विशेष प्रकार के सम्प्रदाय प्रचलित हुए जिनके नाम पर ही ये सम्प्रदाय कहलाते हैं, इन सब में ओषध सम्प्रदाय ज्यादा लोकप्रिय हुआ, क्योंकि उनके माध्यम से तंत्र का प्रभाव तुरन्त और प्रबल होता है

बीजद्वय साधना के पांच विशेष नियम होते हैं (१) वह रम्यान में ही रहता है और वही पर नुबों को छाती पर बैठ कर वाचना सम्पन्न करता है, (२) वह चिता के अंगारों पर ही भोजन पकता है, और जीवन खाता है (३) उसके सन्ती सापी भूत प्रेत होते हैं उनके माध्यम से ही कार्य सम्पन्न करता है, (४) वे साधक भगवान रख की श्रमता इष्ट मानते हैं और ओषधनाम को अपने गुरु मानकर कार्य सम्पन्न करते हैं, (५) तंत्र की विशिष्ट क्रियाओं में हमेशा रक्त रहते हैं, और ऐसी विशिष्ट सिद्धियां प्राप्त कर लेते हैं जो आज के युग में लभ्य प्रभाव है, या अविश्वसनीय हैं।

यै प्रारम्भ से ही तंत्र के प्रति आकर्षित था और कुछ तांत्रिकों के पागलपन की, उन्होंने भूते माय्य मोह्य वशीकरण आदि क्रियाएँ लिखाने की कोशिश की पर इससे मेरा मन नहीं भरा, मैं तो कोई ऐसी साधना करना चाहता था जो अपने आप में शरीरिक हो, मैं बुनियात को विश्वास देना चाहता था कि मेरी भी कुछ हस्ती है और मैं भी ब्रह्म कुछ कर के दिखा सकता हूँ, मानव के स्वप्न में ही भूत नये के बीच प्रेतद्वारा जीवन काट कर में बढ़ा हुआ था, इसलिए मेरे मन में साधना के प्रति आकर्षण ऐसी विलक्षण वाधनाओं के प्रति जख्म से ज्यादा रुचि थी

रम्यान शान्त प्रयोग

यह रम्यान जागृत करने तो आ जाय और आप उसे जागृत भी कर दें पर यदि उसे समाप्त करने की क्रिया ज्ञात नहीं हो तो बड़ी भारी मुसीबत का सामना करना पड़ सकता है अतः जब साधक को रम्यान जागरण करने की सिद्धि प्राप्त करनी हो तो साथ ही साथ उसे चाहिए कि रम्यान शान्त करने की विधि भी जान हो।

यह भी तीन दिन का प्रयोग है, त्रयोदशी की रात्रि को रम्यान में जा कर चिता की गरम अपने शरीर पर लगा ले और सर्वथा न हो कर पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और फिर भगवान भूतनाथ का नाम उच्चारित कर अपने चारों ओर चिमटे से रक्षात्मक घेरावना लें।

इसके बाद निम्न मन्त्र को छः घण्टे तक जपे इसमें किसी भी प्रकार की मातापिता श्रम्य उपकरण आदि की जख्म नहीं होती केवल तीन दिन यह मन्त्र जप करने पर रम्यान शान्त सिद्धि प्राप्त हो जाती है और फिर वह जब भी चाहे जागृत रम्यान को शान्त कर सकता है, यही नहीं अपितु इस साधना को सिद्ध करने के बाद यदि किसी को भूत प्रेत परेशान कर रहे हो या उपद्रव कर रहे हो तो उसे बांध सकते हैं, तथा उसका प्रभाव समाप्त कर सकते हैं।

मन्त्र

ॐ भं भं भूतनाथाय शान्त रूपायै रम्यान शान्तायै भूतनाथाय नमः

यह तीन दिन का प्रयोग सम्पन्न करने पर उसे यह सिद्धि प्राप्त हो जाती है और इसके द्वारा वह किसी भी प्रकार के उपद्रवी भूत को अपने वश में कर सकता है या जागृत रम्यान को शान्त कर सकता है उसे किसी प्रकार का कोई नय या डर जीवन में व्याप्त नहीं होता।

और और मेरी कई ओड़ों से भेद हुई, मैं भी-
और समझ समझान में ही व्यतीत होने लगा और मेरा
यह-वह भी-वहों की तरह हो गया, कई बार तो मुझे
मान किने छः छः भूते भीत जाते पर भूत स्नान का
योग ही नहीं रहता और न स्नान करने की इच्छा होती
पर इस सम्प्रदाय के कुछ शोधों से सम्पर्क स्थापित करने
पर और उन लोगों से मिलने पर मैं तन्त्र की छोटी छोटी
बिनाए स्वयं सीख गया था और छोटे मोटे कार्य में कर
लगा था, मैं देखता था कि सीधे सादे दिखने वाले श्रम
मन्त्रों में गुजब की ताकत है और वास्तव में ही इनके
भावना के आकार को जमीन पर उतारा जा सकता है,
यह भी बोधा जा सकता है और नृत्त से शब्द उन्वाहित
होते ही सामने वाले की समाप्त किया जा सकता है।

उन्हीं दिनों पुः समाचार मिला कि बुनागड़ में एक
लोक इस दिनों आया हुआ है जो कि पहले तो मध्य
देश के जंगलों में साधनाएं करता था परन्तु कुछ कारणों
से वह बुनागड़ आया हुआ है और वहीं पर साधना
सम्पन्न कर रहा है।

मैं राजस्थान का रहने आया हूँ और गुजरात में प्रान्त
के निकट ही है, बुनागड़ गुजरात का प्रसिद्ध पहाड़ है, और
इसके पास ही एक काफी बड़ा श्मशान है, जिसमें योगी
मंत्र, सम्पात्ती विचरण करते ही रहते हैं, बुनागड़ के
पास ही एक बहुत बड़ा पहाड़ है, जिसकी चिड़ पहाड़
बना जाता है, और कहते हैं कि प्राण भी यहाँ पर कई
उत्तम कोटि के साधु सम्पात्ती विचरण करते रहते हैं,
और यथा-कथा देखने भी मिल जाते हैं।

मैंने बस का टिकट कटवाया और अहमदाबाद से शेरा
हुवा, बुनागड़ का पहुँचा, बुनागड़ के बाजार में पूरा तो
मुझे लगा कि यह धाम गुजराती शहर है और प्राचीन
तरीके से बसा हुआ है, शहर में मुझे कोई विशेषता नजर
नहीं आयी, बुनागड़ शहर से लगभग पाँच मील दूरी
माँवर दूर प्रसिद्ध पहाड़ है, और इसी के एक किनारे पर
यह श्मशान है जिसके बारे में मैंने सुना था कि कोई

श्मशान जागरण प्रयोग

शोधक साधना के लिए कई बार श्मशान में
जाकर श्मशान जागृत करना होता है, जागृत करने
पर पूरा श्मशान जाग जाता है, और जितने भी
भूत प्रेत होते हैं वे चारों तरफ से आ-आ कर एकत्र
होते रहते हैं, और भयानक दृश्य उपस्थित करते
हुए, नृत्य करते रहते हैं।

यह गोपनीय प्रयोग है पर फिर भी जो इस साधना
में विशेष सफलता प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें श्म-
शान सिद्धि तो प्राप्त करनी ही पड़ती है।

नीचे मैं उस शोधक के बताये हुए, विधिष्ट
प्रयोग की बता रहा हूँ जिससे कुछ ही क्षणों में
पूरा श्मशान जागृत हो जाता है और जागृत हो
जाने के बाद किसी भी भूत को कोई भी कार्य दे
तो वह तुरन्त सम्पन्न कर लेता है।

यह प्रयोग कृष्ण पक्ष की यथोदशी से अमावस्या
अर्थात् तीन दिन करना चाहिए, आधी रात को
श्मशान के मध्य में पश्चिम दिशा कि और मुँह
कर बैठ जाय अपने चारों ओर लोहे के चिमटे से
भगवान रुद्र का नाम ले कर रक्षात्मक घेरा बना
दे और फिर निम्न मन्त्र का बराबर उच्चारण
करता रहे कुछ ही क्षणों में श्मशान जागृत हो
जाता है और जागृत श्मशान को देखने का तो
अपना ही एक प्रानन्द है।

श्मशान जागरण मन्त्र

क्रीं क्रीं कालिके भूतनायाय रौद्र स्थायै भूत प्रेत
विशाच जाग्रय श्मशान उन्वाषय क्रीं क्रीं कालिके
फट्।

वास्तव में ही यह थोड़ा तीक्ष्ण प्रयोग है पर
जिन साधकों में हीसला हिम्मत हो उन्हें यह प्रयोग
अवश्य सन्तान करना चाहिए।

सौवर्ण्य आता हुआ है और साधना सम्पन्न कर रहा है।

इसमें कोई भी शक नहीं कि सन्ध साधना अपने आप को मिटा करके ही प्राप्त की जा सकती है, यदि आप में त्याग करने की प्रवृत्ति है यदि अपने आदर्शों विरुद्ध करने की भावना आप में है, यदि प्राप्त अपने जीवन को शक्ति पर लगाने की हिम्मत रखते हैं, तो अवश्य ही साधना के क्षेत्र में उतर सकते हैं, और जो अपने जीवन को पूरी शक्ति से चलाने की हिम्मत रखता है, जो अपने आप को मर्त्या के क्षेत्र में समर्पित कर देने की क्षमता रखता है, वही सन्ध के क्षेत्र में बहुत कुछ प्राप्त करने की क्षमता रखता है।

मैं तुम्हारा घामसा पहाड़ के आरा पास जा पहुँचा और पहले तो पहाड़ की चोटी की ओर बढ़ा, चोटी पर पहुँचने के लिए ठेक तक सोड़ियाँ बननी हुई है और सबसे ऊपर जगदम्बा की मूर्ति स्थापित है, चलाई श्रेयस्म कठिन और मुश्किल है परन्तु मैंने निश्चय किया कि भगवान् शिव की आराधना करने और उनके करदाता प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है कि मैं भगवती जगदम्बा के दर्शन करूँ।

जब तक मैं पहाड़ से नीचे उतरा तब तक लगभग साँके ही गई थी मैं कुछ से थका हुआ था पहाड़ के नीचे दुकानें थी और मैं दुकान के सामने ही रुक ही गया, मेरा शरीर और डीढ़ डोल देखा कर दुकानदार काँप सा गया, लम्बी लम्बी अडाएँ, बड़ी बड़ी घाँस और लारे शरीर पर भली राख से उरी आच्छादित किया कि मैं कोई पहुँचा हुआ साधू हूँ जगत्, मुझे दुकान के किनारे पर बैठने के लिए कहा और पास से ही कुछ पकियाँ, मिठाई और सब्जी खरीद कर ले आया मेरे सामने रख दी।

मैंने बिना इतर उधर देखे 'उट' कर भोजन किया फिर वहाँ से उठ कर बिना उसको कुछ कहे 'समझान' की ओर बढ़ गया, मुझे समझान के कितने प्रकार का भय भय नहीं रहा था क्योंकि मेरा अधिकांश समय समझान में ही व्यतीत हुआ है, और छोटी मोटी साधनाएँ सम्पन्न करने से समझान से एक प्रकार का सम्बन्ध सा हो गया है, अब



तो यदि हकीकत में कहा आप तो शहर या गांव में घराम ही नहीं मिलता, समझान में घराम से लगभग तान कर तो जाता हूँ और एक दो मिनट में ही खरिद भरने लग जाता हूँ।

मैं जब उस विद्यालय समझान में गया तो रात फिर आई थी, अगर अभी तक रोशनी समाप्त नहीं हुई थी मैंने शहर उधर चक्कर लगाया तो मुझे यहाँ कोई प्रौढ़ नजर नहीं आया, मैंने समझान में रुकने वाले दोन से दस संबंध में पूछा तो उसने जवाब दिया कि पिछले रातों में एक सप्ताह तक चोरी अवश्य इस तरफ आया हुआ है, पर अभी तो पांच सात दिन समझान में ही रह जाता है और अभी गायब ही जाता है तो पता ही नहीं चलता कि कहाँ गया है उसके भाते का और जाने का कोई निश्चय तोर डिकाना नहीं है इसके बजाय उसमें क्रोध की भाषा जरूरत से आया है और आदेश में वह कुछ भी कर बैठता है, उसने अपनी घटना सुनाते हुए कहा कि मैंने एक दिन उनके चिता अपनी होमे, थक कर जाते

के लिए जाता है। उसे विमर्श से मेरी पीठ पर आधातक
बार कर दिया जिसका निशान अभी तक मेरी पीठ पर
दिखावा है।

फिर मुझे समझाते हुए कहा यदि पुनः उस श्रीचक्र से
मिलने के लिए आगे हूँ तो आनन्द पुनः गलती कर रहे हो
यह भी प्रकट हो चुका है। पुनः का मत मोला व्यक्ति है और सारे
शरीर में गुस्सा फैला हुआ है। किम समय वह क्या कर
दे। इसका कुछ पता पता नहीं है, ऐसा श्रीचक्र लाभ तो
कम करता है, पर हाकिमवादा पहुँचा देता है।

जैसे उस शरीर को नाच सुनी धनधुनी कर दी और
यमजान के एक कितारे पर ही जाकर सोन कर लेट गया,
वह कर जो तो यम-माया का ही, लेटते ही हुन भीड़
आ गई।

कुबहु मैं कितनी देर तक लेटा रहा, मुझे कुछ पता
नहीं चला तभी मेरी पसलियों में जोर से टोकर लगी
मैं अक-बका कर उठ खड़ा हुआ, देखा तो सामने एक
विशाल कान, शरीर सम्बा भीड़ा नील-नील सारे शरीर
पर चाल गयी हुई, लगभग गुना सा एक श्रीचक्र खड़ा

भूतों को वश में करने का प्रयोग

श्रीचक्र सम्प्रदाय का ज़ावर ही भूतों के बीच रहता और उनसे मनोवांछित कार्य सम्पन्न
करता है, जो ही भूत साधना करने के कई प्रयोग हैं पर यह प्रयोग अपने आप में तुरन्त सिद्धिदायक
है और इससे कई भूत जीवन में आ जाते हैं। तरह उसके पास बने रहते हैं और वह जो भी आज्ञा देता
है, उसका पालन करते रहते हैं। भूतों से घर का काम करवाना, पैसे की मांग करवाना, सेतों में
काम करवाना और जंगल चराना, मन चाही वस्तु प्राप्त करना, दूर बैठे हुए व्यक्ति को संदेश भेजना
आदि सभी कार्य इनके द्वारा सिद्ध किये जा सकते हैं। यह प्रयोग मेने कई लोगों का कराया है और
पहली ही बार में इससे सफलता मिल गई है।

अनायासा की रात्रि को साजे हुए की भस्म दिखा कर उसके ऊपर पालती भार कर बैठ
जाय और अपने चारों ओर त्रिमूर्ति से घेरा बना ले फिर भगवान् रुद्र की मंत्र ही मन पूजा कर निम्न
मन्त्र को छः घण्टे तक बराबर जपता रहे तो इसका मन उपरिष्ठ भूतों में से लगभग पांच छः भूत
पूर्णतः उसके वश में हो जाते हैं और उसका मन चाहा कार्य सम्पन्न करते रहते हैं।

सन्त्र

ॐ रुद्र भुतनाथाय नमः भूत वश कुरु कुरु आज्ञा पालय पालय सदाय हुं हुं फट् ।

सन्त्र जपते समय कई प्रकार के उपद्रव और विचित्र दृश्य देखने को मिल सकते हैं, पर इससे
पवराने की जरूरत नहीं है छः घण्टे के बाद अवश्य ही छः भूत निश्च हो जाते हैं और वे जीवन भर
साधक के वश में बने रहते हैं। यह प्रयोग मेरा आज्ञाया हुआ है केवल एक दिन का प्रयोग है और
निश्चित ही सिद्ध होता है।

फिर
भी
श्रीचक्र
इस
महानि
है,
जाना
सत्ता
प्राप्ति
श्रीचक्र
वश
महा
ज्ञान

था जिसकी आँखें रात भर भरसू का चुकका पीने से भाल गुन हो रही थी, आँखों से जैसे जंगल के बरस गये थे, उनकी ओकर का प्रहार ही इतना जबरदस्त था कि मैं पल साँस ही सोता कर रहा था, मैं एक कम से बड़ भड़ा हुआ, मैं अचानक तथा बिना किसी वजह छोड़ हीता बाहिर जिनकी चर्चा भी सुन रही थी और कहते हैं कि इस काफ़ी कुछ विदिया प्राप्त है।

मुझे देखते ही वह खड़ी होकर मुझे मे भ्रम जलता हुआ बोला तबले कुत्ते, हुरामी, काँच पकर भगवान शिव के चमिर ने तुम्हें भेटने की हिम्मत कैसे पड़ी, यह तेरे और का घर है, बिना पूछे तुं घर आया ही कैसे, यहाँ पर मेरा राबल है और मैं इसका मालिक हूँ और कहते कहते पन्द्रह बीस मालिका उसके मुँह से निकल गयी।

मैं तो अभी तक कुछ कह भी नहीं पाया था कि इससे पहले ही मुझे से वह बहकने लगा था, मैं कुछ निवेदन करने का ही रहा था कि उसने अपने हाथ में पड़ा चिमटा उठाया और बोरी से मुझे पीटने के लिए मेरे पीछे लपका पड़ा।

ऐसे समय आपने से कोई बात नहीं होता, इसके बजाय अपने भयको पूरी तरह से आत्मसमर्पित कर देता ज़ादा बुद्धिमानी होता है, मैं उसके चरणों में गिर पड़ा और कहा कर उसके दोर्भाग पाँच पकड़ लिये, मैंने कहा आप चाहे मुझे मारिये, चाहे ब्रह्मादे, मैं तो आपसे ही मिलने के लिए आया हूँ, और आपका ही एक गण हूँ, आप ही मेरी रक्षा करें।

मुझे इस प्रकार अपने चरणों में पड़ा देखकर उसी पीड़ी का आई और बिस्ते को एक ओर रिक कर मेरे बाँवों को पकड़ कर सटके के साथ मुझे खड़ा किया पूछा तुं यहाँ किस को पूछ कर आया है, बितने तुं यहाँ भेजा है, यहाँ तुं क्या करने आया है, यह भगवान शिव का जीना-स्थल है, यहाँ भगवान शिव रोज रात की भूत-प्रेतों के



साथ नृत्य करते हैं तुने जाने के लिए भिक्षा कहा।

अब तब मैं संभल चुका था और अपने पैरों पर हाथ जोड़ कर बड़ा हो चुका था, मैंने निवेदन किया मैं बसपन से ही भीषण हूँ और अधिकतर समय भगवान में ही पड़ा रहता हूँ, आप जैसे गुरुओं की आज में मैं भटक रहा था जब मुझे आपके बारे में पता चला तो मैं यहाँ आपके दर्शन के लिए आ गया मेरी दुज्जा है कि मैं आपकी सेवा करूँ और बदले में आप जो कुछ भी मुझे शिक्षा का चाहें तो यह मेरे ऊपर आपकी बड़ी कृपा होगी।

मेरी देव भूषा और मेरे शब्दों का शायद उस पर असर पड़ा और उसका गुस्ता मोड़ा भान्त हुआ, बोला भल मेरे साथ, यदि तुं कुछ सोचना है तो फिर जेले की तरह काम कर, गुरु से पहले उठने की कोशिस कर और गुरु के सोने के बाद सोने का ध्यान कर, अन्यथा मैं तुने मार कर यहाँ भगवान रुद्र की मीन लगा दूँगा, और ऐसा कहते कहते चिमटा उठा कर यह एक और को त्त पड़ा।

मैं भी उसके पीछे पीछे चल पड़ा, वास्तव में ही जुनागढ़ का भगवान बहुत बड़ा है, काफी दूर चलने के बाद

एक धड़ की तरह समझान के किनारे ही है वहीं पर वह जाकर बैठ गया, जैसे देखा कि पारों तरफ पन्द्रह बीस नर मुण्ड विद्यारे हुए हैं, कुछ शराब की बोतलें भी उधर उधर बिखरी हुई हैं और मांस के टुकड़ों पर कुत्ते गीध-भसोट कर रहे थे, भयंकर प्रपंची इत सब के प्रति निर्वेष्ट और निरि-त था, यह चरण की उमरी हुई जंटाओं पर

एक तरफ बैठ गया और मेरे धारे में पुछने लगा, मैंने अपनी बात कह गुनवाई, उसने कहा तुम दिन भर यही रहोगे, हिलोगे झुगोगे नहीं, उधर उधर भटकोगे नहीं, मैं खान की यही पर तुम से मिलुंगा और ऐसा कहते कहते वह जंगल की ओर निकल गया।

मैं बिन भर वहाँ बैठा रहा मुझे तो उनकी भाशा का

पुरुष को स्त्री में परिवर्तित करने का प्रयोग

जिस घोघड़ के पास मैं रहा था यह उनकी बहुत बड़ी कृपा है कि उन्होंने इस अद्भुत चमत्कारिक प्रयोग को भी मुझे पूरा तरह से सिखा दिया था और मैं पाठकों के हित के लिए इस प्रयोग को भी योजनीय नहीं रखना चाहता।

यह १२ दिन का प्रयोग है। समावस्था से इस साधना का प्रारम्भ करना चाहिए, समझान में ठीक आधी रात को किसी मुद की लक में निहाल कर उसके तीन पर बैठ कर पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर रक्षाक्ष भाजा से निम्न मंत्र को ५१ माला मंत्र जप करना चाहिए।

मंत्र रूप से पूर्व नुद को पत्रों से कहला कर पवित्र करना चाहिए और स्वयं के शरीर पर तबि मुँह की भस्म को लगा लेना चाहिए भस्म में किसी प्रकार की धबराहट न रहे और अविचलित भाव से बराबर मंत्र जप करता रहे, मंत्र जप करते समय कई प्रकार के दृश्य या विम्व दिखाई दे सकते हैं पर इन्हें न तो धबराना चाहिए और न विचलित होना चाहिए, साधना करते समय अपने साथ गुरु के चलावा और किसी को ले जाना बजिस है।

मन्त्र

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं देह परिवर्तनाय क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं फट्।

इस प्रकार १२ दिन इसका नियमित रूप से जपने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है, इसके लिए अन्य किसी भी प्रकार के उपकरण आदि की जरूरत नहीं होती और पहली बार में ही साधना सिद्ध हो जाती है।

जब इसका प्रयोग करना है तो इस मंत्र को एक या दो बार उच्चारण कर सामने वाले पर जोरों से धुक दे तो सामने वाला यदि पुरुष होता है तो वह तुरन्त स्त्री हो जाता है और यदि वह कोई स्त्री होती है तो तुरन्त पुरुष रूप में बदल जाती है।

यह प्रयोग मेरा आजमाया हुआ है और सैकड़ों बार मैंने इस प्रयोग को सिद्ध किया है, उस घोघड़ का ही यह प्रसाद स्वप्न का न होना प्रमाण हुआ है जो कि वास्तव में ही एक लोप होती हुई चमत्कारिक विद्या और प्रयोग है।

पायन करणा ही था, अब लगभग रात होने को आई थी वह लौट आया, इस बीच प्रमाण में कई लोग अपने संबंधितों को जमाने के लिए आए थे और जल्द जगह चिताएं जल रही थी, मैं निमित्त प्रकट न हो सकने के लिए चिताओं की ओर बढ़ा था, बीच में मनुष्य का जीवन बरबाद हो रहा था, और आखिर मनुष्य की दली शक्ति के आना होता है।

जब श्रीपद आपस लौटा और मुझे वहीं धीरे-धीरे देखा तो थोड़ा प्रकट हुआ बोला तुम कुछ पूछ लगी है तो कुछ पूछ कर जा के, मुझे भी मर्गी है और ऐसा कहते कहते वह मुझे लेकर एक चिता के पास के गया, चिता धापी से जलाया चल चुकी थी और संबन्धी अपने घरों की लौट चुके थे, उसने एक मुर्ते की ओर धीरे की ओर के भीले पड़ी हुई थी उसमें पानी डाल कर चिता पर रख दिया और उसमें कहीं से चावल ला कर डाल दिये, थोड़ी देर में बाध्य पक गये तो उसने एक दूसरी चोपड़ी में चावल डाल कर मुझे जाने के लिए दिये और बाकी उस खांखो में ही जगने चावल का कर उगी ने पानी भर कर पिटा और टकार के कर आपस प्रयोग के पेड़ के नीचे आकर बैठ गया।

अब तक रात में लगभग दस बज गये थे, उसने मुझे जाने बात बताने के लिए कहा और मैंने देखा कि उसने हम दोनों के चारों ओर एक निमटे से घेरा बनाया है और फिर वह कुछ समय बुझाने लगा मैंने अनुमान लगाया कि यह प्रमाण लगाने का मन्त्र है लगभग पांच मिनट बीते होते, कि प्रमाण के चारों ओर से भूत-प्रेतों के उड़ के उड़ घाते हुए दिखाई दिये चारों तरफ से ही झुल्ला करते हुए भूत-प्रेत, पिशाच, राक्षस आदि थे और मैंने देखा कि कई भूत प्रेत नीकर की तरह उन श्रीपद से व्यवहार कर रहे थे चायद इनमें से अधिकांश भूत श्रीपद ने सिद्ध कर रहे हो, मुझे कोई विशेष डर नहीं लगा क्योंकि इससे पहले मैं स्वयं जागरण किया और भूतों की सिद्ध करने की किया सीख चुका था।

थोड़ी ही देर के बाद श्रीपद ने मुझे उस री में ही

बैठने के लिए कह कर लुप री के बाहर बुलवाया और उन भूत प्रेतों के साथ कुछ किया करने लगा, ऐसा लग रहा था कि वे कोई विशेष तंत्रिक किया सम्पन्न कर रहे हो, यह मेरे लिए सर्वथा आवश्यक था, भूतों के साथ मानव कोई साधना सिद्ध करे, यह एक अतोन्नी बात थी पर मैं पक्षी आदि देख रहा था।

इस प्रकार पूरी रात बीत गई, सुबह लगभग चार बजे वह आपस घपने री में आ गया और मन्त्र पढ़ कर प्रमाण को शान्त कर दिया, थोड़ी देर में चारों ओर शान्ति हो गई वहां पर भूत प्रेतों का कोई अस्तित्व वाली नहीं बना था।

जब वहां से उठकर बरगद के पेड़ की ओर हम बढ़ रहे थे तो श्रीपद ने कहा मैं अभी मेरे श्रीपद नाई बहिन है और इनमें से कुछ तो बहुत ही उष्ण कोटि के साधक है इनमें से कुछ की मैं श्रीपद साधनाएं सिखा रहा था और एक दो से सीख रहा था।

वास्तव में ही यह श्रीपद साधनाएं ही अत्यन्त बिल-अगर और लेखनी दिखाई देती है, अधिकांश साधक या श्रीपद को भी भये री से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं करते जब कि यह तो उन भूतों के साथ ही उठ बैठ रहा था, नाच रहा था, बरगद ने स्नान कर रहा था और मन्त्र पढ़ता हुआ, कुछ विशेष क्रियाएं सम्पन्न कर रहा था, मैंने मन में सोचा कि यह कोई साधारण श्रीपद नहीं है बहुत ही पढ़ता हुआ है और कुछ ऐसी साधनाएं सम्पन्न करने की कोशिश कर रहा है जो अब तक अज्ञात हैं, अन्तरिक्ष से या शुन्य से इन प्राचीन श्रीपद आत्माओं की मर्तों के धन से इनने यहां एकल किया होगा और उनके साधनाएं सिखा रहा होगा या उनके साधनाएं सीख रहे होंगा, दोनों ही स्थितियों में यह श्रीपद प्रबल है और वास्तव में ही इसके पास उच्चकोटि की साधनाएं होना संभव है।

एक दूसरे ही दिन एक अजीब घटना घट गई, जिते मैं खुशाना आहूत हुए भी नहीं भूला पा रहा हूँ, नूतान

के ही सेठ हरीभाई जीयाजी साईं पडेय अस्तुत ही प्रता-
ह्य व्यक्ति है और पूरा गुलरात उन्हे जानता है पर उन्हें
बुद्धि देने का और लड़ा लगाने का बुद्धिमान था जिसकी
बुद्धि से यह ऐसे साधु फकीरों के चक्कर में लग रहा था,
जो उनके एक ही लड़का या बिसका नाम हरीभाई था,
इसलता लड़का होने के कारण वह लड़ प्यार में पड़ा
हुआ था इसके बलावा सेठ जी के कोई स्वतन्त्र नहीं थी।

पहाड़ के पास में सेठजी ने मेरे बारे में उस दुकान-
दार से श्रुता होगा और मुझे लोजते हुए समोगवश उस
दिन शमलान में आ गया दिन लगभग ग्यारह बजे थे और

मैं और श्रीधर दोनों बरगद के नीचे पतारे हुए बैठे थे,
श्रीधर कुछ बक गया था तभी सेठजी और उसके पुत्र ने
आकर प्रणाम किया वह अपने साथ कुछ मिठाई और
कुछ फल भी लाये थे, जो कि सामने रख दिये, फिर
बोला मैं अनुक सेठ हैं और मेरा नाम पूरे गुलाब ने
मण्डूर है।

मुन्ते ही श्रीधर उठ खड़ा हुआ और बाप बेटे दोनों
को धुरते लगा, एक दो मिनट तक तो बाप बेटे को धुरता
रहा और फिर कहा भला जा यहां से ताले, हरानी, कुत्ते
..... वप्यों के लालच में यहां मारा है।

श्रीधर सिद्धि

श्रीधर साधना के लिए पहले श्रीधर सिद्धि प्राप्त करनी जरूरी होती है वह प्रयोग-गोपनीय
प्रयोग इस श्रीधर में ही मुझे प्राप्त हुआ था जबने बताया था कि लोग श्रीधर साधना करते हैं और
सफलता प्राप्त नहीं कर पाते इसका कारण श्रीधर सिद्धि प्राप्त करना नहीं होता है, जब तक साधक
इस श्रीधर सिद्धि को प्राप्त नहीं करता तब तक श्रीधर साधनाओं में से किसी भी साधना में सिद्धि
नहीं मिलती।

इसका प्रयोग बताते हुए, उसने बताया था कि अभावराजा की राशि को किसी ताजे मुर्दे की
मंश ला कर उसका शिबलिंग बनाये और अपने सामने उसको स्थापित कर दें, फिर पश्चिम की
ओर मुंह कर अपने सामने वह शिबलिंग रख कर उसे रोद्र रूप से स्मरण करते हुए, लगभग छः
घंटे निम्न मन्त्र जप करें, ऐसा करने पर श्रीधर सिद्धि प्राप्त हो जाती है और उसे कई सिद्धियां तो
स्वतः प्राप्त होने लग जाती है, इस श्रीधर सिद्धि को सिद्ध करने के बाद कोई भी श्रीधर साधना की
शाय तो उसे सफलता मिलती ही है।

मन्त्र

ॐ वीर भूतनायाय श्रीधर महेश्वराय स्वा स्वा हुं हुं फट् ।

यह प्रयोग केवल वर्ष में एक बार साधना की राशि को ही करना चाहिए इससे श्रीधर
का शरीर सुरक्षित रहता है उस पर किसी तांत्रिक जिवा का अंतर नहीं होता, और उसके शरीर
में अनुकनीय बल साहस और पराक्रम आ जाता है, इसके बलावा उसे छोटी मोटी कई सिद्धियां स्वतः
प्राप्त हो जाती है।

सेठजी कीट की तरह खड़े रहे बोले मैं ही इनके पास खाया हूँ आपकी कीट पुछ रहा है और उसने मेरी और संकेत कर दिया, मैंना, जब रहा था कि वह शायद मुझ से ही मिलने के लिए आया था, क्योंकि दुकानदार से चलते मेरी ही उम्र कद काठी लम्बाई चौड़ाई के बारे में जानकारी प्राप्त की होगी।

मुनते ही श्रीपद बिखर गया और चिमटा उठा कर सेठजी की पीठ पर दे मारा कहाँ सारे जन्म मुझे यह दिया कि यहाँ से चला जा फिर यहाँ तेरे बाप का राज है गिनती वजह से यहाँ सबकुछ कर रहा हुआ है।

सेठजी के बैठे को गुस्सा आ गया और उसने चिमटा अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया, श्रीपद के लिए तो यह अप्रत्याशित था कि कोई उसे बेकमज कर दे, उसने जोरों से चिमटे को खींचा और दो तीन चिमटे उस सेठ पुत्र की पीठ पर दे मारे, बोले सारे में तुझे मजा चखाता है, जा तु-अभी औरत बन जा हीगरे कहीं के।

जान बैठे दोनों पवता गये क्योंकि दूसरे ही क्षण बैठे की गलत बैठकलाप आना पुछ ही गया था, उसका चेहरा खीरत की तरह बनने लग गया था और पांच मिनट के बादर बादर वह सेठ पुत्र पूरी तरह से खीरत बन चुका था, इतना होने पर भी श्रीपद का गुस्सा शान्त नहीं हुआ था और उसने सेठ पुत्र के गले को पकड़ कर उसके सारे शरीर के कपड़े उतार कर फेंक दिये।

मैं दिन या रात में ही आधा फन्दा पहले को भर-पूर हटा कड़ा खान युक्त था, यह बिल्कुल बुबली सी श्रीरत बन कर रह गया था, बाकी कुछ सामान हो गयी थी बक्षस्यल पूरी तरह से छपर आया था और किसी भी एडि से स्त्री हित में कोई एक मुन्हा नहीं रहा था।

बाप ने अपने नम्र बैठे को श्रीरत के रूप में देखा तो आधा बेहोश सा हो कर श्रीपद के चरणों में गिर पड़ा उसने कहा कुछ से गलती हो गई मुझे मात्रुम नहीं था, इतना बड़ा अनर्थ हो जायेगा यह मेरा इकलौता पुत्र है,

है, इसके मलाया मेरे और कोई संतान नहीं है, और सेठ और जरी के पीले लगा।

श्रीपद ने कहा सारे मुझे पहले ही कहा था पर तु अपने धन के बारे में हार था अब तो वाला सेना यह बेटा एक महीने भर तक ऐसे ही गुनागड में भूकेगा, एक महीने भर बाद का जाना मैं इसे आपित पुत्र बना दूँगा पर तब तक तू जितने भी डाक्टर वैद्य, हकीम हो उन सब से ईलाज करवा लेना, मेरे अलावा इसको कोई ठीक नहीं कर सकता और कहते कहते उसने हाथ में चिमटा उठा लिया।

पिता पुत्र दोनों भागे जीवने की कोई गुंजाहट नहीं थी, पर मैं इस पली पटना की देखकर आश्चर्यचकित था कुछ ही मिनटों में श्रीपद ने उस सेठ पुत्र को पूरी तरह श्रीरत बना दिया था।

बाद में जब श्रीपद का कोध कुछ शान्त हुआ तो मैंने उससे निवेदन किया यह सेठ का इकलौता बेटा है, आप उसे वापिस जीक कर दें अन्यथा उसके घर का चीज-वस्तु नष्ट जायेगा, श्रीपद ने कहा ज्यादा चापलूसी मत कर, एक महीने भर तक तो उस सेठ तो भटकने ही दें तभी सारे वो पता भलेना कि श्रीपद से टकराने का क्या दख होता है।

बाद में मुझे श्रीपद से कई साधनाएँ मिलीं, वास्तव में ही उसका दिल बहुत ही कोमल और भावुक था कुछ ऐसी उच्चकोटि की क्रियाएँ और विद्याएँ भी मुझे मिलीं जो कि धन्य कहीं से भी प्राप्त होनी कठिन थी मुझे, यह भी स्मरण है कि महीने भर बाद सेठ अपने उस खीरत बनी हुई बैठे को ले कर अपने परिवार के साथ और गुजर-राज के घाट दस-सहस्र पूर्ण व्यक्तियों को ले कर श्रीपद के चरणों में आया था और सभी ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि आप कृपा कर इसे वापिस पुत्र बना दें और मेरे देखते देखते ही श्रीपद ने कुछ मन्त्र पढ़ा और सेठ पुत्र के चेहरे पर मुक किया, दूसरे ही आण सेठ पुत्र अपनी पूर्ण प्रकृति में आ गया था, इसके कई गुनागड के प्रति-ष्ठित ध्वनि साक्षी है, और वह सेठ पुत्र हरीभाई पाय भी जीवित है।

अल्हड़ भैरवी के सात चमत्कार, सात साधनाएं

तन्त्र में प्रत्येक साधक को "भैरव और प्रत्येक साधिका को भैरवी" कहा जाता है, समय समय पर दुर्गों को संवेष्टा तन्त्र के क्षेत्र में साधिकाओं के कुछ ही गन्तव्य होते हैं, कुछ ऐसी साधनाएं मिलती हैं जिन्हें देखकर दावों वाले अंगुली बजाना पड़ जाता है। अल्हड़ भैरवी भी ऐसी ही एक तांत्रिक साधिका थी।

जब मैं तन्त्र के क्षेत्र में काफी कुछ साधनाएं सीख चुका था, और जामनाथी साधना सम्पन्न करने के बाद स्वामी साधना को पार कर प्रोषट, साधनाओं में प्रवेश करने के बाद तब मैं नेपाल के दक्षिणी भाग में स्थित लाली भुम्बुर के पास ही एक सफ़टहर में रहता था। एक तांत्रिक होने के नाते मैं अपने पास किसी प्रकार की कोई सामग्री रखता था और न किसी प्रकार की आवश्यकता हो अनुभव करता था। मेरे पास तीन धार शिष्य मैं सब और तीन बार शिष्याएं भैरवी थी, जो साधना के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त की और अब रही थी।

यह स्थान नेपाल का पूर्वतः तांत्रिक स्थान कहा जाता है, यहां के पार्श्व क्षेत्र में तन्त्र विस्तृत हुआ है और उच्चकोटि के तांत्रिक यहाँ था। कई तांत्रिक साधनाएं सम्पन्न करते हैं, वापसी, प्रोषट, शिष्य, भैरव, प्रदि उच्च कोटि के तांत्रिक मुझे यहाँ पर विचरण करते हुए और साधना करते हुए मिले थे, तन्त्र के क्षेत्र में प्रविष्टि मां योग मर्या को मैंने यहाँ पर देखा था, और यह मेरा सीमांत था कि मैंने तीन दिन तक उनके पास रह कर तांत्रिक साधना सम्पन्न की थी, स्वामी साधना

उन्होंने ही मुझे सिखाई थी और इसमें मुझे सीधा प्रदान की थी।

भारत में हिमालय, गंगोत्री, मध्य प्रदेश के जंगल जंगल का कलाकृत भुम्बुर और आसाम का कामरुपा का जंगल मेरे प्रिय क्षेत्र है वहीं पर नेपाल में पशुपतिनाथ का मन्दिर और दक्षिण काली का क्षेत्र मेरे लिए अत्यन्त सम्माननीय रहा है, यहां पर विचरण करते हुए मुझे कई उच्च कोटि के साधक योगी पति गंगाजी, भैरव साधक साधिकाएं मिल जाती हैं और जिसके द्वारा मुझे काफी कुछ सीखने का अवसर मिला है।

अब तक तन्त्र के क्षेत्र में मेरा नाम बहुत काफी मशहूर था, यह था और उच्चकोटि के प्रादिक भी मुझ से मिलते और सीखने का अवसर पाने की इच्छा करते थे इस क्षेत्र में वासुगमन विद्या और वृत्त विद्या की साधनाएं भी निष्ठ कर चुका था, और इससे भी बड़ी बात यह है कि जब से मुझे स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का तांत्रिक शिष्य बनने का सीमांत प्राप्त हुआ है तब से मेरा सम्मान तन्त्र के क्षेत्र में हजार गुना बढ़ गया है, एका शिष्य होता ही अपने नाम में गौरव है, और वही कठिनाई से पूरी परीक्षा लेने के बाद ही ये किसी की प्रपना शिष्य प्रपाते हैं, जब उन्होंने मुझे सीखा ही तो मैं उस समय तन्त्र का सबसे अधिक सीमांतशाली अनुभव कर रहा था, यही नहीं मरिदु मेरे से पहले जो दश क्षेत्र में थे, वे भी मुझ से दीर्घा करने लगे थे कि मुझे ऐसा गौरव प्राप्त हुआ है।

और, इस दिन मैं दक्षिणकाली के दर्शन कर वापिस

आश्रम की ओर लौट रहा था प्रातः लगभग तीस बजे थे, सूर्य आकाश में काफी मुल्लू बढ़ गया था, गुलाबी कर्बों की, और वातावरण अत्यन्त सम्मोहक था था, तभी मुझे एक अत्यन्त ही सुन्दर तेजस्वी तपस्वी भरे सामने खड़ी हुई दिखाई दी, भगवे वस्त्र पहने हुए, नीचे का परिधान

नाम भूटनों की लुना लुना, लम्बे और बिछरे हुए बाल सुन्दर आकर्षक तेजस्वी प्रांसे, चेहरे पर एक प्रजीव त सम्मोहन कि जैसे देखते ही आदमी ठगा सा रह जाय, एक झुकी सी मुस्कानहट और मारा प्ररीर लोच में ठहरा हुआ....ऐसा लगा कि जैसे विद्याता से अभी प्रजी की

वीर साधना

यह साधना अत्यन्त कठिन और तीक्ष्ण है, मेरी राय में बिना किसी उच्च गुरु के सानिध्य यह साधना सम्पन्न नहीं करनी चाहिए, इस साधना के माध्यम से वीर वेताल स्वयं सिद्ध हो जाता है और वह अकेला ही हजार भूतों के समतुल्य होता है, उसके माध्यम से असंभव कार्य भी संभव किये जा सकते हैं।

यह ३१ दिन की साधना है, अमावस्या की रात्रि को श्मशान में जा कर ठीक अर्द्ध रात्रि के समय कदम में से एक ताजा मुर्दा निकाले और उसे स्नान करावे फिर उसका शिर दक्षिण की ओर तथा पैर पश्चिम की ओर रख कर लेटा दें और सीने पर श्मशान की रात्रि को पानी में धोल कर स्वाही बना कर उसमें "श्रीं फट्" शब्द लिखे और फिर सीने पर ही पालवी मार कर स्वयं के सिन्दूर का तिलक करें और उस मुर्दे के भी ललाट पर सिन्दूर का तिलक करें फिर उसका पूजन करें और प्राण बेतना क्रिया सम्पन्न करें।

इसके बाद उस मुर्दे को वीर वेताल अभीष्ट मन्त्र आपूरित करें और सर्प ग्रन्थियों की माला में उसके सीने पर ही बैठे बैठे एक सी एक निम्न मंत्र जप करें।

मन्त्र

श्रीं श्रीं वीर वेतालये ऐं ऐं श्रीं श्रीं हुं हुं क्लीं क्लीं वेताल सिद्धिं ह्रीं ह्रीं फट्।

मन्त्र साधना करने से पूर्व श्मशान जागरण क्रिया सम्पन्न कर लेनी चाहिए और अपने चारों ओर रक्षा कवच करते हुए दसों दिशाओं को बांध कर फिर यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए, साधना समाप्ति के बाद श्मशान शान्त क्रिया कर लेनी चाहिए।

वास्तव में ही यह संसार का अत्यन्त तेजस्वी और कठिन मन्त्र है, परन्तु जो साधक इस मंत्र को सिद्ध कर देता है, वह अपने धाम में अजेय और अद्वितीय बन जाता है, उसके समान इस पृथ्वी पर दूसरा कोई नहीं होता, यह साधनाओं में सर्व श्रेष्ठ साधना कही जाती है।

इस साधना को सिद्ध करने के बाद पुरे नकान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना जोड़ों की या पत्थरों को निकाल कर देना तथा संसार का कोई भी कठिन कार्य सम्पन्न कर देना साधक के बांछे हाथ का खेल होता है।

किसी प्रकार की होम भावना भी नहीं है, वह जो कुछ करना भुगतना या सोचना चाहती है, स्वयं शरीरों में कह देती है।

मैंने उसके चेहरे को ध्यानपूर्वक देखा, निश्चय ही उत्तमोत्तम की कोई राखनुमाही है, चेहरे पर पूर्ण जीवन और सकाई का जल के बावजूद भी अभी तक मोलापन मिट नहीं पाया है, मैंने उसे अपने आधर्म में

उसी सोचने और साधना तन्मय करने की आज्ञा दे दी।

थोड़े ही दिनों में वह आश्रम में रहने वाले उन आध्यात्मिक साधकों के दिलों दिमाग पर छा गई, जो कभी उनके दिनों पर प्रामाण्य करने लगीं, जैसे सारंगी की धुन पर सान नृत्य करता है, ठीक उसी प्रकार सभी उसने इशारों पर काम करने थे, एक विचित्र प्रकार का अनुशासन साधना में आ गया था, आश्रम में कहीं किसी प्रकार

श्यामा साधना

उत्तमोत्तम की साधनाओं को सम्पन्न करने के लिए श्यामा साधना आवश्यक मानी गयी है चाहे पुरुष साधक हो या स्त्री साधिका हो, यह साधना दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी है, इससे मन पर कठोर नियन्त्रण होता है और उसका सारा शरीर अचञ्चल हो जाता है, पाँचों कर्मेन्द्रियों और पाँचों ज्ञानेन्द्रियों पर उसका पूरा पूरा नियन्त्रण होता है, और आगे चलकर वह किसी भी साधना में तुरन्त सफलता प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है।

यह साधना रविवार के दिन दोपहर को दमशान में जाकर अपने गुरु की आज्ञा से दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सर्वथा नग्न हो बैठ जाय और सामने किसी साधक की सर्वथा नग्न बिठा दें जो कि उससे सर्वथा विपरीत हो, जो सामने साधक बैठा हुआ हो, उसके लिए यह आवश्यक है कि श्यामा साधना में सिद्ध हो, इस प्रकार से एक दूसरे के सर्वथा विपरीत योनि में बैठे हुए भी मन पर पूर्णतः नियन्त्रण रखने में समर्थ होना तथा निरन्तर मन्त्र जाप करना ही श्यामा साधना की श्रेष्ठता और सफलता मानी गयी है।

इसमें ऐसे सुनसान स्थान को चुने जहाँ पर लोगों का आवागमन नहीं के बराबर हो और फिर हल्की माला से अर्ज खूबो रखते हुए निम्न मंत्र की ११ माला फेंके, इसी गुरु का कर्तव्य है कि वह बराबर साधकों के ऊपर अपने कठोर दृष्टि बनाये रखे।

साधना मन्त्र

ॐ सोऽहं मणिभद्रे हुं।

यह मंत्र अपने आप आत्म चेतना मंत्र है, मन पर नियन्त्रण प्राप्त करने का मंत्र है, कठोर साधनाओं को सिद्ध करने का मन्त्र है, और संसार में कहीं पर भी निद्रा विकसल करने का मन्त्र है, नही और स्वामी ने इसी साधना को सिद्ध कर केवल्य ज्ञान प्राप्त किया था, ऐसी जनश्रुति है।

आज भी उच्च कोटि की साधनाओं में प्रवेश देने से पूर्व साधक को ऐसी साधनाएं सम्पन्न करवा कर उसकी परीक्षा ली जाती है।

की कोई शक्ति या तात्त्विकता विचार्य नहीं है यही भी, तब नाम शक्ति को ले लेंगे जो से चल रहा था, जब तन्त्रमय एक मन्त्र यन्त्र के आधार पर यही पर जो नाम एक प्रकार से देना जाना जो हमने लेते नारे तब भी खाली खाली, जो नामों के भी जो तीन ताल परियोजना कर ली थी, तब साधनाओं को लेखने में मुझे यही योही का जोर लगाता पड़ा था जब साधनाओं को भी वह शक्ति प्रस्तावी ने तोड़ रखी थी और उसमें सफल हो रही थी कि कई बार भावपूर्ण होता था कि वास्तव में वह कोई पूर्व जन्म की साधना है और इस जन्म में किसी राज घराने में जन्म ले लिया है, योही ही दिनों में वह तन्त्र के क्षेत्र में एक भावपूर्ण जनक शक्ति प्राप्त कर चुकी थी।

एक दिन सुबह सुबह मैं पराध्या की स्तुति में लगा हुआ था कि अचानक मेरे सामने आकर खड़ी हो गई, मैंने कहा आखिर तुम्हारा नाम क्या है, उसने कहा संश्लेषण से कहा कि दिया धर्मो एक तो मां बाप ने जो नाम दिया था वह मैं चुना बैठी हूँ, लोग मुझे ब्रह्मदे, वैष्णवी कहते हैं, क्यों कहते हैं इसका मुझे स्वप्न भी पता नहीं, मेरा नाम करवा की पुत्र्य सुन्दर्य निकिलेश्वरसम्पन्न जो हो लगे-तभी मेरा सही सधों ने नामकरण सम्पन्न हो लीया, जो सनी मुझे ब्रह्मदे-वैष्णवी कहते हैं जो आप भी मुझे इस नाम से पुकार सकते हैं।

एक दिन उसने कहा मैं आज से और साधना सम्पन्न करवा पाहूँगी हूँ, और मैं बलदी से जबकी इस साधना को सम्पन्न कर चुकी।

मैं जैसे बातचीत में सीधे गिर गया, और साधना प्रत्यक्ष कठिन और दुर्बोध है, तब को महारथी भी और साधना करते हुए धनराते हैं, वे यथार्थतः अन्य सभी साधनाएं सिद्ध करते हैं, परन्तु वीर साधना का नाम तेरे ही ऊपर चढ़कर ला आने लगता है।

वीर साधना प्रत्यक्ष कठिन किया है, और इनशान में मुझे भी छाती पर बैठ कर काली मन्त्र का आवाहन कर दसों दिनाओं को बांध कर वीर का आवाहन करना

शून्य साधना सिद्धि

यह साधना सरल है और कई साधकों ने इस साधना को सिद्ध कर पूर्ण सफलता पाई है।

यह समथान साधना है, अभावस्था की मध्य रात्रि को दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर साधक बैठ जाय और सामने सवा किलो जी के घाटे से एक मोतम आकृति बना दें और उसे सिन्दूर से पोंत दें फिर उसमें प्रारंभ संजीवन क्रिया सम्पन्न कर अपने चारों ओर सुरक्षा घेरा बना कर दसों दिशाओं को बांध दें और हकीक माला से निम्न मन्त्र का जप करें।

मन्त्र

ॐ शून्य पिण्डादे मनोवाञ्छित कार्यं सिद्धये क्रीं क्रीं
इमंशान कालिके भूत दाहनाय सिद्धये फट् ।

इस प्रकार नित्य जी के घाटे का गुत्ता बनाये और फिर उसे मन्त्र जप पुरा होने पर दक्षिण दिशा की ओर जा कर रख दें, यह २१ दिन की साधना है और साधना समाप्त होने पर निश्चय ही शून्य साधना सिद्ध हो जाती है इसके द्वारा वह शून्य में से कुछ भी प्राप्त कर सकता है, मोटों की वर्षा, मनोवाञ्छित वस्तु प्राप्त करना, ताजी भोज्य सामग्री उपलब्ध करना, और अन्य किसी भी प्रकार के कार्य सम्पन्न करने की वह सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है।

वास्तव में ही यह महत्वपूर्ण साधना है और साधक इसे सिद्ध कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

पड़ता है, यह साधना नामुनी साधना नहीं है, पुरुष वर्ग की इस को सम्पन्न करने हुए हिचकिचाते हैं, किचकिचा ही जाते हैं, और कई लोग तो इस साधना के बीच में ही समाप्त हो जाते हैं।

मैंने उत्तर दिया, तब कुछ समझ भी नहीं हो कि मुन बना रह रहे हो, पहले अपने मनोरंज को देखो और

उसके बाद और साधना का नाम लो।

उत्तरे कहा कि आपने और साधना सिद्ध कर ली थी और साधना क्यों नहीं सिद्ध कर सकती, मैं नूतिष्ट पुरुषों ही और मैं इसी प्रमाणों से इस साधना को प्रारम्भ कर लेना चाहती हूँ, आप मुझे आशा दें और इनका विधि विधान बता दें, उसने बाद में

भैरव साधना

अन्य साधनाएं तो सरल कही जा सकती हैं और उसके साधक को किसी प्रकार का मुकताम नहीं होता पर कुछ साधनाएं इतनी अधिक तीव्रता कठोर और तलवार की धार के समान होती हैं कि जरा सी चूक होते ही मृत्यु का वरण करने के लिए बाध्य होना पड़ता है, भैरव साधना भी ऐसी ही साधना है।

इसमें "बावन भैरव" की पूर्णता सिद्ध किया जाता है जिसमें काल भैरव, रुद्र भैरव, और सौंदर्य भैरव जैसे भी हैं, इसलिए इस साधना को भी वेताल साधना के समान ही कठिन मानी गयी है, उच्चकोटि के साधक ऐसी साधनाएं सम्पन्न कर संसार में श्रेष्ठता प्राप्त करने में सक्षम हो पाते हैं।

किसी भी प्रमावस्था को शब्द रात्रि के समय श्मशान में जाकर किसी एक स्थान पर बैठ जाय और अपने चारों ओर सुरक्षा मन्त्र पढ़कर लोहे के चिनटे से घेरा बना दें और बकरे की कुछ मांस कीटियां किसी एक पात्र में भर कर अपने पास रख दें, दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठते हुए, दशों दिशाओं को आग्रह कर महा श्मशान जागरण किया सम्पन्न कर।

जब पूरा श्मशान जागरण हो जाय और चारों तरफ से भूत श्रेत पिशाच वध, तथा ब्रह्म राक्षस घिर जाय तब बलि देते हुए एक एक बोटी उनकी ओर फेंकता चला जाय, इसमें नित्य ५१ माला मन्त्र जब सप्त अस्थियों की माला से करने जरूरी होती है और प्रत्येक माला के बाद भूतों को बली देना आवश्यक होता है।

इस प्रकार जब ५१ माला सम्पन्न हो जाय तब श्मशान जागरण समाप्त कर दें और उठ कर अपने घर आकर स्नान कर लें।

मन्त्र

ॐ ब्रह्म भूतायै भैरवायै बलि ग्रहण ग्रहण मम यद्यपि साधयै श्रीं क्रौं हुं हुं फट् ।

यह २१ दिन की साधना है, पर अपने आप में काफी दिलेरी और हिम्मत की साधना है, अतः किसी गुरु के निदेशन में ही इस साधना को सम्पन्न किया जाय तो ज्यादा उचित रहता है।

निमित्त रहे, मैं इस मन्त्रि साधना को भी सिद्ध करूँगी।

मैं कुछ क्षणों के लिए हिचकिचाया मैंने सोचा यह इतनी तीक्ष्ण साधना सम्पन्न कर ही नहीं सकती, अभी एक यह समझ ही नहीं है, परन्तु उसने मन की बात ताव तो और कहा जब मैं धरारा नहीं रही हूँ, जब मुझे अपने प्रणों का माह नहीं है, तब फिर आप वेनकर ही परेशान हो रहे हैं, आप यदि मुझे यह साधना नहीं सिखायेंगे तो मैं यह ध्यान छोड़ कर किसी और स्थान पर चली जाऊँगी और ऐसे गुरु को ढूँढ़ूँगी जो मुझे यह साधना सिद्ध करवा सकें।

मन्त्रि मैं उसके कुछ निश्चय और प्रत्यक्ष दृष्टांत से पूरी तरह से प्रभावित था मुझे विश्वास था कि वह जिस साधना को आप आरम्भ करतीं उसे पूरा प्रयत्न करतीं परन्तु शक्ति से कीर साधना में जिज्ञासा तो उसके योगों से फैलता है, जब श्मशान जागरण होता तो ऐसा दृश्य देखकर यह अस्मय हो बहुत लज्जगी और इसका प्रशंसा हो जायगा फिर भी मैंने सोचा आज नृसिंह भुवनेशी है, पास में ही श्मशान है, मैं आप श्मशान जागरण किया कर इसकी धीक में बैठा देता हूँ और अब यह विविध और विविध रूप देखेगी तो आगे धाय और साधना करने का हठ छोड़ देगी।

मैंने प्रनमो भक्त से हाँ कर दी, जाते जाते उसने कहा मुझे श्मशान जागरण साधना प्राप्त है, इसलिए यदि आप कदापि परीक्षा को दृष्टि से ही श्मशान में बैठाना चाहते हैं तो आपकी भरजी, भूत प्रेतों को मैं अपनी उंगलियों पर नचाती हूँ, और ये तो मेरे दास की तरह काम करते हैं।

घर, मैं रात्रि को दक्षिण काली मन्दिर के पास थोड़े महा श्मशान में एक रात्रि की रात से गया और श्मशान के बीच मध्य में उसकी बिटा बिटा तथा पांच गला गला को डूरी गर में बैठ गया, गिन रक्षा के लिए प्रनमो भारी और चिमटे से सक्कीर खींची तो यह हंस पड़ी

उग्र तारा सिद्धि

यों तो तारा साधना कई स्थानों पर स्पष्ट की गई है पर उग्र तारा अपने आप में महत्वपूर्ण साधना है और इसके सिद्ध होने पर अन्य सभी देवियाँ और महादेवियाँ स्वतः सिद्ध हो जाती हैं।

अमावस्या की रात्रि को श्मशान के मध्य में सर्वथा नग्न हो कर बैठ जाय और सामने ताजे गुदे की भस्म को पानी से गीला कर उग्र तारा की मूर्ति बनावे उस पर सिन्दूर का तिलक करें और स्वयं के भी सिन्दूर का तिलक करें, इसके बाद दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सप्त अस्थियों की माला से निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जप करें।

मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं उग्र तारायै नमो नमो फट्।

जब ५१ माला पूर्ण हो जाय तब उग्र तारा को दक्षिण दिशा की ओर किसी पेड़ की छाया के नीचे रख कर विश्रान करने की प्रार्थना करें।

यह २१ दिन की साधना है और इसमें नित्य उग्र तारा की नयीन मूर्ति बना कर उसकी पूजा कर प्रत्येक तैत्तन्यता प्रदान कर पंचोपचार पूजन कर मंत्र जप सम्पन्न किया जाता है।

यह साधना सिद्ध होने पर साधक "महासिद्ध" कहलाता है, और उसके शरीर में समस्त देवियाँ और महादेवियाँ स्थित होती हैं वह किसी भी असंभव कार्य को संभव सम्पन्न करने की क्षमता रखता है।

वास्तव में ही यह साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साधना है जिसे उच्चकोटि के योगी ही सिद्ध कर पाते हैं।

बोली जब स्वात्मक रा हो बना लिया है तो फिर समझान जागरण करने से लाभ ही क्या, मला तो तब है कि जब समझा स्वात्मक रा बनाया हो न जाय और भूत त्रेता का प्रभाव, प्रताप और आक्रमण देखा जाय।

और वास्तव में ही उसने किसी प्रकार की सुरक्षा रेखा नहीं खींची और मेरे आला देने से पूर्व ही अपने समझान जागरण की क्रिया प्रारम्भ कर दी। वह जोरों से तोषण प्रयोग प्रारम्भ कर रही थी, और सारा समझान एक बारभी हो जायत हो रहा था, ऐसा लग रहा था कि उसे समझान जागरण की क्रिया पूर्णता के साथ प्राप्त हो।

थोड़ी ही देर में भूत, प्रेत पिशाच, राक्षस चारों तरफ से उमड़ उमड़ कर घा रहे थे, मैं इन रक्तियों को विजित करने लगे सख बोला रहा कि सुरक्षा रेखा खींचने के बावजूद भी समझान के उस प्रभावक रश्मि को रोकथाम में आकर ही धन्दर थोड़ा विनमित भवश्य हो रहा था परन्तु मैंने कल्पितों से अलहद मैत्री की और देखा वह किसी भी प्रकार से परतान नहीं थी, विनमित नहीं थी, वह राक्षस जैसे निताच उसके आगे और बैठ गये थे, और वह मुस्काहती हुई ऊँसे बलिया रही थी जैसे कि वह उसके भाई बहिन या सगे सखी हों।

लगभग यह एक घण्टे तक महा समझान जागरण रहा, और इस बीच मैं लगभग पचास बार अचभित हुआ होऊँगा, जब कोई बड़ा राक्षस मेरे ऊपर आया मारता तो मुझ दिव्य चहल जाता पर स्वात्मक रा होने की वजह से वह कुछ कर नहीं पा रहा था पर इसी वाक्य पर वह मूर्च्छा प्राप्त थी उसके चेहरे पर किसी प्रकार का कोई उद्वेग नहीं था।

समझान जागरण सम्पन्न होने के बाद मैं उसके साथ आश्रम की ओर लौट रहा था तो मैंने पूछा मन्त्र! यह समझान जागरण की विशेष विधि कहा से सीली?

उसने कोई उत्तर नहीं दिया थोड़ी यह मैंने ऐसे व्यक्ति से छुप कर ली है, जिसे मैं अपना गुरु बनाया

थाहूँ ही, पर जब वह अपने किसी मन्त्र निधन को यह विधि सिखा रहा था, तो दूर पेड़ के छाये में खड़ी यह किया और यह मन्त्र जब सीख रही थी, विधिवत शिक्षा मैंने प्राप्त नहीं की है, परन्तु आप देख रहे हैं कि समझान जागरण ने कोई वृद्धि भी नहीं रहने दी है।

मैंने अर्वाज लगाया कि हो सकता है, अभी इसका मन्त्रो निधिलेखनानन्द की आये होने और वे अपने किसी निधन को समझान जागरण सिखा रहे होंगे, इसके मन्त्र में सीखने की अवधि अधिक थी लालसा रही होगी, और इसने उनके शिष्यत्व स्वीकार करने की इच्छा भी प्रकट की होगी तो उन्होंने मना कर दिया होगा और तब इस ने छुप कर उस क्रिया को और मन्त्र विधात को समझा लिया होगा।

मेरे मन ने तर्क किया कि इसमें दोष भी क्या है जब प्रोणाचार्य ने एकलव्य को शिष्य बनाने से मना कर दिया था, तो उसने भी तो छिपकर अनुविद्या सीखी थी और अनुन से आगे निकल गया था इसमें कोई दो राय नहीं कि मेरी अपेक्षा इसे उच्चकोटि की समझान जागरण किया जात है।

मैंने उसे वीर साधना सिद्धि सम्पन्न करने की स्वीकृति दे दी और वास्तव में ही जित साधना को करने में मुझे सत महीने लग गये थे, उस साधना को इस अलहद ने केवल कीचोले दिनों में ही सिद्ध करके दिखा दिया कि इसमें गजब का आत्म विस्वासा और कठोर से कठोर साधनाएँ सम्पन्न करने की इच्छा है।

वीर साधना सम्पन्न करने के बाद इसने मेरे सामने ही पवन को बाध कर और वीर वैताल से पहाड़ को धूर धूर करवा कर यह बता दिया कि उसने भली प्रकार से साधना सिद्ध की है, और सफलता पाई है।

और साधना सम्पन्न करने के बाद साधक बहुत हुए पवन भी रोक सकता है, भयंकर आघट और तूफान ला सकता है, परन्तु को हवा में उछाल कर एक प्रकार से

को यह पहाड़ की चकनाचूर कर सकता है, हजारों आदमियों को एक ही क्षण में लुप्त कर सकता है और मैदान के गोप्य से संधार के किसी भी कठिन कार्य को सम्पन्न कर सकता है, वैताल साधना तो एक महिलाय साधना है, जिसका कोई मुसाफिरा ही नहीं है और इस लड़की ने गांव की बालिकाओं में ही इस साधना को सम्पन्न कर यह बता दिया था कि यह किसी भी प्रकार की कठिन साधना को सम्पन्न कर सकती है।

इसके बाद प्रत्येक मंत्रों को इस दिन शान्त रही, और फिर उसने एक दिन प्रातःकाल धीरे-धीरे सामने वसुधा के साथ प्रार्थना की, कि मैं अपने गुरु के सामने पूर्णता से पूर्ण सभी कष्टों से पूर्णता प्राप्त कर लेना चाहती हूँ और 'व्यास साधना' में इसका प्राप्त करना चाहती हूँ।

व्यास साधना प्रत्यक्ष ही तीक्ष्ण और कठोर साधना है जिसमें पूर्णता पाँचों कर्मद्वियों और पाँचों शालिद्वियों

जल गमन प्रक्रिया साधना

यह उच्छकोटि की साधना कही जाती है, और इस साधना को सिद्ध करने पर व्यक्ति जल पर भी उसी आसानी से चल सकता है, जिस प्रकार से व्यक्ति जमान पर चलता है, इससे साधक को किसी प्रकार की कोई कसबिधा नहीं है और न दुर्घटना का खतरा ही रहता है, उच्छकोटि के साधक इस साधना को सिद्ध करने के लिए लालायित रहते हैं।

रविचार की मध्य रात्रि को जल में खड़े होकर इस साधना को सम्पन्न करना पड़ता है और प्रगते रविचार तक अर्थात् आठ दिन तक उसे चौबीसों घंटे निरन्तर जल में खड़े रह कर मन्त्र साधना सम्पन्न करनी होती है, नींद के भौके में साधक पानी में गिर न जाय इसके लिए दोनों तरफ लकड़ी के खम्भे गाड़ कर उस खम्भों से साधक को बाँध लिया जाता है, जिससे गिरने का खतरा नहीं रहता, साथ ही साथ उसके एक दो गुरु भाई हमेशा निगरानी करते रहते हैं, इस साधना में नाभि से ऊपर तक जल में खड़े रह कर साधना सम्पन्न करनी आवश्यक है।

इस साधना में हकीकत भासा का प्रयोग होता चाहिए और चौबीसों घंटे मन्त्र जाप करते रहना चाहिए, दिन रात में केवल दो बार दूध या कोई तरल पदार्थ लिया जा सकता है, पानी के बाहर नहीं निकले इसमें नाला की संख्या निर्धारित नहीं है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं ब्रह्म वल्लभाय नमः सिद्धये श्रीं कालिके जलगमन सिद्धये फट् ।

वास्तव में ही यह साधना कठिन है, क्योंकि कई बार जल में खड़े रहने से मछलियाँ उसके पाँचों के पंखा को तोड़ने लग जाती हैं, इसलिए सरोवर पर कड़वा तैल लगा कर पानी में खड़े रहने में सुविधा होती है।

इस साधना को सिद्ध करने पर व्यक्ति आसानी से जल पर चल कर यह सिद्ध कर सकता है कि हमारे भारतीय तन्त्र कितने अधिक सशक्त और समर्थ हैं।

पर पूर्ण विजय प्राप्त करता होता है, सर्वथा मग्न हो कर किसी भी तरह के शान्ति बैठ कर इस साधना को सम्पन्न करता होता है, और इस बात का पूरा प्रयत्न करना चाहता है कि मन में किसी भी प्रकार की उत्तेजना या उद्वेग उपस्थित न हो।

मैंने इसके लिए स्वीकृति दे दी, मेरे अत्यन्त प्रिय मित्र माधव को इस बात के लिए अनुमति दे दी कि वह श्यामा साधना में सहयोग प्रदान करें, मैंने देखा कि वास्तव में हो यह लड़की इस बात को मानी हुई है न यह किसी प्रकार से दृढ़ता जगती है और न कोई इसको मना करता है, मेरे मन ने कहा यह एक दिन प्रवण हो अत्यन्त उच्च कोटि की साधिका बनेगी और अपने गुरु की सफलतम शिष्याओं में से एक होगी।

श्यामा साधना में तीन दिन तक बिना प्रासन से रहित, बिना खाना खाये, एक ही आसन पर बैठना पड़ता है, और सर्वथा मोर्छे लुकी रख कर सन्न साधना सम्पन्न करनी होती है, और इसने अगले ही दिन से श्यामा साधना प्रारम्भ कर दी, और तीन दिनों में ही इस साधना को सम्पन्न कर यह सिद्ध कर दिया कि यह शरीर से और मन से पूर्णतः आरम्भित्यन्त है और इसे किसी भी प्रकार से विचलित नहीं किया जा सकता।

कुछ समय यह गत्ता रहा तब एक पन्ना भर धार हो इतने "वाचन भैरव" छिड़ सम्पुट करने की प्रार्थना की, मैंने कहा वाचन भैरव सिद्ध सम्पुट करना कोई इसी गत्ता नहीं है, यह कोई वीर व्रतास साधना नहीं है, जिससे कि तुम पूज रहे हो वाचन भैरव सिद्ध करना अत्यन्त कठिन है, और उसमें द्वारा भैरव, उग्र भैरव और छिन्नमय भैरव तो अत्यन्त दुष्कर दुर्बोध है, यदि कोई ही भी गत्ता हो जाती है तो साधक का सिर एक तैकण्ड में ही घड़ से अलग हो जाता है।

उसने कहा सिर ही घड़ से अलग होगा इससे ज्यादा कुछ ही भी नहीं सकता, जब वह सिर को घड़ से अलग करेगा, तब मैं देख लूँगी, मैं आज इस साधना को प्रारम्भ कर रही हूँ आप मुझे आशीर्वाद दीजिये कि मैं इस

साधना को पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न कर सकूँ।

और धीरे-धीरे मुझे ऐसा लगने लगा था कि यह शिष्य तो मुझ पर ही हावी होने लगी है, पर जब शिष्य ने मेरे शान्ति बड़े और वह सफलता प्राप्त करे तो मुझे धरन्त हो होता है, और यह जिस साधना में भी हो जान रही थी उसमें सफलता पा रही थी।

जब मैंने स्वीकृति दी और वाचन भैरव साधना पूर्ण विधि इसकी समझाई तो आश्रम से बाहर जंगल पहाड़ की एक गुफा में बैठ कर इसने अनेक उत्त कति और अतन्त्र साधना को भी संभव कर दिया, इस इशारों पर वाचन भैरव नृत्य करने लगे, मैंने देखा काल भैरव, उग्र भैरव और रोद्र भैरव जैसे तीक्ष्ण भी इसके संकेत पर कार्य करते और शान्त हो जाते, प्रसार से इसने पूर्णता के साथ उस समस्त साधनाओं सिद्ध कर दिया था।

इसके बाद इसने चौबीस दिन उस में रह कर गणन प्रक्रिया साधना सिद्ध की जो कि तन्त्र की अत्यन्त तीक्ष्ण साधना नहीं जगती है, इसने वायु मार्ग गति साधना सम्पन्न की जिसके माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर कुछ ही क्षणों में पहुँचा जा सकता है, इसने साधना सम्पन्न की जिसके द्वारा आकाश से जहाँ भी की वर्षा कराई जा सकती है, वहीं पर परधरों की व भी भी जा सकती है, आगे चल कर इसने उग्र शारा सिद्ध किया, जो कि अपने आप में अत्यन्त कठिन तीक्ष्ण तांत्रिक क्रिया है, देखते ही देखते छः महीने भीतर भीतर दो महाविधाएँ सिद्ध कर ली और मुझे लगने लगा कि अब सिद्धाश्रम में जाने से इसे कोई रोक सकता।

पाठक ध्यान कर सकते हैं कि एक तो मरीज केहरे पर मोलापन पूरे शरीर में प्रवृत्तता और उसके पास ऐसी उच्चकोटि की साधनाएँ हो तो वह क्या गजब नहीं हो सकती और वास्तव में ही उसने वर्षों में तन्त्र के क्षेत्र में हम सब को आश्चर्य करके रख दिया। ★

आखिर ये साधना शिविर क्यों?

प्रत्येक पुनीत कार्य के पीछे एक विशिष्ट एवं विराट् लक्ष्य होता है, 'यदा यदा हि धर्मस्य श्रावणं भवति' शीता में हमें अपने भगवान् कृष्ण ने बताया है कि जब-जब धर्म पर धर्म की हानि पड़ती है, हमें हताश होना है, हमें स्वयं सन्तर्पित होकर उसकी रक्षा करना है। भारत की इस दिशा में सिरमौर रही है, यहाँ धर्म एवं नीति की जड़ इतनी गहरी है, यहाँ धर्म की देशी और विदेशी आतंशियों के लाख प्रयत्न करने पर भी इसे रोक मात्र हिला न सके निपूण करना तो बहुत ही दूर की बात है।

सनातन संस्कृति पर कुठाराघात

हमारे सनातन संस्कृति आज भी यथि शाश्वत है तो निश्चय ही उसका आधार कहीं बहुत गहरा एवं ठोस अवस्था पर टिका हुआ है, विश्व का धर्मगुरु बनने के लिये निश्चय ही कहीं न कहीं दिव्य प्राज्ञचेतना चाहिये ही, प्रौर भारतीय हमारे सनातन संस्कृति इस संदर्भ में तथा ही भाग्यशाली रही है, जब-जब इस पर कहीं से भी कोई चोट हुई, कोई न-कोई धर्मगुरु उभरे ही उठा और गुनगाह की जाने वाली आत्मा सनातनता को उसके स्वामी एवं स्वार्थ परता से विभाजित कर सनातनता का जय धीमे-धीमे लड़खड़ाते पावों की काम लिया हालांकि और ईसाई धर्म ने सैकड़ों वर्षों तक अपने तरीके से हमारी पुरातन पुनीत इस भारतीय संस्कृति पर जो कुठाराघात किया है, यह कम विजित है, इतना ही नहीं हमारे अपने ही देश के अन्दर इसी संस्कृति में उत्पन्न और विकसित पनेक धर्म एवं धर्माचारों ने मठ एवं मठ-

घोशों ने अपनी व्यक्तिगत संतुष्टि के लिए नये-नये मन्त्रवाणी की अपने नाम से चान्करी किया, प्रलय मत भगवान् चलाकर अपने पीछे लोगों का एक समूह बना कर गड़बड़ चिन्तित कर लिया, ये चाहे जोड़ रहे ही धमका डीती, पारती रहे हो जयवा मुस्लिम, सिख रहे हो या ईसाई, सभी का मूल उद्गम मार्ग संस्कृति ही रही है, अपनी इस पुनीत सनातन संस्कृति की मोप होती हुई स्वयं परम्पराओं की रक्षा करते हुए अपनी भाष्यात्मिक दिव्यता को पुनः अपने उसी अतीतिक पुरातन स्वरूप में प्रतिस्थापित करने का यह एक जय, पर ठोस प्रयास है जिसे महायज्ञ में नव्य तन्त्र जन्म विशाल पश्चिका के सभी साधक एवं पूज्य पाद गुरुस्वरूप सद्गुरु डा० गोरविण-वन्त श्रीमती जी के सभी प्रेमी साधक एवं शिष्य एकजुट हो पिछले सनेक वर्षों से उनके निर्देशन में दिन-रात सेवा-का बूटें हुए हैं।

धर्म एवं संस्कृति की रक्षा का बीड़ा

पूज्य गुरुदेव ने गृहस्थ रूप में रहते हुए भी धर्म एवं संस्कृति की रक्षा का जो बीड़ा उठाया है उसकी प्रेरणा एवं साधारणता के साथी रूप परमहंस स्वामी निचिने-वरदान ही रहा है, निद्राधर्म संस्थापित ही नहीं वरत सिद्धाधन के प्रधिष्ठाता एवं प्रमुख संपातक पूज्य पाद परम हंस स्वामी सच्चिदानन्द महाराज के प्रमुख शिष्य के रूप में वहाँ के चैतन्य सजीवन प्राण के रूप में घाय अपने पूज्य गुरु के आदेश पर वर्तमान विद्वन्मनों एवं विभिन्निकाओं से पुस्तक समाज का गलज पीते हुए प्रपना कर्म महायज्ञ सम्पाद करने में पूरे मनोयोग से लगे हुए

है, हम सब जो भी जहाँ पर हैं, वहाँ भी जो किसी रूप में जुड़े हुए शुभ संकेतों से प्रसिद्ध करें कि उनसे इस विश्व प्रसिद्ध महापर्व में जो कुछ भी एक में प्रसिद्ध बन पाएँ, करीब ही निश्चय ही प्राप्त करेंगे। और आज पाठ्यक्रम सहजता के साथ ही स्वाधीन के चरमस्थान में फल सफल के रूप में एक अष्ट तन्त्रा में आई खेती का- र्ति का नवीन संस्करण ला सकते हैं ।

है, पावन है एक रात में लम्बवर्ति वन छोड़ी, महान्, अटूट धम रीति तब कुछ नाने को, धार्मिक मर्यादायें एवं परम्पराएँ ताक में रख छोड़ी हैं, पार्श्वस्थ चकाराँध जो स्वयं में प्रकाशित हो किर्तनका विमूढ वन मोचनकी है उतकी ही भक्त कर हमारी-घापकी पीड़ी स्थान के प्रशित्व को रात पर लगाये मृग मरिचिका का शिकार हो रही है ।

नई पीढ़ी एवं समाज का विकृत रूप

आज आप जिधर भी निकल जाय किसान एवं
मीनिकारक या कुछ अपने सुनी भवों से स्वयंसेवकों द्वारा
सब पर हावी है, वेतहाय जलहीन दोड़ में सब लगे हुए

इस विडम्वरा से आपने आपकी बचाकर नई पीढ़ी का भविष्य सुरक्षित रखना ही होगा। भ्रष्टाचार को काटी संज्ञा हमें किसी भी सीमा पर नाक नहीं करेंगी, चरनरा कर टूट जायेगी। हमारी न्यायाधीशों एवं परम्पराधीनों की सभी सीमाओं भारतीय संस्कृति के ऊपर

साधना शिबिर

१८ अक्टूबर १९८७ । दिल्ली में सिद्धाश्रम साधक परिवार । दिल्ली श.स. के द्वारा ऊजवा जाल में साधना दीक्षा, संस्कार का संव्य आयोजन, बालीनगर के धरुण श्रीवास्तव के देख-रेख में पूर्ण सफेदवा वातावरण, कबर लाल डागर के प्रयत्नों से सम्पूर्ण व्यवस्था, और इस एक दिवसीय साधना मित्रि में भाग लेने वाले थे दिल्ली के प्रबुद्ध वर्ग, व्यवसायी, उद्योगपति, और बुद्धिजीवी साथ ही साथ सामान्य जनता भी, जिनके मन में साधना के प्रति एक भावना थी ।

और इस भौतिक वातावरण में रहने वाले साधनाओं से तबया दूर दैनिक समस्याओं से प्रसन्न पूर्णतः भोगवादी प्रवृत्ति से युक्त उन सभी उपस्थित दीक्षा जने वाले साधकों और श्रोताओं ने अनुभव किया कि वास्तव में ही इस धीरे भौतिकतावादी युग में यदि पूर्ण ज्ञान्ति प्राप्त हो सकती है, तो उसका एक मात्र रास्ता है "साधना विधि" में उपस्थित होना, गुरु का साहचर्य प्राप्त करना, दीक्षा संस्कार से सम्पन्न होना, और तत्त्व गुरु-मन्त्र या ग्रन्थ साधना मंत्रों के द्वारा अपने चित्त को पवित्र बनाते हुए पूर्णतः मानसिक ज्ञान्ति की ओर अग्रसर होना ।

पूर्णतः व्यवसाय से सम्पन्न स्त्री पुष्कर विडला और भसीन जैसे अत्यधिक व्यस्त रहने वाले व्यक्तियों ने यह स्वीकार किया कि ऐसे साधना बिबिरी ही मन को शांति दे सकते हैं, ऐसे साधना बिबिरी के माध्यम से ही मानसिक तनाव दूर हो सकते हैं और इस प्रकार के बिबिरी के आयोजन के द्वारा ही जीवन में समस्त प्रकार की सफलताओं का प्राप्ति किया जा सकता है।

राष्ट्रियताम नामा आदि साधकों ने तो प्रयास किया कि हम पुरी दिल्ली में समय समय पर ऐसे निवृत्ति आयोजन करने का प्रयत्न करेंगे ही, क्योंकि भावनाओं को पूर्णता देने का एक माध्यम यही रास्ता है।

भारतीय संस्कृति की आधारभूत पुरातन विद्याओं का पुनर्स्थापन

इन साधना विधियों के माध्यम से साधक साधिकाओं को सन्त सन्त यन्त्र के प्रति आगम चिन्तक एवं प्रचार करने पर प्रोत्साहित करते हुए सही धष्टि देना और सही मूल्यांकन करके भी होने हुए इस आधार को सशक्त बनाना, सारभूत प्रपञ्ची मार्गात्मक विद्याओं के प्रति अनादर एवं अज्ञान से लोगों को बाहर निकाल सही मार्गों में उन विद्याओं का अनुसन्धान करना।

(२) वैदिक ज्ञान एवं मन्त्रों के प्रति लोप होती हुई आस्था को पुनः जगाना

वेदों की गरिमा और मन्त्रों के प्रभाव के प्रति वास्तविक सम्यक्ता में हम भारतीयों को भी गुमराह करके एक बड़ा प्रश्न चिह्न हमी से हमारे चिन्तन शाश्वत ज्ञान पर लम्बा दिया है जिसे समय रहते यदि हम नहीं हटा सके तो प्राणि धरि कल का तनका किसी और रंग में रंगा दिया देना, जो मन्त्रों के माध्यम से पूज्य गुरुदेव का प्रवेश रहा है कि सही मन्त्र विधि मन्त्रों से हमने खोकर मन्त्र साधना एवं वैदिक ज्ञान अनु-प्राप्त कराना कराने हुए साधारण जन को इसका प्रत्यक्ष लाभ एवं महत्व दिखा सके।

(३) वैदिक यज्ञ एवं अनुष्ठानों के प्रति लोप होती हुई श्रद्धा को पुनः स्थापित करना

वैदिक यज्ञों को सम्पन्न करा कर व्यक्तित्व राष्ट्रीय स्तर पर समस्तों का समोपान करके अनुकूलता दिवाना पूज्य गुरुदेव का विशेष लक्ष्य रहा है, उनका दावा है कि आज भी इन यज्ञ और अनुष्ठानों के माध्यम से प्रकृति को वन में करके नव मुतादिक कार्य सम्पन्न कराना जा सकता है घनेक बार साधक और शिष्यों के बीच स्था

साधना

साधना हमारे पूर्वजों की एक ऐसी विद्या जो आज के इस भौतिक युग में भी चमत्कार प्रभाव दिखाने में समर्थ है, और इस प्रकार के प्रभाव कोई भी साधक ग्रहण कर उसका उपयोग कर सकता है तथा इन साधनाओं के माध्यम से जन कल्याण कर सकता है।

दिल्ली के क्लिनिगल हॉस्पिटल के पास रहे वाले श्रवण कुमार गौयल के बीबीस वर्षीय पुत्र पक्षाघात (लकवा) हो गया उसे अस्पताल भरती करवाया डाक्टरों ने प्रयत्न भी किया कुछ न हो सका और उसका आधा अंग लगभग शून्य भा प्रतीत होने लगा।

तीसरे दिन उन्होंने पूज्य गुरुदेव से टेलीफोन पर सम्पर्क किया तो उन्होंने कहा आज मैं इस संबंधित साधना सम्पन्न करूंगा, शाम को कि टेलीफोन आया और बताया कि उसके कुछ फर्क नहीं पड़ा है और आवा शरीर पूर्णतः लकवा प्रस्त हो गया है, गुरुदेव ने टेलीफोन पर ही का तुम अभी जाकर उसके पैर में जोर से मुई चु दो यदि साधना सही है तो वह ठीक होगा चाहिए और होगा ही।

जोधपुर से छः सौ मील दूर दिल्ली में गो जी ने घर जा कर ऐसा ही किया और तु चमत्कारिक प्रभाव हुआ, उसी क्षण से उस आवा शरीर सक्रिय हो गया और ऐसा प्रतीत कि मानो उसे पक्षाघात हुआ ही नहीं था।

मन्त्र और साधनाएं तो आज भी जीवित संप्राप्त है, आवश्यकता है उन्हें सही प्रकार सम्भालने की और कार्य करने की, तो उससे नि ही चमत्कारिक प्रभाव अनुभव किये जा सकते

करना भी किया गया है, अतः यज्ञ एवं पुनर्विद्य यज्ञ के सम्बन्ध में वाक्य: यज्ञ एवं पुनर्विद्य यज्ञ की प्राप्ति आज भी मनुष्य को नहीं मिली है।

(४) "मन्त्र आज भी ज्यों के त्यों सजीव एवं शक्तिशाली है", सिद्ध करना

जिन साधकों और साधिकाओं ने आपत्तियों विधियों में दृष्टित्व जीवन की कर प्राप्त किया है, उन्हें मान्य है कि मन्त्रों की निष्कोटक शक्ति आज भी गोली की तरह प्रसर करती है, यज्ञ कुंड में अग्नि आज भी मन्त्र से सजीव होती है, मन्त्र से आज भी देवी ईश्वरी का वाहान कर उगमे साक्षरकार किया जा सकता है, जहाँ से आपत्त से सम्पन्न वशीकरण, उपादन, विद्वेष और मारण पद्धतों की प्राप्ति आज भी संभव है, उन विधियों में धनिक प्रकार के प्रयोग साधकों में सम्पन्न होते हैं।

(५) तन्त्र के आत्मिक प्रचार एवं समाज विरोधी अनेक तत्वों से मुक्ति

तन्त्र नहीं साधकों में साधना की एक विशिष्ट पद्धति है जिन्के माध्यम से अपने शरीरगत सभी नाड़ी संस्थानों को विशेष रूप में क्रियाशील करके दुरुन्त, सकलता पाई जाती है, मान, मदिरा, सम्पत्ति की आड़ से कर भोग विना के निष्ठ अष्ट लोगों ने अपनी स्वार्थ पूति के लिये तन्त्र के प्रति लोगों में एक भयावह चिन्तन एवं डर फैल कर दिया है ताकि उनका प्रभाव सीखी आत्मीयता पर बना रहे, अतः आस्था में कहीं पर भी इन पद्धतियों की तन्त्र में आवश्यकता नहीं बताई है, इन विधियों में साधक और महिला साधिकाओं में साथ साथ एक साधना में भाग लें हुए पूर्ण सात्विक एवं मर्यादित जीवन में रह कर पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

अनास्था में आस्था

वस्वई का अग्रस्त क्रांति मैदान। गायत्री यज्ञ का भव्य आयोजन। पूज्य गुरुदेव डा० श्रीमाली जी के सानिध्य में एवं ही एक कुण्डीय यज्ञ का सूत्र पात और उन चार दिनों में यज्ञ का वेद मंत्रों का और आध्यात्मिक पवित्रता का ऐसा प्रवाह बना कि जैसे वस्वई पूरी तरह से आध्यात्मिक नगरी बन गयी है, दूर दूर से लोगों का समूह भाग लेने के लिए और देखने के लिए उत्सुक था, प्रताप शंकर पण्डित, नूर्य कान्त गेलाणी, प्रह्लाद खन्ना, श्रीमप्रकाश सुंद, अभिनन्द्य सोलंकी, आदि के प्रयत्नों जो वातावरण बना, जो आध्यात्मिक प्रवाह बना उसका फल आज भी देखने को मिलता है, हजारों हजारों पर साधनाओं में प्रवृत्त हुए, और उन्होंने अपनी समस्याओं का स्वयं ही समाधान किया, चूकड़ों हजारों नवयुवक-युवतियों ने भीतिकता से ऊब कर साधना में मानसिक शान्ति अनुभव की, और लाखों लोगों ने इन साधनाओं और मंत्रों के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान किया वही हजारों दूसरे परिवारों की समस्याओं के निराकरण में भी योगदान दिया।

वास्तव में ही आज का प्रत्येक परिवार अपनी ही समस्याओं से ग्रस्त है, जूझ रहा है और उन्हें कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है, ऐसी स्थिति में केवल साधना और साधना शिबिर ही मानसिक शान्ति दे सकते हैं तथा पारिवारिक समस्याओं का निराकरण कर सकते हैं।

(६) भूत-प्रेत, पिशाच योनियों के प्रति स्वस्थ चिन्तन का श्रीगणेश

इन साधना विधियों के माध्यम से भूत सिद्धि साधना सम्पन्न करते हुए, साधकों की पहली बार आभास

दहकते अंगारों पर थिरकता गुलाम

[illegible]

सौर विज्ञानता केवल इस साक्षारण में ही नहीं राज-
घराना भी इससे प्रभावित नहीं है, यहाँ के नवयुवक, नव-
युविकाओं में यह ज्ञान इच्छा है कि भारतीयों का ही अधिक
विश्वास ऐसी तांत्रिकों में मिले जो वास्तव में ही शास्त्र के
पार में नहीं सारा रखता हो, किसी ऐसे योगी के साथ
कुछ दिन बिताये जाय, जो इस मामले में कुछ हस्त हो
और कुछ बूढ़े हो ता कुछ विदों के लिए आसक्त बने और
धीरे धीरे पर किसी साधु सत्वासी, योगी तांत्रिक की
खोज करें जो कि चमत्कार विधानों में निष्ठ रहता हो, जो
अद्भुत चमत्कार दिखा सकेता हो जिसके प्रभाव ताज्ज्वल
हो और जो वास्तव में ही कुछ कर गुजरने की क्षमता
रखता हो ।

इन्हीं राजकुमारियों में मिस शर्मा का नाम धन-लोक
का बाहर था रहा था इसके प्रमुख कारण से एक तो मिस
शर्मा अत्यधिक सुन्दर थीं आकर्षक थीं, उसके बारे में कहा
जाता है कि विधाता ने बहुत फुरसत के समय उसकी रचना
की है, संकड़ों हज़ारों भात-भात के राजकुमार और राज-
प्राज्ञ के जो उसकी कलक देखने के लिए तरस गए थे
उन्होंने उसके चेहरे में कुछ ऐसा आकर्षण और चमक थी
कि जो भी एक बार उसे देखता वह अपने आप ही व्याप्त
रह जाता, तुरंत ही उसकी सीढ़ियों की तरफ़ थी और
राजप्राज्ञ के दाहुर संकड़ों हज़ारों युवक इन्हीं उसकी
एक कलक देखने लिये खड़े रहते जब वह बाहर

निकलती तो दुनिया की कड़ी सुरक्षा व्यवस्था होती, कई बार तो सैनिकों हुकूमत कर लेते करते बिना रातों के बिना इन्किल की आवाज से होते होते उनके मन में और कोई भाव नहीं होता, केवल एक ही इच्छा होती कि एक बार भिक्षु श्वेत को, उसकी एक भजना भी सुना मान के लिए ही नहीं, देख दिया जाय उन पर पुलिस के हठों का कोई प्रहार नहीं पड़ता और घाबरे हुए मान पर भिक्षु श्वेत को एक सैकण्ड के लिए कार से बाहर धावा पड़ता और इन युवकों को दबीन से कार हटाते करना पड़ता और भिक्षु श्वेत को देखकर वे युवक धन्य भव्य ही उठते और विनम्रतापूर्वक खस्ता दे देते।

परन्तु प्रचल का मन उन विषय बातों की ओर

कभी नहीं लगता भगवान ने उसे जवाहीरी की ओर धीरे धीरे कर कर सौन्दर्य दिया था परन्तु उसके चित्त पर कोई हुकूमत नहीं होती वह तो अपने मन में इन युवकों के कोई विशेष आकर्षण था ही नहीं, उसे यह ज्ञात था कि युवक पर नर मित्रों के लिए सैकड़ों हजारों युवक सामान्य हैं, मेरी एक भजना पाने के लिए वे राजकुमार बनते हैं और केवल श्रांत से ही नहीं श्रमिन्तु पूरे संसार के राज-घरानों के युवक शाही के लिए प्रस्ताव भेज रहे थे, भिक्षु श्वेत के मन में तो भारतीय तन्त्र के प्रति एक श्रद्धा सा आकर्षण और सम्मोहन था, उसकी हर समय यह इच्छा बनी रहती कि मैं उन्हें कर भारत चली जाऊँ की हिमायत की कंदराओं में निवास करने वाले किसी हैं

मेरे बेटे ने बशीकरा लीखा और....और....

पहले मैं नहीं जानता था कि श्राव के पुन में तन्त्र मन्त्र जीवित है, और उनके माध्यम से आश्चर्यचकित कार्य किये जा सकते हैं, मेरा अज्ञान लड़का एक प्रकार से निकम्मा था है, न तो वह ध्यापार की तरफ ध्यान देता है, और न व्यापारिक कार्यों में रुचि लेता है, इससे मैं कभी कभी बड़ा खिन्न रहता हूँ, बात करने की उसे समीज नहीं, क्रोध इसना कि बात बात पर उबल पड़ता है, और कोई भी यदि उससे एक बार बातचीत कर लेता है तो दूसरी बार उससे बात करने की उसे इच्छा नहीं होती।

बेहूरा और शरीर भी कोई विशेष सुन्दर और आकर्षक नहीं है, मेरी ही तरह थोड़ा सा भारी शरीर और ताँवला सा साधारण नाक नक्का का चेहरा है, किसी भी प्रकार से उसके शरीर पर, चेहरे पर या बासी में लावण्य बोध नहीं है, कभी कभी वह अपने कमरे में बैठा रहता, सामने कुछ ताँवे के बंध रखे रहता और चुप प मन्त्र जाप करता रहता, पर मुझे तो कभी कोई सिद्धि दिखाई भी नहीं और मैं इन सब की बकवास ही समझता था।

एक दिन वह जोधपुर चला गया और लगभग महीने भर बाद लौटा, शामद जोधपुर से जोधपुर, उदयपुर आदि घूमने निकल गया होगा, आया तो उसने अपने कमरे में एक विशेष प्रकार का मन्त्र रखा और रात रात को स्नान कर पीजी धोती पहिन कर हकीक माला से मंत्र जाप करता रहता, कभी कभी तो वह पूरी रात ऐसा करता रहता, जहाँ तक मुझे स्मरण है, पूरी दम्बई में उसका कोई संगी साथी या मित्र नहीं था, और फिर ऐसे साधारण रूप रंग वाले अनाकर्षक व्यक्ति का संगी साथी हो भी कौन सकता है ?

लगभग उसने चारह दिन तक साधना की और साधना के बाद मैंने देखा कि उसके चेहरे

1. लीन
2. पर की
3. की प्रति
4. या नि
5. 11 आमा
6. 12 आमा
7. 13 आमा
8. 14 आमा
9. 15 आमा
10. 16 आमा
11. 17 आमा
12. 18 आमा
13. 19 आमा
14. 20 आमा
15. 21 आमा
16. 22 आमा
17. 23 आमा
18. 24 आमा
19. 25 आमा
20. 26 आमा
21. 27 आमा
22. 28 आमा
23. 29 आमा
24. 30 आमा
25. 31 आमा
26. 32 आमा
27. 33 आमा
28. 34 आमा
29. 35 आमा
30. 36 आमा
31. 37 आमा
32. 38 आमा
33. 39 आमा
34. 40 आमा
35. 41 आमा
36. 42 आमा
37. 43 आमा
38. 44 आमा
39. 45 आमा
40. 46 आमा
41. 47 आमा
42. 48 आमा
43. 49 आमा
44. 50 आमा
45. 51 आमा
46. 52 आमा
47. 53 आमा
48. 54 आमा
49. 55 आमा
50. 56 आमा
51. 57 आमा
52. 58 आमा
53. 59 आमा
54. 60 आमा
55. 61 आमा
56. 62 आमा
57. 63 आमा
58. 64 आमा
59. 65 आमा
60. 66 आमा
61. 67 आमा
62. 68 आमा
63. 69 आमा
64. 70 आमा
65. 71 आमा
66. 72 आमा
67. 73 आमा
68. 74 आमा
69. 75 आमा
70. 76 आमा
71. 77 आमा
72. 78 आमा
73. 79 आमा
74. 80 आमा
75. 81 आमा
76. 82 आमा
77. 83 आमा
78. 84 आमा
79. 85 आमा
80. 86 आमा
81. 87 आमा
82. 88 आमा
83. 89 आमा
84. 90 आमा
85. 91 आमा
86. 92 आमा
87. 93 आमा
88. 94 आमा
89. 95 आमा
90. 96 आमा
91. 97 आमा
92. 98 आमा
93. 99 आमा
94. 100 आमा

कोई भी विद्या धर्म जो अपने आप में उच्चकोटि का लक्ष्य हो, जिसके प्राप्त प्रयत्न शक्तिशाली हो, जो चमत्कारों का भण्डार हो और उसके पास के कुछ ऐसा सीखा जान के यूरोप से और फ्रांस में पुन मन्दा है, वह अपने जीवन में कुछ ऐसा करता चाहती थी जिससे केवल फ्रांस में ही नहीं प्रविष्ट पूरे संसार में प्रख्यात नाम हो, और यह सभी संभव था जब वह कुछ ऐसा कर चुकने जिसको देश कर को शर्तों तले जंगली बना दें, और उसने भारतीय तन्त्र ग्रन्थों में और भारतीय तांत्रिकों में धर्म लेना प्रारम्भ किया, जहाँ से भी और जो भी धर्म मिल जाता वह उसे बड़े चाव से पढ़ती, भारतीय इलाहावाद से भी अपने रक्षापत्र कर ऐसे लोगों का प्रतिपाद करने की

कोशिश की जो कि इस विद्या में माहिर हो, ऐसे तांत्रिक तन्त्र मंगवाये जो प्रामाणिक थे, और जिनमें तन्त्र की महत्त्वपूर्ण विद्याएँ साष्टता के साथ अंकित थी।

और उसने यह निश्चय कर लिया कि मुझे हर हालत में भारतीय तन्त्र विद्या सीखनी है और इस क्षेत्र में कुछ कर गुजरना है।

अंगारों पर नृत्य

और इन तांत्रिक ग्रन्थों की ध्वनि अंगारों पर उठने पड़ा कि कामाक्षी मन्दिर के सामने नव-रात्रि के दिन जहाँ के कुछ विनिष्ट आत्माकार बीत

11. 12
12. 13
13. 14
14. 15
15. 16
16. 17
17. 18
18. 19
19. 20
20. 21
21. 22
22. 23
23. 24
24. 25
25. 26
26. 27
27. 28
28. 29
29. 30
30. 31
31. 32
32. 33
33. 34
34. 35
35. 36
36. 37
37. 38
38. 39
39. 40
40. 41
41. 42
42. 43
43. 44
44. 45
45. 46
46. 47
47. 48
48. 49
49. 50
50. 51
51. 52
52. 53
53. 54
54. 55
55. 56
56. 57
57. 58
58. 59
59. 60
60. 61
61. 62
62. 63
63. 64
64. 65
65. 66
66. 67
67. 68
68. 69
69. 70
70. 71
71. 72
72. 73
73. 74
74. 75
75. 76
76. 77
77. 78
78. 79
79. 80
80. 81
81. 82
82. 83
83. 84
84. 85
85. 86
86. 87
87. 88
88. 89
89. 90
90. 91
91. 92
92. 93
93. 94
94. 95
95. 96
96. 97
97. 98
98. 99
99. 100

पर एक विशेष प्रकार की चमक है और आँखों में आकर्षण शक्ति भी, मैंने इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और धीरे धीरे उसके मित्रों की विशेष कर लड़कियों की संख्या बढ़ने लगी, वे यदाकदा घर पर आ जाती और घंटों बातें करती रहती, टेलीफोन हर समय खड़कता ही रहता, मैं आश्चर्यचकित था, जब कि मैं हाथ धुँव के लिए महीने में दो सौ तीन सौ रुपये से ज्यादा नहीं देता: पर अब उसे पैसे की कमी नहीं थी, और वह किसी को भी प्रभावित करने की क्षमता प्राप्त कर चुका था, एक बार तो फ्रांस व्यापारी से व्यापारिक सम्बन्धता नहीं हो रहा था व बड़ा हठी और घाव था, तो लड़के ने कहा मैं इस व्यापारी की अपनी शर्तों पर और अपनी इच्छानुसार मनवा लूँगा, मैंने सोचा यह कैसे संभव हो सकता है, पर एक दिन सुबह लड़का उसकी दुकान पर गया और घन्टे भर बाद ही वह उस सेठ को ले कर मेरे प्रतिष्ठान में आया और यह अडिगल सेठ मेरी ही शर्तों पर व्यापारिक सम्-र्भता पर हस्ताक्षर कर चला गया, मैं आश्चर्यचकित था, अपने इस निकम्मे पुत्र पर जिसने असंभव कार्य को संभव कर दिखाया, उसने कहा मैंने वशीकरण विद्या सिद्ध की है और मैं किसी को भी एक दो मिनट में ही अपने वश में कर सकता हूँ और उससे मन चाहा कार्य करवा सकता हूँ।

इसके बाद मैंने कई बार इसकी अनुभव भी किया, उसके मित्रों की श्रेणी में व्यापारिक पुत्र थे तो सुन्दर धार्मिक धर्मिणेतियाँ भी, जिसको देखने के लिए लोग तरसते थे, उसकी वजह से मेरा परिचय भी तो बढ़ा ही, जब भी कोई कठिन व्यापारिक अनुबन्ध करना होता, या कोई किसी उच्च अधिकारी से काम निकालना होता तो मैं उसे ही भेजता और वह तुरन्त कार्य सम्पन्न कर लौट जाता, वास्तव में ही वह मुझ के वास्तविक व्यापारिक सफलता का सूत्र था।

और मैंने पहली बार अनुभव किया कि आज के युग में भी वशीकरण विद्या विलुप्त नहीं प्रामाणिक है और इससे किसी को भी जीवन भर के लिए अपने वश में किया जा सकता है, और उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाया जा सकता है।

मेहरे

पीठ लम्बी वर कोट चौड़ी अगारों की छाई बनाते हैं और वे उन वस्त्र लुप्त करते हैं, डॉक उसी प्रकार से जैसे कि वे बनाते हैं गुप्त कर रहे हैं, वस्त्र-भूषण भी पड़ा कि शक्तिमान में आते भी कोई वस्त्रों पर ऐसे भी है

जो अगारों पर नाखते हैं, और उनके पांव झुलसते नहीं या पांवों पर किसी प्रकार का कोई दाग नहीं पड़ता, उसने यह भी पढ़ा कि वायु अंचल में ग्रासिया जाति के नील आर्य भी देवी की प्रसन्न करने के लिए बनाये गए

किसी भी क्षेत्र में सफलता के सात गुण

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सफलता पाना चाहता है, वह चाहे नौकरी करने वाला हो या व्यापारिक क्षेत्र में कार्य करने वाला हो, वह चाहे डाक्टर हो, इंजीनियर हो या कोई अन्य व्यवसाय में संलग्न हो, प्रत्येक व्यक्ति की यह आकांक्षा होती है कि वह अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त करे, पूर्णता प्राप्त करे और ऊँचाई पर पहुँचे।

इसके लिए वे भरसक प्रयत्न भी करते हैं, पर वह आवश्यक नहीं कि उन्हें सफलता ही मिले, प्रयत्न करने के बावजूद भी व्यापार नहीं बढ़ पाता या नौकरी में प्रमोशन नहीं हो पाता, या आर्थिक उन्नति में सफलता नहीं मिल पाती, इसके लिए समाज विज्ञानियों ने सफलता के सात गुण बताये हैं, जिनको अपनाने पर निश्चय ही आप अपने क्षेत्र में सफलता पा सकते हैं।

१- हमेशा सुसज्जित रहिये, आपका व्यक्तित्व ही आपकी पूंजी है, दूसरों के सामने आपका व्यक्तित्व ही आपको सफलता प्रदान करेगा, बात जब घर से बाहर निकले तब प्रीति में अपने आप को देख लें कि क्या आप सभी दृष्टियों से सुसज्जित हैं।

२- हमेशा अपने से उच्च स्तर के व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित कीजिये, ती शतमान्य की अपेक्षा एक उच्च स्तर का व्यक्ति ज्यादा सहायक हो सकता है, और आपको आगे बढ़ाने में अनुकूलता प्रदान कर सकता है।

३- कंजूस मत बनिये, जहाँ पर जितना व्यय करना पड़े जरूर करिये इस बात का ध्यान रखिये कि मित्रता निभाने में स्वावृत्ति आवश्यक होता है।

४- सर्वथा क्रोध रहित रहिये, सामने वाला कितना ही उत्तेजित हो आप अपने आप पर पूरा नियन्त्रण रखिये, आपकी यह अक्रोधता ही आपको सफलता प्रदान करेगी।

५- व्यक्तियों से सर्वथा दूर रहिये और किसी भी प्रकार के व्यसन के गुलाम मत बनिये, इससे आपका व्यक्तित्व निखरेगा।

६- नित्य एक नवीन मित्र बनाइये, आप अनुभव करो कुछ ही दिनों में आपके पास मित्रों की एक तासी बड़ी सख्या हो गई है।

७- किसी भी क्षेत्र में पूर्ण सफलता पाने के लिए "सिद्धि साधना" सम्पन्न करिये, "सिद्धि साधना यन्त्र" के सामने निम्न एक मन्त्र आप निम्न मन्त्र का करिये—

मन्त्र

ॐ नमो भद्रे हुं।

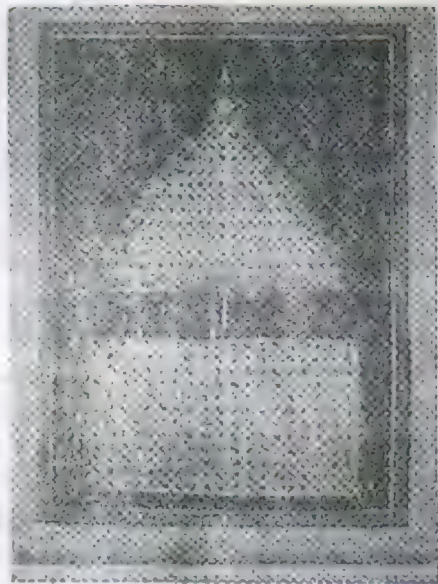
आप स्वयं अनुभव करने कि आप प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की ओर अग्रसर हैं।

और उसके मन में एक विचार कौटा कि यदि वह बिना तीख की जाय तो फास में तो क्या पूरे यूरोप में इरामा का मंच आयेगा, रहकली हुन, अंगारों पर नृत्य नला कोई नामुसी बात नहीं है, जब चारों तरफ शपटें उड़ रही हो, जब अंगारों के पास जाने से भी लोग हिचकिचा रहे हो ऐसी स्थिति में क्या शक्यता है अंगारों पर नृत्य करना माने धारा में एक अद्वितीय नृत्य की आवश्यकता और यही शब्द उल्लेखित करता है कि अंगारों पर नृत्य यूरोप में हो जायेगी।

और उसने एकत्र निश्चय कर लिया कि मुझे यह बिना तीख की ही है, अपने इससे संबंधित कुछ और अपने मनसाई और उत्तम प्रदर्शन किया, उसे दिखाता है कि इस प्रकार के प्रदर्शन में किसी प्रकार का मंच खत फट या झूठ नहीं है, किसी प्रकार का याता-यात केन पाँवों पर नहीं लगाया जाता, किसी भी प्रकार का कपड़ा या प्लास्टिक नहीं बांधा जाता, यह सब कुछ अपने ध्यान में प्रामाणिक है और यथार्थ है, अपने संबंध में कोई गुंजाइश नहीं है।

और फिर भारतवर्ष में किसी एक स्थान पर नहीं किन्तु कई स्थानों पर यदि इस प्रकार का नृत्य सम्भव होगा तो तो यह बिना तीख की मुझे क्या बिना नहीं है, योषु भारतवर्ष की जानी पहिचानी विधा है, यह है कि इसकी सीखने के लिए या भी किसी ऐसे व्यक्ति की सेवाएँ प्राप्त की जाय कि उस समय से हो या फिर भारत का और उन लोगों ने बिना नृत्य को इन नृत्य में रहा हो और उनसे यह विधा सीखी जाय।

उसने पूरे फ्रांस में माधुमन्त्र परधान को इन विधा का जनकार हो परन्तु उसे कोई व्यक्ति न हो या सम्भव नहीं बिना जो दावे के साथ यह कह सके कि वह अंगारों पर नृत्य कर सकता है, या नृत्य बिना लगता है और इस में निम्न प्रवृत्ति ने निश्चय कर लिया कि भारत का पर यह बिना सीखी जा सकती है, वहीं पर इस विधा



की भारीकिया जान हो सकती है, पहले भारतवर्ष चला जाय वही जाने पर अपने साथ कोई साधु सत्यासी या योगी भिक्षु ही जायेगा जो कि इसे सिखा सकता हो, पर इसके लिए साधुजगदी का वेत और दम्न खीझना होगा, मायात्मक दूरिस्ट को तरह जाना होगा, और खुली भाँडों के इस बात को सम्भव होना और जब स्थान में यह निर्णय कर लिया तो एक दिन उसने फ्रांस की तरफ खींच दी और भारत के पलमहवाई ब्रह्म पर उतर गयी।

इसमें माधुमन्त्र में डीरे डीरे ही निश्चय कर लिया था कि नृत्य जाहू की ओर जाता होगा, जो कि राजस्थान में है और वहीं पर किसी गिरागिरा जगति के लोगों में मिलना होगा, वह वहाँ से तीथी ट्रेन द्वारा काबू जा पहुँची और तीन चार दिन यात्र की पुमनोहर प्रकृति ऊँचे ऊँचे पर्वत घाट हरी हरी उपत्यकाओं में अपने भारी थकावट को दूर कर दी।

एक दिन वह कुछ गिस्तर जो कि अरावली पर्वत की तरफ से ऊंची ओझी है वे भीमे उतार रहों थी कि उसे एक तरफ एक ओषध सभासी था हुआ दिखाई दिया, लम्बे लम्बे बाल बिखरी हुई अटाए, सोरे शरीर पर रज्ज मसी हुई और सोनी के नीचे एक टाठ का टुपड़ा लपेटे हुए, श्वेत ने आश्चर्य से देखा कि जहाँ पर वह बैठा हुआ है, उसने अपने चारों तरफ लकड़ियाँ अला रखी है, उसके मध्य में बैठा हुआ, वह ओषध भिरभार मंत्र ध्यान में तल्लीन है श्वेत ने आश्चर्य के साथ देखा कि चारों तरफ सुदृशनी हुई जलती हुई लकड़ियों की आग धरम आग में काफ़ी तेज है, श्वेत समझने लगे कि सोरे पर खड़ी था फिर भी वह उन सुनी जलती हुई लकड़ियों की आग को प्रकाश के साथ सहन कर रही थी जब कि वह ओषध उसके मध्य में बैठा हुआ निश्चल भाव से आँखें बन्द बिदे मन्त्र जाप कर रहा था, म तो उसके मन में किसी प्रकार का प्रदब्ध का भाव था और न किसी प्रकार का कोई दिक्का ही, वह अपने ही ध्यान में और अपनी ही नाधना मग्न था।

श्वेत ने अनुभव किया कि मैं जो निचा सीखना चाहती हूँ वह निचा इसके पास हो सकती है, यदि चारों तरफ धुँ धुँ करती हुई लकड़ियों और आग की लपटों के बीच सुस्कारता हुआ वह बैठ सकता है तो निश्चय ही अंगारों पर भी चल सकता है, मेरा जो लक्ष्य है मैं जो कुछ सीखना चाहती हूँ वह इस ओषध से सीखा जा सकता है और वह दूर पक्षर की एक चट्टान पर बैठ गई और एक एक उस ओषध को निहारती रही।

लगभग एक घण्टे बाद जब लकड़ियाँ जलकर अंगारों में परिवर्तित हो गई तो उस ओषध ने धार्ष्ट्य खोली और उन अंगारों को—उम बहकते हुए अंगारों को नुटों में ले ले कर मसलता रहा, ऐसा कर रहा था कि जैसे वह सहकते हुए अंगारे न हो सन्निह छोटे मोटे कंकर परभर हों, जब वह उन अंगारों में सेल चुका तो अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ, और बिड़े हुए मृगचर्म की वस्त्र में बजाकर अंगारों को पाथों से रौंदा हुआ बाहर निकल आया।

ज्यों ही वह ओषध बाहर निकला श्वेत ने आगे बढ़ कर प्रणाम किया, ओषध ने एक बगल श्वेत को देखा उस मन पर उसकी सुन्दरता का कोई प्रभाव नहीं पड़ा वह एक शरक चल दिया, पहली बार श्वेत ने अपने सोन के समान अनुभव किया, पहली बार अपने यौवन पराजित होते हुए देखा, पर फिर वह हिम्मत कर ओषध के सामने जा खड़ी हुई और धुक कर चरणों पर पड़ गया।

ओषध ने पूछा क्या बात है, क्या चाहती हो ?

भारत आने के पूर्व श्वेत ने काम चलाक़ हिंसावादी भाव ली थी, अटली अटलत बोली मैं आप सिखा होना चाहती हूँ और अपनी अपनी जो कुछ देना है वह विद्या आप से सीखना चाहती हूँ।

ओषध जोरों से हँसा, बोला तुम बहुत नाजुक और वे साधनाएं बहुत कठोर हैं, तुम्हारा शरीर वे साधनाओं का बोझ कीसे सहन करेगा ?

श्वेत से उत्तर दिया मैं अपनी हर कसौटी पर उसक भी और आप जिस प्रकार से भी मुझे साधना सिखायेंगे, उसी प्रकार से सीखने का प्रयत्न करूँगी फ़ांस से सार्ई हूँ, मेरा नाम श्वेत है और मैं केवल य विद्या सीखने के लिए फ़ांस से चलकर भारतवर्ष पहुँच हूँ।

ओषध को श्वेत की बातों में सतता अनुभव उसकी आँखों में बड़ निक्कल देखा और अपने पीछे के लिए मद्ध दिया।

ओषध वहाँ से चलता हुआ, समान में आकर गया, श्वेत की उस समान में पहली बार एक छी के पास खड़ी थी, फिर भी उसके मन में किसी प्रकार भय या संकोच नहीं था, उसके मन में एक संकल्प हृदय में बड़ निश्चय था और उसे विश्वास था कि अवश्य ही इस साधना को सिद्ध कर चुंगी।

प्राये वड
देख उसके
पडा धनिक
है सोन्य
कीन को
है करके
पारपी को

हो ?

तक हिन्दी
मै-प्रत्यक्षी
कुछ मैने

ननुक हो
भीर होती

मि या करी
मै भावना
अहंमी है
मयल मही
मर्म मही

मनुष्य हरी
मिने अहं

आकर भी
एक भीक
मि प्रकार को
मंशय था
मि कि

श्वेत लगभग एक महीने तक उस शीघ्र के पास
सम्मान में ही रही, शीघ्र को भी जाता उनकी एक
मोहों में रोटी बना देता, जो शीघ्र खाता, श्वेत भी
वह खाकर सन्तोष अनुभव करती, अहा कठोर नियन्त्रण
वा शीघ्र का, बड़ी छ साधना भी अंगारों पर चलने
की और श्वेत ने नियन्त्रण का काम ही शीघ्र
का प्रत्यक्ष किया, उतने सबसे पहले प्रायश्चित्त किया सोचि
मुझसे देवक का सम्मान किया, पापी का मन्तव्य बनाने
वा सम्मान किया और फिर मुख्य साधना प्रारम्भ की।

श्वेत लगभग चालीस दिन तक उस शीघ्र के साथ
रही, इन चालीस दिनों में उसने पश्चात्ति तन किया,
अग्नि को निरुद्ध किया बंगारों पर खड़े होने का प्रयत्न
किया, अंगारों को हाथ में ले कर खेलने की क्रिया सम्पन्न
की और बहुते हुए अंगारों पर बैठने उठने नाचने का
मन्त्र अनुभव प्राप्त किया, और फिर शीघ्र से विदा ली।

शीघ्र को शीघ्र या त तो श्वेत के जाने में प्रसन्नता
प्रकट की और न जाने का उसे दुःख हुआ, उसने तर्पण

आप में अपराजिता प्रतिभा है,

उसे उजागर कर सकते हैं विषयना साधना से।

जैन धर्म में विषयना साधना का अत्यधिक महत्त्व है, विषयना का मतलब है, अपने मन को
बराबर भाँज रहे वा और उस पर कठोर नियन्त्रण करना।

हमोक्त यह है कि मनुष्य का मन पर नियन्त्रण नहीं होता, इसलिए वह कभी कासी हो जाता
है, कभी उसमें क्रोध की भावा बह जाती है, कभी यह लालच में आ जाता है और इस प्रकार मन के
वच्छ वर्षण पर इन काम, क्रोध, लोभ, मोह की धुंधली सी परत छाती रहती है, और धीरे
धीरे मन धुंधला सा हो जाता है और व्यक्ति की आध्यात्मिक और साधनात्मक प्रतिभा समाप्त हो
जाती है, वह केवल कामुक, भोगी और अश्रम बन कर रह जाता है, साधना में उसको सफलता नहीं
प्राप्त होती, धीरे धीरे उसकी मनुष्यता समाप्त हो जाती है इन सारी खराब और विपरीत स्थितियों
के अनुकूल बनाया जा सकता है, विषयना साधना से।

धर्मचार्यों ने बताया है कि रोज रात्रि को सोते समय अपने दिन भर के किये गये दुष्कर्मों
को याद कर लेना चाहिए और प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि भविष्य में ऐसे दुष्कर्म नहीं करूँगा
जो प्रकार प्रातःकाल की सही क्रिया अपनानी चाहिए, इससे धीरे धीरे चित्तवृत्तियों में सुधार
होता है, और दिन भर मन पर जो धुंधलापन छाता है वह दूर हो जाता है, धीरे धीरे इसका
प्रभाव बढ़ता जाता है धीरे एक दिन ऐसा आता है कि उसका मन पवित्र, वच्छ और वर्षण की
उपद्र निर्मल हो जाता है, ऐसी स्थिति होने पर वह गलत कार्यों की और नहीं बढ़ता उसके हाथों
से गलत काम होते ही नहीं, घरे रातों पर पाँच रखते ही उसका मन धिक्कारने लग जाता है, कि
तुम यह गलत काम करने जा रहे हो और यह उन बुराईयों से बच जाता है, इस प्रकार धीरे धीरे
व्यक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से परे हो कर पूर्ण शुद्ध चैतन्य एवं निर्मल हो जाता
है और ऐसा ही व्यक्ति साधना क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है।

किया है वी, और चंचल बिना एक क्षण भी गंजाये मारक
ते फोन की दरती पर उतर गई।

चंचल ने यह निश्चय किया कि मुझे प्रभुशक्ति नृत्य
प्रस्तुत करवा है और ऐसा नृत्य जो पूरे संसार में दहकता
मर्यादा के और उतरे बिना प्रसिद्ध होवे। एक्करडाईजिंग
को सेवाएँ प्राप्त की और एक दिन निश्चय कर लिया कि
फॉस के प्रसिद्ध प्रोबन स्टेडियम में वह चालीस फीट
बड़े दोस फीट चौड़े और दस फीट गहरे गड्ढे में बहकते
हुए अंगारे भर कर उस पर नृत्य प्रस्तुत करेगी, इसके
लिए उसने तारीख भी निश्चित कर दी, २४ अगस्त
१९६७ रात ५ बजे।

चंचल... और वह भी बहकते हुए अंगारों पर नृत्य
विशेष भी सुना, सन यह गया, वह कैसे संभव है, चंचल
को तो देखने के लिए लोग रोकड़ों जालर खर्च करने के
लिए तैयार थे, और फिर वह चंचल अंगारों पर नृत्य
प्रस्तुत करती है तो वह तो अपने धर्म में अविश्वस्य नृत्य
होना, कुछ सम्भवता दावाओं में इसे बेचूकी भरा कदम
संज्ञा को कुछ में इसे इस समय बताया, कुछ ने सिखा कि
कि यह एक टिक हो सकती है।

चंचल ने साठ लोगों को एक कमेटी बना दी, हेनो-
विजन के द्वारा स्थापित करवा दिया कि नृत्य के समय
उन विशेषताओं के समान ही वह अपने शरीर का परीक्षण
करवायेगा और यह कहा देगा कि जगह पती किसी
अंगारों की टिक का इस्तेमाल किया है और न किसी
प्रकार के रसायन का तेल हाथों और पैरों पर किया है,
अंगारों जांच करके अब पूरी तरह से प्रामाणिक कर देगी
तभी यह नृत्य प्रस्तुत करेगी।

इस प्रस्ताव से तो हलकस सा नृत्य गया, अब तो एक
करके की कोई गुंजाइश भी बाकी नहीं थी, प्रत्येक
थालों की शीलवी दंड को गर्म थी और नाच तीन दिनों
में ही दो गहने पहले ही पूरे स्टेडियम के टिकट गहने
दावों पर बिक गये थे, एक एक टिकट ब्लैक में बिक रहा
था और ऊँचे अधिकारी को भी एक टिकट पाने के लिए

सारा नृत्य करती पड़ रही थी।

बहकते हुए अंगारों पर गुलाब का फूल

और २४ अगस्त ६७ का संपत्काल, पूरा स्टेडियम
संचालन मरा हुआ था, लगभग पूरे संसार को टेलिविजन
टीमें इस बहकते नृत्य को कैमरे में बन्द करने के लिए
प्रस्तुत थी टेलिविजन चैनल के मालिकों ने पहले से ही
उस चैनल पर सीधा प्रसारण करने का अधिकार प्राप्त
कर लिया था, स्टेडियम के बाहर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था थी,
चालीस फीट लम्बा भीस फीट चौड़ा और दस फीट
गहरा गड्ढा पहले से ही खोद कर विशेषज्ञों की दिखाना
जा चुका था और ठीक समय पर उठे बहकते हुए अंगारों
से नज्दीकों द्वारा भर दिया गया था, फिर चंचल के सारे
शरीर का निरीक्षण किया गया, बायाँ और से कपड़ों का
हाथ पैरों का का दृष्टता से निरीक्षण किया गया और
अंतर्गत बाहर आकर एनाउन्स किया कि चंचल ने पावों
पर वा बरीर पर किसी प्रकार का कोई तेल या रसायन
नहीं लगाया है और पूरा स्टेडियम तालियों की दमगड़ा
हट से भर गया।

ठीक पांच बजे चंचल सन्धर गति से कमरे से बाहर
निकली, लोग घाँवें फाड़े उस सुन्दर नाचक, कोमल
गुलाब के पुष्प को चलते हुए देख रहे थे और साथ ही
साथ वे देख रहे थे बहकते हुए अंगारों को, जिसमें
अंगारों जोड़ों से बहक रहे थे और उनमें से एक एक फीट
की लम्बा बाहर निकल रही थी, उस कुछ की फॉस
कतली देख थी कि इस फीट दूर भी खड़ा होना मुश्किल
था।

चंचल बखबर आगे को और बढ़ रही थी और टेलि-
विजन कैमरे उसके एक एक अंग को फेंद कर रहे थे
सारा स्टेडियम सन्धर सा पैर रहा था, प्रेस केतरी अंग
अंग बरी हुई थी और चंचल बिना किसी हिचकिचाहट
के आगे की ओर बढ़ रही थी, स्टेडियम का आलम था
या कि उसमें तिल रखने की भी जरूरत नहीं थी कि

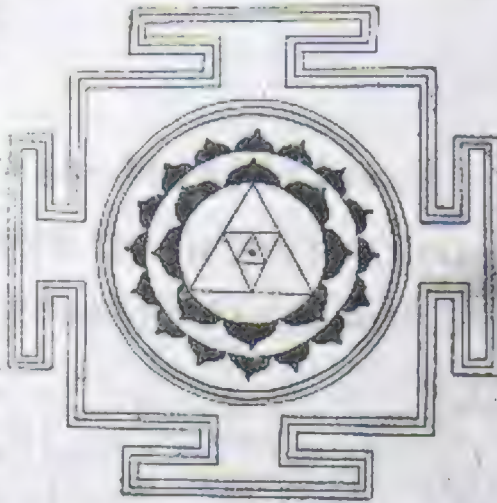
कम रहा था कि जैसे माना जाता था कि यमज नडा हो। युरोप
हो नहीं पाया। सत्तार के ऊँचे से ऊँचे योगी इस दृश्य
को देखने के लिए विशेष रूप से प्रेरित हुए थे।

दृष्टान्तों हुए अग्नि कुण्ड के पास कुछ क्षणों के लिए
चलते रहे, उसने अग्नि कुण्ड की परिकल्पना की और
उपरिष्ठत समुदाय को प्रणाम किया और उसके बाद
अग्नि कुण्ड में तंग होकर बैठ गई।

सारा स्टेडियम सारा रोके हुए दृश्य देख रहा था उन्हें
विश्वास नहीं हो रहा था कि इतना कोमल शरीर इस
दृष्टान्तों हुई आँच पर अंगारों पर सज्जित सकता है, पर
इसके विचित्रता यो उनके नृत्य को पहले से ही अनुभव था
और वह तल्लीनता के साथ उन अंगारों पर नृत्य कर रही
थी, जैसे कि कोई सुन्दरी मन्दमंजरी कोमल पत्तों के
नृत्य कर रही हो, वह अपने हाथों में दृष्टान्तों हुए अंगारों
से, उछालती, पाँच से ठोकर मारती और अन्तः पर नृत्य
करती जा रही थी।

अपने भाव में अद्भुत अन्तर्गत था अविनाशनीय
अन्तर्गत था जो तन्त्र के अन्तर्गत था। वह अन्तर्गत के
सामने मंथन हो रहा था, जो कि को विश्वास नहीं हो
रहा था वह अन्तर्गत मल मल कर देख रहे थे और स्नैल
कुण्डल कुण्डल स्नैल मस्ती के साथ फिर रही थी,
मनन रही थी, नृत्य कर रही थी।

समग्र एक घंटे तक नृत्य चला और सारा स्टेडियम
सारा यह नृत्य देखता रहा, एक घंटा कम बीत गया
पुछ पता हो नहीं जाता, और पूरे सत्तार घंटों के बाद
स्नैल छोड़ और अग्नि कुण्ड के बाहर निकली, अंगारों
थी भी दृष्टान्तों रहे थे और उसकी लपटें उठ रही थी पर
स्नैल बिल्कुल शान्त थी निर्विकार थी उसके चारों तरफ
उपरिष्ठत समुदाय को भारतीय मुद्रा में प्रणाम किया और
उपरि स्टेडियम के लोग खड़े हो कर तालियाँ बजाते रहे,
तालियों के शोर में सारा फाँस नगरी डूब सी गई थी



और इस दृश्य को केवल स्टेडियम में बैठे हुए लोग ही
नहीं देख रहे थे अपितु पूरे संसार के लोग टेलिविजन के
परों पर इस अद्भुत नृत्य को तात्त रोक देख रहे थे।

और अन्तर्गत बिन अन्तर्गत चारों ने अभी बड़ी सुविधों
के स्नैल के नृत्य को पूरी पूरी मंजरी थी, इसे अन्तर्गत
नृत्य दत्तान्त, अन्तर्गत था कि स्नैल अपने भाव में अन्तर्-
गत है और स्नैल एक ही नृत्य से पूरे विश्व में प्रसिद्ध
हो गई, इतनी अधिक भाव हुई कि घर में रखने के लिए
अगह ही नहीं रहे।

इसके बाद युरोप के अन्य स्थानों पर तीन नृत्य
अस्तुत किये फिर धार में स्नैल का मन इस भीषणता
से जब गया, उसने प्रसिद्धि, सम्मान, यश, और दीर्घता
का अन्तर्गत अपनी आँखों से देखा और फिर वह एक
दिन बिना किसी की वृत्ति के चुन चुन भारत निकल आई
और गुरुकुल कुरुक्षेत्र कर सम्भाली बन गई।

अन्तर्गत स्नैल शायु के महत्त्वपूर्ण आक्षेप में तन्त्र
को विविष्ट समझाए तोखने में तल्लीन है।

✽

अब संसार में कोई भी स्त्री असुन्दर नहीं रह सकती

सौन्दर्य अपने आप में अत्यन्त ही मधुर और आनन्ददायक मन्त्र है आज के ही नहीं वैदिक काल से स्त्रियाँ अपने सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए प्रयोग करती रही हैं, यशुवेंद के कई ग्रंथों में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि उन्होंने सौन्दर्यनय बनने के लिए जहाँ देवताओं से प्रार्थना की वही विविध प्रलेखों से अपने आपको सजाने का भी प्रयत्न किया।

धीरे धीरे सौन्दर्य के मान दण्ड बगने लगे और योरात्मिक काल में आते आते स्त्रियों के सौन्दर्य पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा, अत्यन्त स्त्री यह चाहती थी कि वह दूसरों के सामने सुन्दर दिखे, प्रत्येक स्त्री के मन में यह आकांक्षा थी कि वह इस प्रकार सजने का प्रयोग करे, जिससे उसकी अत्युन्दर भावा सुन्दरता में वृद्धि पाये, इस समय तक यशुवेंद का प्रयत्न काफी हो गया था, और उनके माध्यम से वह भी स्पष्ट हुआ था कि यशुवेंद से संबंधित जड़ी बूटियों के सेवन से भी सौन्दर्य को निश्चाया जा सकता है।

इसके बाद तो इस पर नित्य नवीन शोध होती रही, नित्य नवीन प्रयोग होते रहे, और यशुवेंद की उन जड़ी बूटियों को ढूँढ कर निकाला जाने लगा, जिसके माध्यम से सौन्दर्य को बढ़ाया जा सके, जिसके माध्यम से पूर्ण स्वस्थ शरीर बनाया जा सके, और जिसके माध्यम से श्रद्धा और आकर्षण प्रदान किया जा सके।

आतीयास ने सौन्दर्य के—पूर्ण सौन्दर्य के बारह गुण बताये हैं जो स्त्री इन बारह गुणों से युक्त है, वही वास्तव में सौन्दर्यमयी कहो जा सकती है, एक महत्वपूर्ण श्लोक में आतीयास ने अपनी प्रेमिका को सौन्दर्य के इन गुणों को बताने हुए कहा कि आज और भविष्य में भी इन बारह गुणों से युक्त स्त्री ही सौन्दर्यमयी कहना सक्ती है।

(१) जिसका कद पूरा हो अर्थात् लगभग ५ से सवा पाँच के पास पास ऊँच श्रेष्ठ कहलाता है।

(२) शरीर में जालतु मात्र न हो, परन्तु पूरा शरीर पोष्टिक हो।

(३) जिसका वसस्थल धीरे धीरे बराबर ताप के हो पर कमर सर्वथा पतली हो, प्राधुनिक समय में यों कहा जा सकता है कि यदि वसस्थल और ऊँचे २६ इंच के हों तो कमर २४ इंच के साथ पास होनी चाहिए।

(४) गिर के बाल धम्मे, घने, भमकीले और लह-राते हुए हो, ऐसा लगे कि जैसे पर्यंत शिखर से कोई झरना नीचे गिर रहा हो।

(५) अम्बाकार चेहरा हो, तथा चेहरे पर किसी प्रकार का कोई दाग धब्बा या भस्मा न हो।

(६) आँखें बड़ी बड़ी सुन्दर और सम्मोहन युक्त हो, पलकें भन्ना हो, जिसके माध्यम से वह किसी को भी आकर्षित करने में सक्षम हो।

(७) सादा शरीर मोटा हो जिस प्रकार दूध से

कमर डालने पर दृढ़ लाल रंग जैसा तेसखे गारा हो जाता है ऐसा ही रंग सौन्दर्य की परिभाषा माना गया है।

(२) उभय उरोंत, मस्तक पीठ और शरीर जवाए मोन्दर्ययुक्त नाली गई है।

(३) शरीर पर बाल नहीं के बराबर हो और सांरा

शरीर गारा और आकर्षक हो।

(४) वस्ती वाली अत्यधिक मधुर और आनन्द प्रदान करने वाली हो साथ ही साथ उसके उठने बैठने और चलने का एक शिष्ट तरीका हो जिससे कि सामने वाला सम्मोहित हो सके।

सौन्दर्य बल्ली

यह एक महत्वपूर्ण पीधा है और पौराणिक काल से इसे "सौन्दर्य बल्ली" के नाम से पुकारा जाता है। इस पीधे की ऊँचाई लगभग तीन सार्डे तीन फीट होती है, इसके पत्ते लम्बे मुकीले और पीलापन भिजे हुए हरे रंग के होते हैं, इसका तना अत्यधिक चिकना और आकर्षक होता है, इस पर बादास के साकार के गारा फल लगते हैं जिसमें गुठली नहीं होती, वसन्त ऋतु में साल में एक बार इस पर गुनहरे रंग के पुष्प निकलते हैं, जिससे यह अत्यधिक सुन्दर पीधा दिखाई देता है, इन फूलों की यह विशेषता है कि रात्रि में ये पुष्प दीपक की तरह टिम टिमाले हैं और रोशनी देते हैं जिससे दूर से ही इसे पीधे की पहिचान हो जाती है।

इन पीधे के आस पास की भूमि तेल युक्त हो जाती है ऐसा लगता है कि जैसे पीधे के चारों ओर तेल बिल्लस गया हो, पंर पात की मिट्टी उठाई जाय तो तैलीय अनुभव होती है, इसके तने के चारों ओर कोई न कोई साँप लिपटा रहता है या तने को खोदते समय नीचे से साँप अवश्य ही निकलता हुआ दिखाई देता है, इसी से अमृत बल्ली पीधे की पहिचान होती है।

यह साँप अत्यधिक अहरीला, काला, और लम्बा होता है, फुफकार छोड़ने पर पास में खड़ा व्यक्ति जहर के प्रभाव से समाप्त हो जाता है, यदि यह साँप किसी को काट ले तो निश्चय ही उसकी मृत्यु हो ही जाती है, इस पीधे की जड़ को प्रान्त करने के लिए साँप को निकालना या पकड़ना जरूरी होता है।

लोहे का एक पिजरा बना कर व्यक्ति पास में ही बने मचान पर बैठ जाता है, और फिर लोहे की किसी मुकीली जड़ से पास की बरती को खोदने की प्रश्रिया शुरू की जाती है, थोड़ी ही देर में जब फुफकारता हुआ सर्प बाहर निकलता है तो उस पर वह लोहे का पिजरा डाल दिया जाता है जिससे वह साँप कैद हो जाता है, और फिर इस साँप को पिजरे में ही बंद कर दूर ले जाया जाता है और तब इस पीधे की जड़ को खोद कर बाहर निकाली जाती है।

यह मणिधर सर्प होता है, कुछ लोग इसे मार कर इसके मस्तिष्क से मणि निकाल लेते हैं जो सर्वमणि कहलाती है, और जिसे संसार की दुर्लभ मणी कही जाती है, यह रात में हीरे की तरह जलती है।

(११) ललाट थोड़ी, मुँहकीली नासिका, गुलाब की पंखड़ियों की तरह होठ और थोड़ी ती निशानी हुई हुई आनन्द को मानी गई है।

(१२) सादा धारण एक दिव्य आनन्द में डला हुआ था ही, जिसने देखने वाले की कोई आशी नजर न आये।

उपरोक्त वाचक विवेचनाएँ, सोन्दर्य की विशेषताएँ मानी गई हैं, और इन विशेषताओं से युक्त तरुणी ही सोन्दर्यमयी कही जा सकती है।

कालीदास के समय में वैश्याओं को नगर शत्रु कहा जाता था, वे बदमाला नहीं होती थी अपितु जीवन भर किसी एक पुरुष की ही होकर रह जाती थी, और वह पुरुष उनके रहन सहन, चान पान और जीवन निर्वाह का पूरा भ्रम उठाता था वह उस समय में सभ्यता का एक मान दण्ड मंशा जाता था, उच्च धर्म के लोग इस प्रकार नगर शत्रु से युक्त होकर अपने आप को सौख्यवादी मनुष्य कहते थे, जिसकी उप पत्नी तो नगर शत्रु या प्रेमिका श्रितनी ही अर्थात् सुन्दर होती थी, समाज में उसका स्तर उठता ही ऊँचा उठ जाता था।

उस समय दिव्यगना की नर्तन गायत्री से होने लग गई थी, मात्र १७-१८ वर्ष की आयु में ही उसको चर्चा और उसके सोन्दर्य की बात थीत जन साधारण में फैलने लग गई थी, इससे पहले ही कालीदास दिव्यगना की माँ के मात पक्षे और दोर दिव्यगना को अपनी प्रिया बनाने का प्रस्ताव रख दिया।

कालीदास जैसा समाज का प्रतिष्ठित और सम्माननीय व्यक्ति दिव्यगना को अपना ले, इससे ज्यादा आनन्द को क्या बात हो सकती है, दिव्यगना की माँ ने सह्य स्वीकृति दी।

कालीदास घन्टापुर में ऊँचे मोर पहली बार दिव्यगना को देखा वास्तव में ही वह सोन्दर्य की काश्चर पुँज थी, सोन्दर्य के जो मानदण्ड होते हैं, उस पर वह लगभग सभी उत्तर रही थी, परन्तु कालीदास तो कालीदास ही

थे, उन्होंने मन में सोचा कि दिव्यगना एक ऐसी सोन्दर्य पुँज बने, जिसे पाने के लिए हजारों सम्माननीय व्यक्ति तड़पते रह जाय, जिसकी भलाय देखने के लिए धन्यो इन्तजार करें जो अपने प्राप के देशग सोन्दर्य ही, पर इसके लिए कुछ और भी उपाय जरूरी है, और उसने दिव्यगना की कड़ा निश्चय ही तुम सोन्दर्यमयी हो, और अपने प्राप में प्रवल आकर्षण रखती हो, परन्तु हमें यह स्मरण रखना है कि तुम कालीदास की गणिका हो, और ऐसी गणिका अपने प्राप में प्रतितीय होती है, न इसके लिए जरूरी ही कोई उपाय करूँगा और निश्चय ही मैं तुम्हें संसार की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी बना दूँगा, एक ऐसी सुन्दरी जो अपने प्राप में देवाग और प्रतितीय हो, एक ऐसी सुन्दरी, जिसको देखने के लिए ननुप्य हो क्या देवता भी तरसे, एक ऐसी सुन्दरी जिसका नाम होशों पर आते ही, युवक तड़क कर रह जाय, और मैं तुम्हें ऐसा लक्ष्म्य देना चाहता हूँ जो अपने प्राप में आश्चर्य चकित करने वाला हो।

उस समय प्राप्तिदाशाय सुधन्वा का नाम प्रायः नगरी में ही नहीं अपितु पूरे भारतवर्ष में विख्यात था, प्राप्तिदाश का उन्हें अद्भुत ज्ञान था, कालीदास ने स्वयं उन्हें आज्ञाया था और अनुभव किया था सुधन्वा अपने अपने प्राप में अद्भुत ज्ञेयराज है, जिनके पास महत्त्वपूर्ण प्रयोग हैं।

कालीदास सीधे सुधन्वा के पास पहुँचे, कालीदास को अपने घर आया देख कर सुधन्वा नदग्न हो गये, मने से मिलते हुए बोले, प्राय में और मेरा घर धन्य हो गया है जबकि आपके कारण यहाँ पड़े, परन्तु जरूर प्राप तिस विशेष उद्देश्य से आये होंगे, प्राप मुझे माझा दें, प्रवश्य ही आपकी इच्छा की पूरी करने का प्रयत्न करूँगा।

कालीदास प्रापस पर बैठ गये और धीरे धीरे अपने मन की बात, सुधन्वा को बता दी, कालीदास कहा, प्राय कोई ऐसी श्रौपथि तैयार करें, जो अपने मन

सौन्दर्य में अधिकारी हैं, और मैंने अपने क्लोथ में सौन्दर्य की परिभाषा लिखी है, सौन्दर्य के बारह गुण बताये हैं उस पर विचारणा करी उतरे, यद्यपि इसमें कोई दो राय नहीं कि दिव्यता सुन्दर है, प्राकृतिक है, सम्मोहक है परन्तु मेरे मन में तो कुछ और है, मैं तो यह चाहता हूँ कि वह दिव्य को पृथ्वीय और प्रथम सौन्दर्य घातिनी

सौन्दर्य वटिका

सुयन्त्र ने जो फार्मूला सौन्दर्य वटिका के लिए प्रयोग किया था वह काफी वर्षों तक गोपनीय रहा, भारत के अधिकतर आयुर्वेदाचार्यों का प्रयत्न इस फार्मूले को प्राप्त करने से संबंधित था और उन्होंने इसकी खोज भी की।

पिछले दिनों मंडी (हिमाचल प्रदेश) में रहने वाले एक पंडित वैद्य की सुयन्त्र की लिखी हुई एक पुस्तिका प्राप्त हुई है जिनमें कई मुखे लिखे हुए हैं, ये सभी मुखे पुरुष सौन्दर्य और विशेष कर नारी सौन्दर्य को उजागर करने के लिए हैं, इसी पुस्तिका में सौन्दर्य वटिका का भी प्रयोग एवं विवरण दिया है जिसे मैं पत्रिका पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ।

सौन्दर्य वटिका पाँच के पाँच के प्राण किये जायें यदि ही तूला सौन्दर्य वटिका जड़ी हो तो चक्कास तोला बना का गुदा लिया जाय, पञ्चस ले पसे, बारह सोले पुष्प तथा छः तोले उसके फल लिये जायें, और इन सब का छाया में सुखा दे, सुखने पर इन सब को घलग घलग पीस कर बारीक पाउडर बनावें।

फिर एक किलो हरे यावले ले कर उसका छिलका तथा उसकी गुठली निकाल दी जाय, और फिर उनको दो किलो पानी में भिगो दे, तीन दिन तक पानी में भीगने के बाद उनकी उस पानी में ही मसल कर एक रस कर दें और किसी मलजल के बारीक कपड़े में छान ले।

फिर उस पानी में जो मैंने सौन्दर्य वटिका के पाँचों मूल बताये हैं वे उसी क्रम से मिलाते हुए घोटते रहे और फिर इसमें जायफल, जायत्री, हल्दी, धिरोवन, लौंग, पापाय, भेद तथा रस कपूर बराबर नाया में ले कर बारीक कर हस्त में मिलावें और इसको घट्टा घिक घीमी भाँच में पकावे तथा सफ़ेदी की छण्टी से घाँच पर इस घाँच को घुमाते रहें, जब यह घोल गाढ़ा हो जाय, और पानी भाप बन कर उड़ जाय तब उसको किसी स्टील के पात्र में रख दें और जब गोली बनाने के लायक हो जाय तब चने के आकार की गोलियाँ बना लें।

सेवन करने से पूर्व छः दिन तक त्रिफला का चूर्ण ले कर पेट साफ कर लें और फिर नित्य दो गोली सुबह और दो गोली शाम सेवन करें, कम से कम यह दस दिन का कोर्स ले और ज्यादा से ज्यादा तीस दिनों का।

सेवन के समय खड़ी चीजें, सब्जियाँ और मरिचक भोजन न करें, तो वास्तव में ही इसके हाथो हाथ चमत्कारी परिणाम देखने को मिलते हैं।

जैसे जिसके सामने प्रभा, पर्वतों और मलयों की तुल्य
जगते खड़े, पर ऐसा सौन्दर्य नाम अधुनेक के द्वारा ही
संभव है, और मैं इसी लिए अपने घर पर उमस्वित
हूँ।

सुषम्बा ने कहा, मैं इसका प्रयोग किया है, और जो कुछ आपने कहा है, जो कुछ आपने मन में है, तथा दिव्यगंगा को जिस प्रकार से घाप बनाना चाहते हैं, उसके अनुसार उसको सौम्यपणे मुक्त बनाई जा सकती है, मैंने "वीनियर्स क्लली" गोप के द्वारा सौम्यपणे बुद्धि का निर्माण कर घनवी पुत्री पर ही प्रयोग किया था, और आप स्वयं इस प्रयोग का प्रमाण देख सकते हैं, ऐसा नहते कहते मुझभा ने अपनी पुत्री को घाव डाला था, और ज्यों ही सुषम्बा की पुत्री सुवामिनी उपस्थित हुई, वाली दास उसे ले रख गये, ऐसा लगा कि जैसे हृदय को धड़कन एक गई हो, धाँकि उसके चेहरे पर टिको तो हृदय का नाम ही नहीं ले रही थी, एक ऐसा वीनियर्स गृज सामने खड़ा था, जिसके प्राणि विष्णिगना तुष्य थी, ननय थी ।

मृगशा की संकेत पर, मृगानिना अन्दर चली गई,
भीरुत्व का लालीदास जीतन्य हुए, संयत होते होते चले
कुछ समय लग गया, बोले गृध्रन्दा! चारुत्व में ही प्राण
या द्वितीय प्राणुर्वेदाचार्य है, निने आपके प्राणुर्वेद की पहली
बार प्रत्यक्ष देखा है, भीरु में ऐसा ही सौन्दर्य, ऐसा ही
आकर्षण दिव्यांगना में चाहता हूँ।

सुधन्वा ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, मैं एक स्थाह के भीतर भीतर संबंधित शोधित बना कर आपको दे दूंगा और इसकी गहन विधि भी बता दूंगा, जिस एक गोली चुबह और एक गोली शाम को निगे से कुल्ल से कुल्ल स्त्री भी संसार को श्रेष्ठ चुनरी बन सकती है; यह गुटिका ही ऐसी है, जिसके नाश्वन से शरीर के रोग और शोष समाप्त हो जाते हैं, शरीर का आरोग्य और बड़ा वृद्धा नाश कम हो जाता है, वनस्पत अपने सही आकार में आ जाते हैं, और पेहड़ा बेदाग, लावण्य युक्त बन जाता है, यही नहीं अपितु इस गुटिका की यह विशेषता है, कि

तंज द्वारा अद्वितीय सौन्दर्य प्राप्ति

आयुर्वेद के माध्यम से तो सौन्दर्य प्राप्त होता ही है, तन्त्र के माध्यम से भी आश्चर्यजनक सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता है।

मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सौन्दर्य गुटिका प्राप्ता कर ले और शुकवार की रात्रि को यह प्रयोग उस गुटिका के सामने प्रारम्भ करें, इससे अन्य उपकरणों की या दीपक आदि की जरूरत नहीं होती, केवल स्फटिक माला से मन्त्र जप पर्याप्त होता है, कुल छः दिन में सवा लाख मन्त्र जप किया जाय।

मन्त्र

ॐ रतिक्रियायै कामदेवायै मम श्रंगे उपाने
प्रविश्य सुदर्शनायै फट् ।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है और इस प्रयोग को प्रत्येक मुख्य या स्त्री सम्पन्न कर सकती है।

यदि कद छोड़ा होता है तो वह वड़ कर एक निम्नतम लम्बाई को प्राप्त कर लेता है; यदि बाल छोटे हो या चमकीले न हो या फटे हुए हो, तो वह लम्बे, कासबेक और घने हो जाते हैं, इस गुटिका के द्वारा समर का कासबू मांस को तीन दिन में ही समाप्त हो जाता है, और आंखों के नीचे जो कालापन होता है, वह दूर हो जाता है, यही नहीं अपितु इस गुटिका को वह विनयेष्वा है कि वह चमकी के काले या सांयले रंग को गीरे रंग में परिवर्तित कर देती है, इसलिये वो यह संसार को बहुमूल्य और अद्वितीय औषधि है, जिसका प्रयोग मैंने अपनी पुरी पर किया है, और वह आपके सामने है, ।

कालीदास उठ कर चले गये, पर चौबीसी घंटे उनकी
प्राप्ति के तानने सुभासिनी का सौन्दर्य मंदरावा रहा।

इक्कीस बर्षोंय भरवी "हीनू" जिसके पास दुर्लभ तन्त्र है

वर्तमान काल "तन्त्र काल" कहलाता है, समय का चक्र बराबर घूमता रहता है, और उन्हीं प्रकार से पुनः परिवर्तन होता रहता है, क्योंकि पहले पूरे भारतवर्ष में तन्त्र का प्रोत्थान था और तांत्रिकों की भारतवर्ष में अत्यन्त ही सम्माननीय रूप में देखा जाता था, कुछ और खनाय, मन्त्रवेत्ता नाम की भी मन्त्र मन्त्र का भी शोध करने का भी आज भी हम सामान्य दृष्टि से देखते हैं जिन्होंने भारत की प्रचीन तन्त्र विद्या को जीवित रखा और हजार पूर्वजों की ख्याति को सुरक्षित रूप से हमें प्रदान कर के गये।

पर बाद में कुछ ही पाश्चात्य दृष्टिकोण और संस्कृति हम पर हावी हो गई और इन चीजों को इकोसता तथा पाखण्ड माना जाने लगा, और फिर कुछ ऐसे पाखण्डों और दोनो तांत्रिकों भी भारतवर्ष में चले तरफ चल गये जिन्होंने वेद, मुक्त को तन्त्र मान लिया, लम्बो लम्बी जटाएं, विचित्र वेशभूषा और ऊठ पटांग कापी से जलता का विस्फोट इस पर से हटने लगा, और तांत्रिक कल्प अपने धाम में घटिया, बराबता, और वृथ्वा बन गया।

पर फिर अब पुनः परिवर्तन हुआ है, भारत की इन भेदना में तांत्रिकों के प्रति आस्था पैदा हुई है, भारतीय जन मानस ने यह समझा है कि भारतीय तन्त्र तो अपने आप में सही है, उचित है और प्राचीन है परन्तु कुछ भ्रष्ट तांत्रिकों के हाथों में यह विद्या चली जाती है, बदनामी हो गयी है, अब उन्होंने पुनः तन्त्र की और रूपना आकर्षण दिखाया है, उन्होंने तन्त्र साधनाएं सम्पन्न की

हैं, ये भारतीय किसी मठ या मन्दिर के चक्कर में नहीं पड़े, ये किसी औषड़ या घावाओं के कल्प जाल में नहीं उलझे और न उन्होंने कोई तन्त्र की वीक्षा ही की है, उन्होंने तो इस बात को समझने की कोशिश की, क्या भारतीय तन्त्र सही और प्रामाणिक है, क्या हम पूर्वजों ने जो विद्या भारत में प्रस्तुत की थी वह प्रामाणिक है और क्या उन विद्याओं को जब साधारण रूप में समझा जा सकता है।

और इसी भावना के फलस्वरूप उन्होंने कुछ भिन्न साधनाएं प्रारम्भ की थी न तो वह समयानुसार में गये, उन्होंने मांस और मदिरा का सेवन किया, और न अपने गृहस्थ जीवन में किसी प्रकार का व्यभिचर धारण किया, उनका अपना गृहस्थ जीवन सुचारु रूप से चलता रहा और साथ ही साथ अपना व्यापार या नौकरी करते हुए इन साधनाओं की ओर प्रवृत्त हुए तथा अपने घर में नानुनी उपकरणों के माध्यम से मन्त्र जाप एवं साधन सम्पन्न की, और इसके माध्यम से उन्होंने आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त किये।

इन सब के करने से उनका तांत्रिक बनने का स्वप्न नहीं ये तो अपने समस्याओं से प्रसन्न थे और समस्याओं का निराकरण विज्ञान के पास नहीं था, मानसिक रूप से परेशान थे, अपने पुत्र के व्यवहार दुखी थे, पुत्री के विवाह में विलम्ब होने से परेशान, गति-मति के मतभेद से चिन्तित थे और इनका उत्तम तो विज्ञान के पास था और न अध्यात्म के पास, इ

उत्तर तो तन्त्र के द्वारा ही सम्पन्न हो सकता था और उन्होंने इसमें संशयित न कर जाय कहे। शुरु शिव, और उन्होंने आरम्भ के साथ देखा कि वे अपनी स्वयं की प्रकृति स्वयं ही कर सकते हैं। इसके लिए न तो आरम्भ की शुरुआत के अन्तर में पड़ने की जरूरत है, और न ही, आरम्भ पर बाधा रखने की आवश्यकता है, और इसलिए उन साधन में उनके प्रति उपस्थिति और मोक्ष प्रारम्भ हुई, सामान्य और आध्यात्मिक स्तर के व्यक्ति हो नहीं पाए। उन स्तर के प्रत्यक्ष व्यक्ति, जो आरम्भ नामों में रहते हैं, अपने ज्ञान का भारतीय और वैदिक साधन में और अधिक करने लगे, उनके मन में ही भावना दूर हो गई और वे पहले से ज्यादा खुले अपने आप को कर सकते हैं और पहले से ज्यादा सम्पन्न हो सकते हैं।

ऐसी स्थिति में कुछ ज्ञानियों साधकों ने सोचा कि वे ऐसे व्यक्तियों की खोज प्रारम्भ की जो अन्तर में पड़ने लगे थे जो आरम्भों के महत्त्व और मठाधीन के नहीं थे, परन्तु जो सही तरीके में साधक थे और उनके पास ज्ञान, उन्होंने उन साधनियों की खोज की जो शक्ति की जो उनकी दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझा दें, जो उनके जीवन की कठिनाइयों में मार्ग प्रस्तुत कर दें, जो उनकी बाधाओं और विपत्तियों का निराकरण कर सकें।

और मैंने देखा कि इन मामलों में लिविंग प्राणी, प्रकृति में ही और स्वाभिमान का विशेष गुण लिविंग ही होता है, जब वे किसी बात का निराकरण कर सकते हैं तो उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं, तन्त्र के क्षेत्र में भी लिविंग ने जब भावना शुरु किया तो पिछले कुछ ही वर्षों में कई लिविंगों के साथ उभर कर सामने आये जो अपने आप में साधना के क्षेत्र में अद्वितीय हैं।

यह सच है कि कोई भी साधना या साधना में सफलता प्राप्त करे, साधना के लिए न ही किसी भी, जाति और न धर्म का बंधन ही है, कोई भी स्त्री या पुरुष साधना सम्पन्न कर सकता है, इस में

तरतियों ने भी रुचि ली, और जब उन्होंने साधना सम्पन्न की, उनके द्वारा चमत्कार दिखाये जाते लगे तो प्रबुद्ध वर्ग, बुद्धिवादी और महत्वपूर्ण व्यक्ति भी साहस करने लगे कि वास्तव में तन्त्र पुरुषों की ही बनी नहीं है, अतिवृत्तियों भी साधना में सफलता पा सकती है, ऐसी ही साधकियों में एक नाम उद्धृत कर दिया है, जिसे लोग कहते हैं।

मैं नहीं कहता कि उसका पूरा ज्ञान क्या है, वह किस की लिखा है, वे दिखाए उसने कहा तो सीधे पर सबवारों में अप कर इसकी प्रशंसा हुई है, वैज्ञानिक लोगों ने उसका परीक्षण किया है: उसके अन्तरों की देखकर उन लोगों ने बातों को उगली दवाई है, वे यह मानने के लिए बाध्य हुए हैं कि भारतीय तन्त्र अपने आप में समृद्ध और जीवित है।

मनाली हिमाचल प्रदेश का एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है, जहाँ हजारों सैलानों घूमने जाते हैं जहाँ से एक सड़क रोहतांग दर्रे की ओर जाती है, जो व्यास गुफा के पास से होकर धामे की ओर जाती है, व्यास मन्दिर से इन्हीं सड़क पर लगभग १५ मील धामे, एक महत्वपूर्ण आश्रम है, जिसमें दो तीन बृद्ध स्वामी रहते हैं और उसके पास में ही यह हीन मान की तरुणी अपने माता पिता और भाई के साथ अत्यन्त सामान्य तरीके से रहती है।

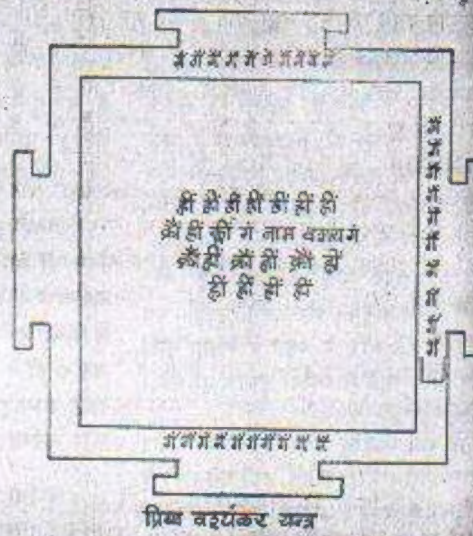
पर यह अश्वत्थ ही उच्च कोटि की तांत्रिका है, जन्म पूर्व जन्म में यह कोई महत्वपूर्ण तांत्रिका रही है, जो भी हिमाचल में तन्त्र अभी तक जीवित है, और कई स्थान तो ऐसे हैं जहाँ साधकों विज्ञान उनके चमत्कारों को देख कर आश्चर्य चकित रह जाते हैं।

विश्वली यात्रा में मैंने इस हीन को देखा, तो मुझे उसका पूर्व जन्म स्मरण हो आया और मैंने उसके वहाँ लगभग दो सप्ते बिताये, उसको भी कुछ ऐसा घामास हुआ कि पूर्व जन्म में इस व्यक्तित्व से किसी न किसी रूप में संबंध रहा है।

मेरे साथ दस बारह सन्ध्यासिद्धों और गृहस्थ शिष्यों को टोली थी, और उसने मेरे कहने पर ऐसे कई तांत्रिक कार्य पल भर में सम्पन्न कर दिखाये जो अपने आप में आश्चर्यचकित कर देने वाले हैं, ये ऐसे चमत्कार हैं जिन पर सहसा विश्वास नहीं होता, उसने कुछ ही पलों में सौ-सौ के तोड़ों की वर्षा कर दी और मेरे साथ जो गृहस्थ शिष्य थे, इशोराज, कृपा राम, भिबंदी राम, राम लाल प्रावि के पास ये नोट धाज भी रखे हुए हैं, भुत्तों के द्वारा उसने कई कठिन और प्रसंभन-कार्य पल भर में करके दिखा दिये, अब रत्न लाल ने कहा कि तुम ऐसी ही साधिका हो तो मेरे घर में एक बामा पड़ा है वह ला कर दिखाओ तो मैं तुम्हें जानूँ, और हो न नाव दो मिनट में ही वह बसता रत्न लाल के सामने रख दिया और उसकी पाँखें फटो की फटी रह गई, जहाँ नहीं था पितु अब मैंने कहा 'हीन' तुम्हें जमीन पर नहीं था पितु जमीन से छः फीट ऊपर शून्य में ही ध्यान लगाता है, और साधना करती है, तो उसने मेरे सामने ही शरीर स्थित सभी तन्त्रों को प्राप्त किया और अचानक वह जमीन से ऊपर उठ गई, हवा में ही उसने पद्मासन लगाया और ध्यानस्थ हो गई।

तीन बार सन्ध्यासी शिष्यों ने उसको नीचे झुक कर धा-वा कर देखा तो वास्तव में ही वह शून्य में स्थिर थी, एक दो गृहस्थ शिष्यों ने तो उसके इस प्रकार के फोटो भी लिये।

उसने कहा मैंने ये साधनाएँ कामाक्षा मन्दिर में और उसके पास समयान में रह कर सम्पन्न की है, मेरे जीवन का एक मात्र उद्देश्य तन्त्र की सम्पूर्णता के साथ समझना है, सीखना है, और आज के इस विज्ञान के सामने पुनर्जीव के साथ खड़े हो कर दिखाने वाला है कि तन्त्र वास्तव में ही प्रायोगिक और महत्वपूर्ण है, तन्त्र के माध्यम से धनाह्व और सम्पन्न बना जा सकता है, किसी भी प्रकार के कार्यों को सम्पन्न किया जा सकता है, और



इसके माध्यम से विज्ञान को पुनर्जीव दी जा सकती है।

फिर उसने तांत्रिक विधि से गुरु पूजन किया और अपने आप को पूर्ण समर्पण भाव से विनित हो कर कहा ये सब विद्याएँ तो पूर्व जन्म के संस्कारों के फलस्वरूप जल्दी ही प्राप्त हो गई हैं, पर अब मैं गम्भीरता से उन्म-कोटि की साधनाएँ सम्पन्न करना चाहती हूँ, सीखना चाहती हूँ, मुझे आपका सानिध्य और संरक्षण चाहिए।

आज भी कोई भी व्यक्ति उस स्थान पर जाकर हीन से मिल सकता है, और इन साधकों को तन्त्र के इन प्रदुर्लभ चमत्कारों को भारत की गौरवशाली इस प्राचीन विद्या की अपनी आँखों से देख सकता है, समझ सकता है और अपनी कमीशरी पर परख सकता है।

वास्तव में ही भारत को अपने पूर्वजों पर, तन्त्र पर, और हीन जैसी साधिकाओं पर गर्व है।



देव दुर्लभ

शोध सिद्धिदायक

भगवती साधना शिविर

१८-३-८८ से २५-३-८८ तक

दुर्लभ अवसर

ब्रह्म नवरात्रि तो वास्तव में ही देव दुर्लभ मानी गई है, और फिर इस बार तो ज्योतिष की दृष्टि से पूर्ण सिद्धिदायक योगों से सम्पन्न इस नवरात्रि का सूर्यग्रहण से भी पूर्ण संबंध बना है फलस्वरूप साधना की दृष्टि से यह एक दुर्लभ, शोध सिद्धिदायक एवं अद्वितीय पर्व बन गया है।

दस महाविद्या साधनाएं भी

इस दुर्लभ शिविर में केवल भगवती दुर्गा जगदम्बा साधना ही नहीं, अपितु दस महाविद्याओं से संबंधित दुर्लभ साधनाएं भी सम्पन्न कराई जायेंगी, जो कि आपके जीवन का अविस्मरणीय अवसर द्वा। फिर भला कौन ऐसा साधक होगा, जो इस साधना शिविर में भाग लेने से वंचित रहे।

लक्ष्मी प्रत्यक्ष सिद्धि

और फिर इसी शिविर में (१) लक्ष्मी प्रत्यक्ष सिद्धि (२) हरिद्रा गणपति सिद्धि प्रयोग (३) सूर्य सिद्धि प्रयोग और (४) नवनाथि-शणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा जैसी दुर्लभ गोपनीय और महत्वपूर्ण साधनाएं भी सम्पन्न कराई जायेंगी।

घर पर नहीं

ऐसी साधनाएं घर पर सम्पन्न होना संभव नहीं, क्योंकि ये गोपनीय साधनाएं हैं, जो मुख चरणों में बैठकर कृपितुल्य जीवन जीते हुए ही सिद्ध की जा सकती हैं, आपके लिए ही तो यह साधना शिविर लगाया गया है।

स्थान रिजर्व करा लें

स्थान-न्यूनता की वजह से भारतवर्ष के साधकों एवं पाठकों को शिविर में भाग लेने देना संभव नहीं है। फलतः "साधना शिविर अनुपति प्रपत्र" की प्रतिजिप्ति कर जल्द भर कर सी रुपये के भुगतान के बराबर के साथ हमें भेज दें, तब आपका स्थान रिजर्व माना जायेगा, शिविर की विधिवत जानकारी वहाँ आने पर जमा करा दें।

सम्पर्क

संस्कृत-संस्कृत विज्ञान डॉ० श्रीमान् नंद हाईकोर्ट कोलोनो, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

संसार का सर्वाधिक दुर्लभ एवं अप्राप्य पारद शिर्वलिंग

(बारह तोले का)

जिसके घर में स्थापित होने से ही जीवन का पूर्ण
सौभाग्य प्राप्त हो जाता है

- * संसार में सब कुछ सुलभ है, प्राप्य है, पर पारे को ठोस बनाकर शिर्वलिंग का निर्माण कठिन असंभव अप्राप्य ही है।
- * और फिर द्वादश रुद्रों के प्रतीक बारह तोले का सजीव संप्राण, व चेतन्य सिद्धि शिर्वलिंग हो तो फिर उसका कहना ही क्या ?
- * और आप इसे प्राप्त कर सकते हैं, पत्रिका के आजीवन सदस्य बराबर।

नियम:-

- * आप पहले मात्र ६००)रु० भेज दें, मन्त्रिवाहर या बैंक ट्राफ्ट से हम आपको १००)रु० की बी० पी० से यह दुर्लभ शिर्वलिंग उपहार स्वरूप भेज देंगे।
- * इस प्रकार आपके १५००)रु० पत्रिका कार्यालय में जमा रहेंगे, व आपको जीवन भर पत्रिका मुफ्त मिलती रहेगी।
- * और ये १५००)रु० भी आपकी धरोहर धनराशि है, नियमानुसार सूचना देकर इस धरोहर धनराशि को आप वापिस प्राप्त कर सकते हैं।

यदि शिर्वलिंग पसन्द न आवे, तो पूरी धनराशि वापिस प्राप्त कर सकते हैं

एक दुर्लभ अनमर

मात्र २१-४-८८ तक ही। इस तारीख तक उपहार आप प्राप्त कर सकते हैं।

सम्पर्क

मन्त्र-तन्त्र-मन्त्र विद्यालय, डॉ० श्रीमाली मार्ग हाईकोट गैलेरी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

